गुरुवर की धरोहर 4

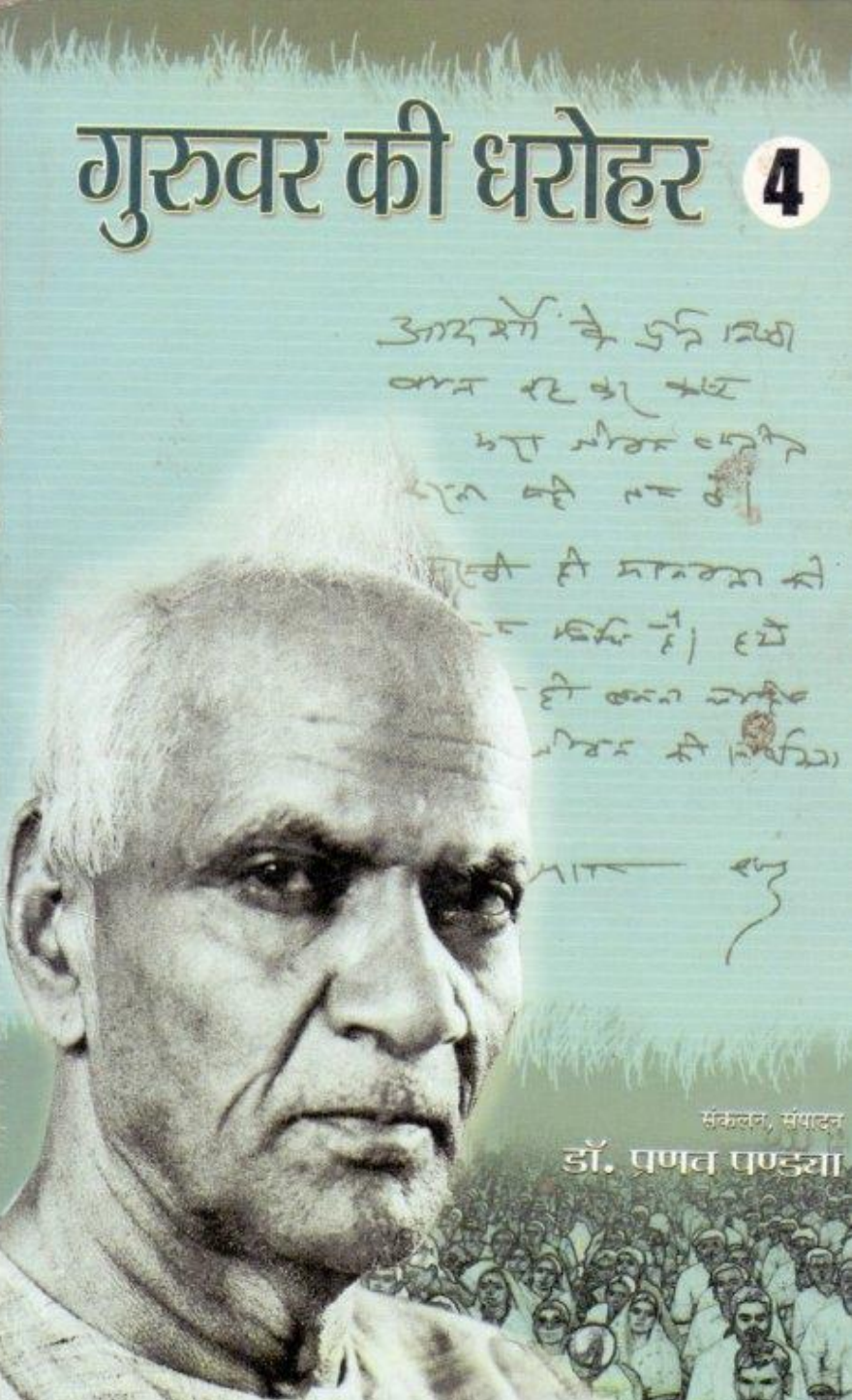

संकलन, संपादन

डॉ. प्रणव पण्ड्या

गुरुवर की धरोहर

भाग-४

संपादक
डॉ० प्रणव पण्ड्या
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)
गायत्रीनगर-श्रीरामपुरम्, शान्तिकुञ्ज
हरिद्वार (उत्तराखण्ड) 249411

पुनरावृत्ति सन् - 2013 मूल्य- 32/-

गुरुवर की धरोहर (भाग-४)

संपादक
डॉ० प्रणव पण्ड्या
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक-
श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, (TMD)
गायत्री नगर-श्रीराम पुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) २४९४११

पुनरावृत्ति
सन्-२०१३

मूल्य- ३२.०० रुपया

सम्पर्क सूत्र
गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
फोन (०१३३४) २६०६०२, फैक्स ०१३३४ २६०८६६
Internet- www.awgp.org Email- shantikunj@awgp.org

विषय सूची

क्र०	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	नया व्यक्ति बनेगा, नया युग आएगा	५
२.	उपासना, साधना व आराधना का तत्त्वदर्शन	१३
३.	महाकाल के सहभागी बनें	२६
४.	युगसंधि महापुरश्चरण और संकट निवारण	३५
५.	जीवन को धन्य बनाने का महानतम अवसर	४६
६.	आत्मिक प्रगति का ककहरा	५६
७.	भक्ति का वास्तविक तात्पर्य समझें	७२
८.	कैसे करें कायाकल्प?	७८
९.	संकल्पशक्ति की महिमा एवं गरिमा	८९
१०.	विशिष्ठ वेला में विशिष्ट साधना	९९
११.	गुरु दक्षिणा चुकाएँ-समयदान करें	११२
१२.	कालनेमि की माया से बचें	११९

प्राक्कथन

महापुरुषों के अमृत वचन हमारे लिए उनके साथ किये गए सत्संग की पूर्ति कर देते हैं। उनका उपदेश हमारी चित्तशुद्धि करता है एवं हमें "क्षुरस्य धारा" की तरह अध्यात्म के दुस्तर मार्ग पर चलने का साहस देता है। परम पूज्य गुरुदेव **पं० श्रीराम शर्मा आचार्य** जी के जीवन की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनने जीवन भर ऐसा लिखा, जिसने लाखों-करोड़ों का मार्गदर्शन किया तथा अपने प्रवचनों में इतना कुछ कहा कि अगणित व्यक्ति जो साहित्य के माध्यम से नहीं जुड़े थे, उनकी अमृतवाणी सुनकर जुड़ गए। इतनी सरल भाषा, इतने सुन्दर जीवन से जुड़े उदाहरण, कथानक एवं कबीर, तुलसी, वाल्मीकि, व्यास की विद्वत्ता का, आद्य शंकर एवं स्वामी विवेकानंद के कुशाग्र भावसिक्त विचारों का समन्वय और कहीं देखने को नहीं मिलता।

प्रस्तुत पुस्तक गायत्री व यज्ञ को जन-जन तक पहुँचाने वाले उसी युगपुरुष की अमृतवाणी का संकलन-सम्पादन है। एक प्रयास अप्रैल १९९५ में हुआ था, जब गुरुवर की धरोहर के भाग एक व दो प्रकाशित हुए थे। इनके माध्यम से आँवलखेड़ा पूर्णाहुति की पूर्ववेला में लाखों साधकों-परिजनों ने उनके विचारों को उनकी लिपिबद्ध प्रकाशित वाणी के रूप में पढ़ा। इसी के तुरंत बाद वाङ्मय के ७० खण्डों का प्रकाशन हुआ। इनमें एक खण्ड अड़सठवें (६८ वें) खण्ड के रूप में पूज्यवर की अमृतवाणी प्रकाशित हुई। इसमें भी प्रवचनों का संकलन है। इसी 'गुरुवर की धरोहर' का भाग-३ आज से दो वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुका है। अभी प्रवचनों की अनन्त शृंखला हमारे पास लिपिबद्ध है। उन्हीं में से कुछ प्रवचन भाग-'४' के रूप में प्रकाशित किये जा रहे हैं। यह शृंखला अनवरत जारी रहेगी। सभी प्रवचन भिन्न-भिन्न विषयों पर हैं। एक महापुरुष जब लिखता है, तो उसकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, उर्दू मिश्रित व किम्बदन्तियों-मुहावरों के साथ गुँथी होती है, इसका प्रमाण पूज्यवर की लेखनी है। पर जब वे बोलते हैं, तो नरमानव के स्तर पर उतर कर उसे जनसामान्य की भाषा में संबोधित करते हैं। ऐसा ही कुछ विलक्षण संकलन यह बन पड़ा है।

हमें आशा है कि शताब्दी वर्ष (२०११-२०१२) की पूर्व वेला में होने जा रहे कुछ चुने हुए प्रकाशनों में गुरुपूर्णिमा २००८ के पावन पर्व में प्रकाशित हो रहा यह चौथा खण्ड और अन्य खण्डों की तरह जन-जन में स्थान बनाएगा, सभी का मार्गदर्शन करेगा। जो परिष्कृत अध्यात्म क्या है, जीवन कैसे जिया जाना चाहिए, यह जानना चाहते हैं तो पढ़ें गुरुवर की धरोहर। गुरुसत्ता की वाणी उन्हीं को सादर समर्पित है।

—डॉ० प्रणव पण्ड्या

नया व्यक्ति बनेगा, नया युग आएगा

(पुर्नगठन वर्ष में ८ जुलाई १९७९ को शांतिकुञ्ज परिसर में दिया गया प्रवचन)

राजतंत्र एवं धर्मतंत्र

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! मध्यकालीन अंधकार युग समाप्त हुआ। हजार वर्ष तक हमने बार-बार ठोकरें खाईं। हजार वर्ष की गुलामी की ओर अगर हम दृष्टिपात करते हैं, तो आँखों में आँसू भर आते हैं। राजनैतिक, धार्मिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक-प्रत्येक क्षेत्र में हम इस अवधि में भटकते रहे। इन हजार वर्षों में हम इतना कुछ गँवा बैठे कि इसे पूरा करने में हमें काफी समय लगेगा। यह अवसर पिछले समय की बातें करने का नहीं है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम भविष्य का निर्धारण करें और अपनी शक्ति उसी दिशा में नियोजित करें।

भगवान् की इच्छा से अंधकार पूरा समाप्त हुआ। सूर्योदय का समय आया। अब से तीस साल पहले भारत की राजनीतिक स्वाधीनता मिली। अपने भाग्य का निर्माण अपने हाथों करने का समय आया। राजनीति को दो काम सौंपे गये। अर्थव्यवस्था को सुधारना एवं जन-साधारण को उद्दंडता एवं गलत कामों से रोकना, उसे दंड देना। आर्थिक एवं सामाजिक सुव्यवस्था-यही दो काम राजनीति के जिम्मे सौंपे गए। यह मनुष्य के भौतिक जीवन का पक्ष है, जिसकी जिम्मेदारी राजनीति को सौंपी गई।

दूसरा पक्ष मनुष्य का आंतरिक एवं आध्यात्मिक है। इसे प्रभावित करने की सामर्थ्य राजतंत्र में नहीं है। इसे पूर्ण करने की सामर्थ्य केवल धर्मतंत्र में है। आस्थाओं, विचारणाओं एवं गतिविधियों को नियंत्रित करें एवं उसे ऊँचा उठाकर उत्कृष्टता के साथ जोड़ें, यह उत्तरदायित्व धर्मतंत्र को सौंपा गया, ताकि देश को एक हजार वर्ष की गुलामी के कारण जो बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक अस्तव्यस्तता हुई है, उसे पूरा किया जाए तथा हम प्रगति की ओर बढ़ सकें।

परिष्कृत धर्मतंत्र का दायित्व

धर्मतंत्र को अपनी जिम्मेदारी निभानी थी, ताकि मनुष्य की खोई हुई गरिमा की पुनः स्थापना की जा सके। भारत के लोगों के आंतरिक खोखलेपन अर्थात् अपनी पात्रता एवं व्यक्तित्व की कमी के कारण मध्य एशिया से थोड़े-से डाकू आए और उन्होंने हमला करके भारत वर्ष को डेढ़ हजार वर्ष तक

गुलाम बनाए रखा। अँग्रेज बाद में आए। उन घावों को पूरा करना हमारा काम है। हमारे से मतलब परिष्कृत धर्मतंत्र से है। यह धर्मतंत्र का काम है कि वह देखे कि किन कमजोरियों के कारण व्यक्ति भीतर से खोखला एवं बाहर से कमजोर होता है। उसकी छानबीन करे। यह उत्तरदायित्व धर्मतंत्र को निभाना था। धर्मतंत्र के विनम्र प्रतिनिधि के रूप में यह दत्तरदायित्व युगनिर्माण योजना ने अपने कंधों पर उठाया और यह वचन दिया कि हम जनता में धर्मबुद्धि, विवेकबुद्धि उत्पन्न करेंगे तथा उच्चस्तरीय मान्यताओं को, आदर्शों को जनमानस में प्रतिस्थापित करेंगे, जिसके द्वारा व्यक्ति, परिवार और समाज मजबूत बनते हैं तथा उनका चिरस्थायी वर्चस बना रहता है।

मित्रो! तीस वर्ष पूरे होने को आए, अपनी युग निर्माण योजना का कार्य करते हुए। इन तीस वर्षों में हमने क्या किया, इसके बारे में चर्चा करने का अभी समय नहीं है। इसके बारे में जिक्र करने का अभी समय नहीं है। यह तो आने वाला समय बतलाएगा कि इस छोटे-से मिशन ने कितना काम कर लिया तथा कितनी लंबी मंजिल पूरी कर ली है। अब हमें जो मंजिल पार करनी है, उसके लिए हमें और भी साहस एवं सामर्थ्य इकट्ठी करनी है। इस तीस साल में मिशन की किशोरावस्था समाप्त हुई। अब उसकी प्रौढ़ता का समय आया है। इस समय हम एवं हमारे परिजन अब भारी उत्तरदायित्व लेने की स्थिति में हैं। बच्चे का जब हम विद्यारंभ कराते हैं, तो सामान्य पूजन भर हो जाता है। उसके बैठने का स्थान भी सामान्य ही होता है, परंतु जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, उसका सारा क्रम, ढाँचा बदलता जाता है।

क्रमशः बढ़ता मिशन

अपने मिशन का भी क्रम इसी प्रकार बढ़ता जा रहा है। प्रारंभ में इसका नाम 'गायत्री परिवार' रखा गया था। वह प्रारंभ था। उस समय लोगों को यह बतलाया गया था कि गायत्री मंत्र भारतीय धर्म का मूल है। उसे लोगों को अपनाना चाहिए, जपना चाहिए, ताकि लोगों का भविष्य उज्ज्वल हो सके। इस प्रकार की बातें हमने तथा हमारे मिशन ने प्रारंभ में बतलाई थीं। इस बीज को लोगों को बतलाया गया था और यह कहा गया था कि जो व्यक्ति एक माला का नित्य जप करेंगे, उन्हें हम गायत्री परिवार का सदस्य मानेंगे। बचपन में यही था।

समय ने आगे के लिए कदम बढ़ाया। अपने परिवार एवं संगठन को एक और आयाम दिया गया। अब उसके साथ युग निर्माण योजना को भी जोड़ दिया गया है। उसका अर्थ यह था जो कि हमने लोगों को बतलाया कि हर व्यक्ति को एक माला गायत्री जप के साथ में नैतिक, बौद्धिक एवं सामाजिक क्रांति हेतु भी बढ़चढ़कर कुछ काम करने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने उस समय व्यक्ति-निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज-निर्माण के कार्यक्रम भी चलाए।

यह युग निर्माण योजना के साथ जुड़कर मिशन के हुए विकास का क्रम था। हमने प्राइमरी कक्षा पूरी कर ली। हाईस्कूल की कक्षा भी हमारे मिशन ने पूरी कर ली है। अब हमने कॉलेज के स्तर की पढ़ाई प्रारंभ कर दी है, अर्थात् अब हमारी प्रौढ़ावस्था आ गई है। अत: अब हमें कॉलेज स्तर का होना चाहिए। उसी स्तर के क्रियाकलाप एवं योजना होनी चाहिए। वही अब बन रही है, बनाई जा रही है, परंतु इस बारे में हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम जिस युग परिवर्तन की बात कर रहे हैं, जिस समाज को बदलने की प्रतिज्ञा लेकर चले हैं, हम जिस नए समाज के निर्माण की बात करते हैं, उस संदर्भ में हमें विचार करना होगा कि युग निर्माण क्या है?

समाज का अभिनव निर्माण

मित्रो! युग निर्माण का अर्थ होता है-नए समाज का निर्माण करना। समाज क्या है? समाज व्यक्तियों का समूह मात्र है। लोगों का समुदाय इकट्ठा होकर ही समाज बनता है। उसके प्रत्येक घटक को समुन्नत बनाना, समृद्धिशाली बनाना हमारा काम है। यही है समाज निर्माण का उद्देश्य। फूल इकट्ठे होकर ही माला बनते हैं। सींके इकट्ठा होकर बुहारी बनती है। धागे इकट्ठा होकर रस्सा बनते हैं। इसी तरह समाज व्यक्तियों से बनता है। समाज के लोगों को देखकर ही युग की स्थिति देखी जा सकती है। अत: समाज निर्माण के कार्य को आरंभ करने से पहले हमें आत्मनिर्माण का कार्य करना पड़ेगा। यह आज नहीं, वरन् आज से तीस साल पहले हमने बतला दिया था कि हमारे क्रियाकलाप क्या हैं तथा हमारी भावी योजना क्या है?

समाज निर्माण कैसे होगा? इस संदर्भ में उन दिनों, एक युगनिर्माण सत्संकल्प के रूप में घोषणापत्र बनाया गया था, जिसमें यह बात स्पष्ट रूप से बतला दी गई थी कि व्यक्ति निर्माण के संबंध में चार चीजें परम आवश्यक हैं। **साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा,** यह चार बातें आत्म निर्माण के लिए

परमावश्यक हैं। यह चार बातें ऐसी हैं, जो एक-दूसरे के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं। इन चारों को पूरा कर लेने पर आत्मनिर्माण का उद्देश्य पूरा होता है। इसमें एक भी ऐसा नहीं है, जिसे छोड़कर केवल अन्यों में पूरा कर लेने पर आत्मनिर्माण का उद्देश्य पूरा हो सके। यह चारों चीजें एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं। इन चारों को मिलाकर ही बात बनती है।

चार अनिवार्य चरण

यह बात वैसी ही है जैसे जीवन निर्माण के लिए चार चीजें आवश्यक हैं। वे हैं-आहार, श्रम, संयम और सफाई। इन चारों में से अगर हम एक को भी कम करेंगे, तो हमारा जीवन निर्माण संभव न हो सकेगा। हमें फसल लेने के लिए भी चार चीजों की आवश्यकता पड़ती है। वे हैं- जमीन, बीज, खाद-पानी एवं सुरक्षा। इनके अभाव में किसान फसल प्राप्त नहीं कर सकता है। व्यापार करने के लिए हमें चारचीजों की आवश्यकता पड़ती है-पूँजी, अनुभव, वस्तुओं की माँग एवं ग्राहक। इसमें से अगर एक भी चीज की कमी होगी, तो कोई भी व्यापर नहीं कर सकता है। मकान बनाना हो तो ईंट, चूना, लोहा, लकड़ी की आवश्यकता पड़ती है। इनमें से एक भी चीज की कमी हो जाएगी तो इमारत नहीं बन सकती है। उसी प्रकार व्यक्ति निर्माण के लिए चार चरणों की आवश्यकता है। ये चारों चरण जब भी एक साथ मिल सकेंगे, तो व्यक्ति के उत्कर्ष का आधार बनकर खड़ा हो जाएगा। मात्र एक से ही यह कार्य नहीं हो सकता है।

मित्रो! हमें युग निर्माण के लिए-नवनिर्माण के लिए दो कार्य करने हैं- **पहलः-जो आदमी इस उत्तरदायित्व को सँभाल रहे हैं, काम कर रहे हैं, उनका स्तर बढ़ना चाहिए। दूसरा-उसका विस्तार भी होना चाहिए।** हम यह चाहते हैं कि व्यक्ति स्वयं विकसित होते हुए चले जाएँ तथा दूसरों को भी विकास कार्य में सहयोग दें तथा उन्हें आगे बढ़ाने का प्रयास करें, ताकि अपना विस्तार होता हुआ चला जाए। इस विस्तार के लिए शिक्षण के साथ-साथ टोलियों का कार्य बड़ा ही उत्तम रहता है। उसके माध्यम से विस्तार प्रक्रिया में तेजी आती है। टोलियों में जो काम करते हैं, वे सीखते भी हैं और सिखाते भी हैं। स्काउटिंग में जो लोग होते हैं वे सीखते भी हैं, सिखाते भी हैं। टीचर-ट्रेनिंग जो होती है, उसमे वे सीखते भी जाते हैं तथा सिखाते भी जाते हैं। बुद्ध विहार में जो लोग साधना करते थे, वे साधना भी करते रहते थे तथा बाहर जाकर लोगों को सिखाते भी रहते थे। तीर्थयात्रा भी ऐसी ही प्रक्रिया थी, इसमें वे अपना

परिष्कार भी करते थे तथा लोकशिक्षण का काम भी करते थे। स्वयं तपते थे तथा लोगों को भी प्रेरणा देकर तप का महत्त्व समझाते थे।

विचार क्रांति की अनिवार्यता

साथियो! हम विचारक्रांति आंदोलन को तीव्र करना चाहते हैं ताकि लोगों के विचार करने की प्रवृत्ति बदले।इस कार्य हेतु हमें अध्यात्म के सिद्धांतों को बतलाने की आवश्यकता है, ताकि जनमानस उसे अपने जीवन में उतार सके। अत: हमें नैतिक एवं सामाजिक क्रांति के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। जनसाधारण को यह समझाया जाना चाहिए कि मन:स्थिति को सुधारा जाना परम आवश्यक है। अगर हम केवल भौतिकस्थिति को सुधारने का प्रयास करेंगे, तो उससे काम नहीं बनने वाला। अगर मनुष्य को भौतिक लाभ मिल भी जाए, संपत्ति आ भी जाए तो उसे उतना लाभ नहीं मिल सकेगा, जब तक कि उसका आध्यात्मिक विकास न हो जाए। अत: हमारे लिए यह आवश्यक हो गया है कि हमारे चिंतन और चरित्र में जहाँ कहीं भी विकृतियाँ आ गईं हैं, उन्हें खोज-खोजकर निकाला जाए एवं उन्हें ठीक किया जाए। इसके लिए हमें प्रयास करना चाहिए।

विवेक की स्थापना

मूढ़मान्यताएँ, अवांछनीयताएँ, अंधविश्वास आदि न जाने कितनी चीजें हमारे बौद्धिक क्षेत्र में हावी हो गई हैं। हमें उसे निकालने का प्रयास करना चाहिए। उसके स्थान पर हमें विवेकशीलता तथा दूरदर्शिता की स्थापना करने का प्रयास करना चाहिए जो उचित है, उसे ही ग्रहण करें। जो उचित नहीं है, उसे झाड़कर बुहारी से हमें फेंक देना चाहिए। जनमानस को उसी प्रकार की हमें शिक्षा देनी है, ताकि अनावश्यक चीजें, जो हमारे बौद्धिक क्षेत्र में घुस पड़ी हैं, उन्हें हम हटा सकें।

दूसरी बात है-नैतिक क्रान्ति। धर्मतंत्र का दूसरा काम है-नैतिक स्तर को बनाए रखना। इसके लिए जनमानस को चरित्रनिष्ठा की शिक्षा देनी चाहिए। इस काम को हमें अपने से प्रारंभ करना चाहिए। व्यक्तित्व की गरिमा का शिक्षण किया जाए तथा मनुष्य की आस्थाओं को उच्चस्तरीय बनाया जाए। नैतिकता मनुष्य की आकांक्षाओं पर टिकी हुई है। आज हर आदमी की इच्छाएँ बड़प्पन को, विलासिता को, अहंता को पूरा करने में लगी हुई हैं। अत: नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए हर आदमी को सिद्धांतों का जीवन में महत्त्व

एवं सिद्धांतों के मूल्य को समझाया जाना चाहिए। आदमी को यह समझाया जाए कि बड़प्पन की अपेक्षा महानता का मूल्य ज्यादा है। महानता मनुष्य के व्यक्तित्व के साथ जुड़ी हुई है। यह भौतिक संपदाओं के साथ कदापि नहीं जुड़ी है। हमें हर आदमी को यह समझाना होगा कि आप अपने जीवन की नीति 'सादा जीवन उच्च विचार' की बनाएँ। मनुष्य अगर अपने अंदर सादा जीवन अपना ले, तो उसे छल-कपट करने की,बेईमानी करने की आवश्यकता नही रह जाएगी।

नैतिक विकास

वास्तव में बड़प्पन एवं ठाट-बाट के कारण मनुष्य की कामनाएँ बढ़ती जाती हैं और वह अपना नैतिक स्तर खो बैठता है। अगर हर मनुष्य को 'सादा जीवन-उच्च विचार' की बात समझायी जा सके, तो हमारा विश्वास है कि हम वैसा बन सकते हैं तथा हमारा स्तर वैसा हो सकता है, जैसा कि हम प्राचीनकाल में थे। संयम, नम्रता, सज्जनता, ईमानदारी, जिम्मेदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे सद्गुण हमारे स्वभाव में आ जाएँ, तो हमारे नैतिक स्तर में विस्तार हो सकता है। इस बात की जानकारी हमें जनमानस को देनी ही चाहिए, साथ ही इस मिशन के सभी कार्यकर्त्ता आंशिक, पूर्ण समयदानी-जीवनदानी को भी इसे अपने जीवन में ग्रहण करना चाहिए। आदर्शों एवं सिद्धांतों को वे जीवन में जिएँगे, तो हमें पक्का विश्वास है कि हमारा नैतिक स्तर बढ़ेगा और हमारी खोई हुई गरिमा वापस मिल सकेगी।

हमारे बौद्धिक स्तर का इतना विकास होना चाहिए कि हमारे अंदर अवांछनीयता एवं अनुचित मान्यताओं के लिए कोई स्थान न हो। इस प्रकार की बातें अवश्य होनी चाहिए, ताकि किसी को भी हमारे ऊपर अँगुली उठाने का मौका न मिले और यह कहने का मौका न मिले कि हम चरित्र की दृष्टि से घटिया स्तर के बने हुए हैं। अगर हमारा स्तर बढ़िया होगा, तो उसका प्रभाव जनमानस पर पड़ेगा तथा लोग हमारी बातों को मानने के लिए बाध्य होंगे।

श्रेष्ठ समाज बने

तीसरा काम जो धर्मतंत्र का है, उसे सामाजिक क्रांति कहा जाता है। इसके द्वारा मनुष्य की अंतःचेतना का विकास होता है। सामाजिक क्रांति के लिए समाज के बीच में जो सामाजिक बुराइयाँ हमें दिखलाई पड़ती हैं, उन्हें हटाने के लिए विरोध एवं सामूहिक जनांदोलन करने की आवश्यकता तो है ही, श्रेष्ठ समाज बनाने के लिए जिन रचनात्मक बातों को जीवन में धारण करने की खास जरूरत है, वह वे उच्चस्तरीय सिद्धांत हैं, जो व्यक्ति को समाजपरायण

बनाते हैं। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की मान्यता जन-जन के अंत:करण में जमाई जानी चाहिए। हमारे अंदर यह मान्यता होनी चाहिए कि हम दूसरों के साथ वही व्यवहार करेंगे जिनकी हमें दूसरों से अपेक्षा रहती है। सामाजिक क्रांति के लिए यह परम आवश्यक है। हर आदमी के मन में यह गहराई से प्रवेश कर जाना चाहिए। हमें हर आदमी के भीतर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जाग्रत करनी होगी। उनकी मान्यता यह होनी चाहिए कि हमारे कुटुंब में मात्र दो-पाँच आदमी ही नहीं हैं, वरन् अनेक लोग हैं। सारी वसुंधरा के लोग हमारे हैं। जिस प्रकार हम अपने छोटे से परिवार का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार हमें पूरे समाज के लोगों का ध्यान रखना चाहिए। हमें इस तरह का ध्यान रखना तथा प्रयत्न करना आवश्यक है, ताकि लोग सुखी संपन्न रह सकें।

आध्यात्मिक समाजवाद

इस सामाजिक क्रांति के लिए आध्यात्मिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करना आवश्यक है, जो हमारे ऋषियों ने बनाया था। इसे हमें व्यक्तिवाद परक न होकर समाज परक बनाने की चेष्टा करनी चाहिए। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की मान्यता आ जाना आवश्यक है, तभी हम मिल-बाँटकर खा सकते हैं और सुखी एवं संपन्न रह सकते हैं। हम समाज में सुख बाँटने का प्रयास करें, हम उपार्जन तो करें, यह अच्छी बात है, परंतु सही उपयोग करना भी सीखें, तभी समाज में सुख-शांति आ सकती है।

समता हमारे जीवन का अंग होनी चाहिए। नर-नारी में भिन्नता भी नहीं होनी चाहिए। श्रेष्ठ समाज के लिए समता का होना परम आवश्यक है। जाति, लिंग की समानता के साथ ही आर्थिक समता भी होनी चाहिए। हममें से प्रत्येक नागरिक को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। हममें से प्रत्येक नागरिक को सहकारिता के सिद्धांत को जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। सामाजिक जीवन में हर काम की व्यवस्था बनानी चाहिए। समाज में जहाँ कहीं भी अनीति, अन्याय, अत्याचार दिखाई पड़े, उससे लड़ने के लिए हमें एवं आपको जटायु जैसा साहस दिखाना चाहिए।

संघर्ष की जरूरत

आप जानते हैं कि हमारी भारत भूमि में भगवान् के जितने भी अवतार हुए हैं, उन्होंने धर्म की स्थापना एवं अधर्म के विनाश के लिए प्रयास किया है। हमारे भीतर जब कभी भी भगवान् की प्रेरणा आएगी, तो हमें दोनों ही क्रियाकलाप समान रूप से अपनाने पड़ेंगे। अपने आचरण को सुधारना तथा दूसरों के

आचरण को ठीक करना परम आवश्यक है। आसपास के वातावरण में जहाँ कहीं भी आपको लगता हो कि अनैतिकता, अन्याय का बोलबाला है, तो आपको उसका डटकर विरोध करना चाहिए। इतना ही नहीं, संघर्ष के लिए भी तैयार रहना चाहिए। जहाँ कहीं भी अनाचार दिखलाई पड़ता हो, तो उससे लोहा लेने के लिए अपनी परिस्थिति के अनुसार असहयोग, संघर्ष जो भी संभव हो, अवश्य करना चाहिए। इसके लिए आप अपने अंदर साहस इकट्ठा करें।

मित्रो! समाज की सुव्यवस्था इसी आधार पर संभव है। डरपोक आदमी, कायर आदमी, पाप से भयभीत होने वाले आदमी, गुंडागर्दी के भय से मुँह छिपाने वाले आदमी कभी भी इन बुराइयों को दूर नहीं कर पाएँगे और इस तरह समाज में जहाँ सुव्यवस्था की आवश्यकता है, जहाँ अनीति के निवारण की इस प्रकार की आवश्यकता है, वह पूरी न हो पाएगी।

साहस एवं हिम्मत

सामाजिक क्रांति के लिए साहस एवं हिम्मत को जगाने की आवश्यकता है। भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए हमें इन प्रयासों को करना ही होगा। आज संपूर्ण मानव जाति जहाँ सामूहिक आत्महत्या के लिए अग्रसर हो रही है, वहीं हमें उनके उत्थान के लिए प्रयास करने होंगे। इस कार्य के लिए हमें धर्मतंत्र को पुनः जाग्रत करना होगा। बड़ा काम हमेशा बड़े साधनों से होता है। यह बड़े आदमी ही इकट्ठा कर सकते हैं। यही है—हमारा लक्ष्य। हम चाहते हैं कि हर आदमी में यह जागरुकता पैदा हो। हमारा निवेदन है कि हर व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधा को त्यागकर कुछ आगे बढ़-चढ़कर सामाजिक जीवन के लिए कदम बढ़ावें।

नया इंसान, नया समाज

मित्रो, मिशन के पुनर्गठन में हमारी यही मतलब हैं कि हम नया व्यक्ति बनाएँ, नया समाज बनाएँ, नया युग लाएँ। इसके लिए हमारा एवं आपका कर्त्तव्य है कि हम व्यक्ति-निर्माण के कार्य में जुट जाएँ, ताकि श्रेष्ठ व्यक्तित्व आगे आकर मोर्चे का काम सँभाल सकें। इसके बिना समाज के नवनिर्माण का कार्य होना संभव नहीं है। हमें इसके लिए भरपूर प्रयास करना है, तभी हमारे मिशन का कार्य आगे बढ़ सकता है।

ॐ शान्ति

उपासना, साधना व आराधना का तत्त्वदर्शन

(मार्च १९८० में शांतिकुञ्ज परिसर में दिया उद्बोधन)

त्रिवेणी संगम

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

देवियो, भाइयो! गायत्री मंत्र तीन टुकड़ों में बँटा हुआ है। आध्यात्मिक साधना का सारा-का-सारा माहौल तीन टुकड़ों में बँटा हुआ है। ये हैं- उपासना, साधना और आराधना। उपासना के नाम पर आपने अगरबत्ती जलाकर और नमस्कार करके उसे समाप्त कर दिया होगा, परन्तु हमने ऐसा नहीं किया। हमने अगरबत्ती जलाकर प्रारंभ तो अवश्य किया है, पर समाप्त नहीं किया। हमने अपने जीवन में अध्यात्म के जो भी सिद्धांत हैं, उन्हें अवश्य धारण करने का प्रयास किया है। त्रिवेणी में स्नान करने की बात आपने सुनी होगी कि उसके बाद कौआ कोयल बन जाता है। हमने भी उस त्रिवेणी संगम में स्नान किया है, जिसे उपासना, साधना और आराधना कहते हैं। वास्तव में यही अध्यात्म की असली शिक्षा है।

उपासना माने भगवान् के नजदीक बैठना। नजदीक बैठने का भी एक असर होता है। चन्दन के समीप जो पेड़-पौधे होते हैं, वह भी सुगंधित हो जाते हैं। हमारी भी स्थिति वैसी ही हुई। चन्दन का एक बड़ा-सा पेड़, जो हिमालय में उगा हुआ है, उससे हमने सम्बन्ध जोड़ लिया और खुशबूदार हो गये। आपने लकड़ी को देखा होगा, जब वह आग के संपर्क में आ जाती है, तो वह भी आग जैसी लाल हो जाती है। उसे आप नहीं छू सकते, कारण वह भी आग जैसी ही बन जाती है। यह क्या बात हुई? उपासना हुई, नजदीक बैठना हुआ। नजदीक बैठना, यानी चिपक जाना अर्थात् समर्पण कर देना। चिपकने की यह विद्या हमारे गुरु ने हमें सिखा दी और हम चिपकते हुए चले गये। गाँव की गँवार महिला की शादी किसी सेठ के साथ होने पर वह सेठानी, पंडित के साथ होने पर पंडितानी बन जाती है। यह सब समर्पण का चमत्कार है।

उपासना का मर्म

मित्रो, उपासना का मतलब समर्पण है। आपको भी अगर शक्तिशाली या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बनना है, बड़ा काम करना है, तो आपको भी बड़े आदमी

के साथ, महान गुरु के साथ चिपकना होगा। आप अगर शेर के बच्चे हैं, तो आपको भी शेर होना चाहिए। आप अगर घोड़े के बच्चे हैं, तो आपको घोड़ा होना चाहिए। आप अगर संत के बच्चे हैं, तो आपको संत होना चाहिए। हमने इस बात का बराबर ख्याल रखा है कि हम भगवान् के बच्चे हैं, तो हमें भगवान् की तरह बनना चाहिए। बूँद जब अपनी हस्ती समुद्र में गिराती है, तो वह समुद्र बन जाती है। यह समर्पण है। अपनी हस्ती को समाप्त करना ही समर्पण है। अगर बूँद अपनी हस्ती न समाप्त करे, तो वह बूंद ही बनी रहेगी। वह समुद्र नहीं हो सकती है। अध्यात्म में यही भगवान् को समर्पण करने की प्रक्रिया उपासना कहलाती है। भगवान् माने उच्च आदर्शों, उच्च सिद्धान्तों का समुच्चय। उच्च आदर्शों, उच्च सिद्धान्तों को अपने साथ मिला लेना ही उपासना कहलाती है। हमने अपने जीवन में इसी प्रकार की उपासना की है, आपको भी इसी प्रकार की उपासना करनी चाहिए।

समर्पण की महिमा

आप लोगों को मालूम है कि ग्वाल-बाल इतने शक्तिशाली थे कि उन्होंने अपनी लाठी के सहारे गोवर्धन को उठा लिया था। इसी तरह रीछ-बन्दर इतने शक्तिशाली थे कि वे बड़े-बड़े पत्थर उठाकर लाये और समुद्र में सेतु बनाकर उसे लाँघ गये थे। क्या यह उनकी शक्ति थी? नहीं बेटे, यह भगवान् श्रीकृष्ण एवं राम के प्रति उनके समर्पण की शक्ति थी, जिसके बल पर वे इतने शक्तिशाली हो गये थे। भगवान् के साथ, गुरु के साथ मिल जाने से, जुड़ जाने से आदमी न जाने क्या से क्या हो जाता है। हम अपने गुरु से- भगवान् से जुड़ गये, तो आप देख रहे हैं कि हमारे अन्दर क्या-क्या चीजें हैं। आप कृपा करके मछली पकड़ने वालों, चिड़िया पकड़ने वालों के तरीके से मत बनना और न इस तरह की उपासना करना, जैसे आटे की गोली और चावल के दाने फेंककर उन्हें फँसा लेना पकड़ लेना तथा कबाब बना लेना। आप ऐसे उपासक मत बनना, जो भगवान् को फँसाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन फेंकता है। बिजली का तार लगा हो, परन्तु उसका सम्बन्ध जनरेटर से न हो तो करेण्ट कहाँ से आयेगा? उसी तरह हमारे अंदर अहंकार, लोभ, मोह भरा हो, तो वे चीजें हम नहीं पा सकते हैं। जो भगवान् के पास हैं। अपने पिता की सम्पत्ति के अधिकारी आप तभी हो सकते हैं, जब आप उनका ध्यान रखते हों, उनके आदर्शों पर चलते हों। आप केवल यह कहें कि हम तो उन्हें पिताजी-पिताजी कहते थे

तथा अपना सारा वेतन अपनी पॉकेट में रखते थे और उनकी हारी-बीमारी से हमारा कोई लेना-देना नहीं था, तो फिर आपको उनकी सम्पत्ति का कोई अधिकार नहीं मिलने वाला है।

साथियो, हमने भगवान् को देखा तो नहीं है, परन्तु अपने गुरु को हमने भगवान् के रूप में पा लिया है। उनको हमने समर्पण कर दिया है। उनके हर आदेश का पालन किया है। इसलिए आज उनकी सारी सम्पत्ति के हम हकदार हैं। आपको मालूम नहीं है कि विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस को देखा था, स्वामी दयानन्द ने विरजानन्द जी को देखा था। चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त का नाम सुना है न आपने। उनके गुरु ने जो उनको आदेश दिये, उनका उन्होंने पालन किया। गुरुओं ने शिष्यों को, भगवान ने भक्तों को जो आदेश दिये, वे उनका पालन करते रहे। आपने सुना नहीं है, एक जमाने में समर्थ गुरु रामदास के आदेश पर शिवाजी लड़ने के लिए तैयार हो गये थे। उनके एक आदेश पर वे आजादी की लड़ाई के लिए तैयार हो गये। यही सपर्मण का मतलब है। आपको मालूम नहीं है कि इसी समर्पण की वजह से समर्थ गुरु रामदास की शक्ति शिवाजी में चली गयी और वे उसे लेकर चले गये।

जिम्मेदारी सौंप दीजिये

आपने नदी को देखा होगा कि वह कितनी गहरी होती है। चौड़ी एवं गहरी नदी को कोई आसानी से पार नहीं कर सकता है, किन्तु जब वह एक नाव पर बैठ जाता है, तो नाव वाले की सह जिम्मेदारी होती है कि वह नाव को भी न डूबने दे और वह व्यक्ति जो उसमें बैठा है, उसे भी न डुबाये। इस तरह नाविक उस व्यक्ति को पार उतार देता है। ठीक उसी प्रकार जब हम एक गुरु को, भगवान को, नाविक के रूप में समर्पण कर देते हैं तो वह हमें इस भवसागर से पार कर देता है। हमारे जीवन में इसी प्रकार घटित हुआ है। हमने अपने गुरु को भगवान् बना लिया है। हमने उन्हें एकलव्य की तरह से अपना सर्वस्व मान लिया है। हमने उन्हें एक बाबाजी, स्वामी जी गुरु नहीं माना है, बल्कि भगवान् माना है। हमारे पास इस प्रकार भगवान् की शक्ति बराबर आती रहती है। हमने पहले छोटा बल्व लगा रखा था, तो थोड़ी शक्ति आती थी। अब हमने बड़ा बल्व लगा रखा है, तो हमारे पास ज्यादा शक्ति आती रहती है। हमें जब जितना चाहिए, मिल जाता है। हमें आगे बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ लगानी हैं, बड़ा काम करना है अतः हमने उन्हें बता दिया है कि अब हमें ज्यादा 'पावर'

ज्यादा शक्ति की आवश्यकता है। आप हमारे ट्रांसफार्मर को बड़ा बना दीजिए। अब वे हमारे ट्रांसफार्मर को बड़ा बनाने जा रहे हैं। आपको भी अगर लाभ प्राप्त करना है, तो हमने जैसे अपने गुरु को माना और समर्पण किया है, आप भी उसी तरह मानिये तथा समर्पण कीजिए। उसी तरह कदम बढ़ाइये। हमने उपासना करना सीखा है और अब हम हंस बन गये हैं। आपको भी यही चीज अपनानी होगी। इससे कम में उपासना नहीं हो सकती। आप पूरे मन से, पूरी शक्ति से उपासना में मन लगाइये और वह लाभ प्राप्त कीजिए जो हमने प्राप्त किये हैं। यही है उपासना।

साधना यानी स्वयं को तपाना

साधना किसकी की जाए? भगवान् की? अरे भगवान् को न तो किसी साधना की बात सुनने का समय है और न ही उसे साधा जा सकता है। वस्तुतः जो साधना हम करते हैं, वह केवल अपने लिए होती है और स्वयं की होती है। साधना का अर्थ होता है-साध लेना। अपने आपको सँभाल लेना, तपा लेना, गरम कर लेना, परिष्कृत कर लेना, शक्तिवान बना लेना, यह सभी अर्थ साधना के हैं। साधना के संदर्भ में हम आपको सर्कस के जानवरों का उदाहरण देते रहते हैं कि हाथी, घोड़े, शेर, चीजे जब अपने को साध लेते हैं, तो कैसे-कैसे चमत्कार दिखाते हैं। साधे गये ये जानवर अपने मालिक का पेट पालने तथा सैकड़ों लोगों का मनोरंजन करने, खेल दिखाने में समर्थ होते हैं। इन जानवरों को साध लिया गया होता है, तो सैकड़ों लोगों को प्राविडेण्ट फण्ड देते हैं, पेमेण्ट देते हैं, उनका पालन करते हैं। ये कैसे साधे जाते हैं। बेटे, यह रिंगमास्टर के हण्टरों से साधे जाते हैं। वह उन्हें हण्टर मार-मारकर साधता है। अगर उन्हें ऐसे ही कहा जाए कि भाईसाहब आप इस तरह का करतब दिखाइये, तो इसके लिए वे तैयार नहीं होंगे, वरन उल्टे आपके ऊपर, मास्टर के ऊपर हमला कर देंगे।

साधना में भी यही होता है। मनुष्य के, साधक के मन के ऊपर चाबुक मारने से, हण्टर मारने से, गरम करने से, तपाने से वह काबू में आ जाता है। इसीलिए तपस्वी तपस्या करते हैं। हिन्दी में इसे 'साधना' कहते हैं और संस्कृत में 'तपस्या' कहते हैं। यह दोनों एक ही हैं। अतः साधना का मतलब है—अपने आपको तपाना। खेत की जुताई अगर ठीक ढंग से नहीं होगी, तो उसमें बुवाई भी ठीक ढंग से नहीं की जा सकेगी। अतः अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए

पहले खेत की जुताई करना आवश्यक है, ताकि उसमें से कंकड़-पत्थर आदि निकाल दिए जाएँ। उसके बाद बुवाई की जाती है। कपड़ों की धुलाई पहले करनी पड़ती है, तब उसकी रँगाई होती है। बिना धुलाये कपड़ों की रँगाई नहीं हो सकती है। काले, मैले-कुचैले कपड़े नहीं रँगे जा सकते।

साफ सुथरे बनिये

मित्रो, उसी प्रकार से राम का नाम लेना एक तरह से रँगाई है। राम की भक्ति के लिए साफ-सुथरे कपड़ों की आवश्यकता है। माँ अपने बच्चों को गोद में लेती है, परन्तु जब बच्चा टट्टी कर देता है, तो वह उसे गोद में नहीं उठाती है। पहले उसकी साफ सफाई करती है, उसके बाद उसके कपड़े बदलती है, तब गोद में लेती है। भगवान् भी ठीक उसी तरह के हैं। वे मैले-कुचैले प्रवृत्ति के लोगों को पसन्द नहीं करते हैं। यहाँ साफ-सुथरा से मतलब कपड़े से नहीं है, बल्कि भीतर से है-अंतरंग से है। इसी को स्वच्छ रखना, परिष्कृत करना पड़ता है। तपस्या एवं साधना इसी का नाम है। अपने अन्दर जो बुराइयाँ हैं, भूले हैं, कमियाँ हैं, दोष-दुर्गुण हैं, कषाय-कल्मष हैं, उन्हें दूर करना व उनके लिए कठिनाइयाँ उठाना ही साधना या तपस्या कहलाती है। इसी का दूसरा नाम पात्रता का विकास है। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्षा के समय आप बाहर जो भी पात्र रखेंगे-कटोरी, गिलास जो कुछ भी रखेंगे, उसी के अनुरूप उसमें जल भर जाएगा। इसी तरह आपकी पात्रता जितनी होगी, उतना ही भगवान् का प्यार, अनुकम्पा आप पर बरसती चली जाएगी।

तीन हथकड़ियाँ-तीन सूराख

घोड़ा जितना तेजी से दौड़ सकता है, उसी के अनुसार उसका मूल्य मिलता है। गाय जितना दूध देती है, उसी के अनुसार उसका मूल्यांकन होता है। अगर आपके कमण्डलु में सूराख है, तो उसमें डाला गया पदार्थ बह जाएगा। नाव में अगर सुराख है, तो नाव पार नहीं हो सकती। वह डूब जाएगी। अतः आप अपने बर्तन को बिना सूराख के बनाने का प्रयत्न करें। हमने सारी जिन्दगी भर इसी सूराख को बन्द करने में अपना श्रम लगाया है। वासना, तृष्णा और अहंता-यही तीन सुराख हैं, जो मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देते हैं। इन्हें ही भवबन्धन कहा गया है। अगर आपका मन संसार की ओर अधिक लगा हुआ है, तो आप आध्यात्मिकता की ओर कैसे बढ़ पाएँगे? फिर आपका मन पूजा-उपासना में कैसे लगेगा? आप इस दिशा में आगे कैसे बढ़ेंगे? गोली चलाने

वाला अगर निशाना न साधे, तो उसका काम कैसे चलेगा? वह कभी इधर को भटके, कभी उधर को भटके, तो उससे निशाना कैसे साधा जाएगा? बीस जगह ध्यान रहा, तो आप विजेता नहीं बन सकते हैं। भगवान् आपको अपनाने के लिए हाथ बढ़ा रहा है, परन्तु ये **तीन हथकड़ियाँ वासना, तृष्णा एवं अहंता** आपको भगवान् तक पहुँचने में रुकावट पैदा कर रही हैं। आपको इनसे लोहा लेना होगा। आप अगर अपने हाथों को नहीं खोलेंगे, तो भगवान् की गोद में आप कैसे जाएँगे?

धुलना और धुनना

मित्रो, साधना में आपको अपने मन को समझाना होगा। अगर मन नहीं मानता है तो आपको उसकी पिटाई करनी होगी। बैल जब खेतों में हल नहीं खींचता है तथा घोड़ा जब रास्ते पर चलने अथवा दौड़ने को तैयार नहीं होता है तो उसकी पिटाई करनी पड़ती है। हमने अपने आपको इतना पीटा है कि उसका कहना नहीं। हमने अपने आपको इतना धाने का प्रयास किया है कि उसे हम कह नहीं सकते। इस प्रकार धुलने के कारण हम फकाफक कपड़े के तरीके से आज धुले हुए उज्ज्वल हो गये। हमने अपने आपको रूई की तरह से धुनने का प्रयास किया है, जो धुनने के पश्चात फूलकर इतनी स्वच्छ औरमोटी हो जाती है कि उससे नयी चीज का निर्माण होता है।

भगवान् का भजन करने एवं नाम लेने के लिए अपना सुधार करना परम आवश्यक है। वाल्मीकि ने जब यह काम किया, तो भगवान् के परमप्रिय भक्त हो गये। उनकी वाणी में एक ताकत आ गयी। उनने डकैती छोड़ दी, उसके बाद भगवान् का नाम लिया, तो काम बन गया। कहने का मतलब यह है कि आप अपने आपको धोकर इतना निर्मल बना लें कि भगवान् आपको मजबूर होकर प्यार करने लग जाए। राम नाम के महत्त्व से ज्यादा आपकी जीभ का महत्त्व है। आप जीभ पर कंट्रोल रखिए, तब ही काम बनेगा। जीभ पर काबू रखें, आप ईमानदारी की कमाई खाएँ, बेईमानी की कमाई न खाएँ।

सादा जीवन उच्च विचार

हमने अपनी जीभ को साफ किया है। उसे इस लायक बनाया है कि गुरु का नाम लेकर जो भी वरदान देते हैं, वह सफल हो जाता है। आप भी जीभ को ठीक कीजिए न! आप अपने आपको सही करें। अपने जीवन में सादा जीवन उच्च विचार लाएँ। इस सिद्धान्त को जीवन का अंग बनाने से ही काम

बनेगा। आपको खाने के लिए दो मुट्ठी अनाज और तन ढँकने के लिए थोड़ा-सा कपड़ा चाहिए, जो इस शरीर के द्वारा आप सहज ही पूरा कर सकते हैं। फिर आप अपने जीवन को शुद्ध एवं पवित्र क्यों नहीं बनाते अगर यह काम करेंगे, तो आप भगवान् की गोदी के हकदार हो जाएँगे। ऐसा बनकर आदमी बहुत कुछ काम कर सकता है।

सादा जीवन के माने है-कसा हुआ जीवन। आपको अपना जीवन सादा बनाना होगा। माल-मजा उड़ाते हुए, लालची और लोभी रहते हुए आप चाहें कि राम नाम सार्थक हो जाएगा? नहीं कभी सार्थक नहीं होगा। हमारे गुरु ने, हमारे महापुरुषों ने हमें यही सिखाया है कि जो आदमी महान बने, ऊँचे उठे हैं, उन सभी ने अपने आपको तपाया है। आप किसी भी महापुरुष का इतिहास उठाकर पढ़कर देखें, तो पायेंगे कि अपने को तपाने के बाद ही उन्होंने वर्चस्व प्राप्त किया और फिर जहाँ भी वे गये चमत्कार करते चले गये। तलवार से सिर काटने के लिए उसे तेज करना पड़ता है, पत्थर पर घिसना पड़ता है। आपको भी प्रगति करने के लिए अपने आपको तपाना होगा, घिसना होगा । हमने एक ही चीज सीखी है कि अपने आपको अधिक से अधिक तपाएँ, अधिक से अधिक घिसें, ताकि हम ज्यादा-से-ज्यादा समाज के काम आ सकें। समाज की सेवा करना ही हमारा लक्ष्य है। अगर आप भी ऐसा कर सकें, तो बहुत फायदा होगा, जैसा कि हमें हुआ है।

सेवाधर्म नकद धर्म

साधना के पश्चात आराधना की बात बताता हूँ आपको कि आराधना क्या है और किसकी की जानी चाहिए? आराधना कहते हैं-समाजसेवा को, जन कल्याण को। सेवाधर्म वह नकद धर्म है जो हाथोंहाथ फल देता है। इसमें पहले बोना पड़ता है। आज से साठ वर्ष पूर्व हमारे पूज्य गुरुदेव ने हमारे घर पर आकर दीक्षा दी और यह कहा कि तुम बोने और काटने की बात मत भूलना। कहीं से भी कोई चीज फोकट में नहीं मिलती है, चाहे वे गुरु हों या भगवान् हों। हाँ, यह हो सकता है कि बोया जाए और काटा जाए। हम मक्के का एक बीज बोते हैं, तो न जाने कितने हजार हो जाते हैं। वही बाजरे के साथ भी होता है। उन्होंने हमसे कहा कि बेटे, फोकट में खाने की विद्या एवं माँगने की विद्या छोड़कर बोने और काटने की विद्या सीख, इससे ही तुम्हें फायदा होगा। उन्होंने इसके लिए विधान भी बतलाया कि तुम्हें चौबीस साल तक गायत्री के

महापुरश्चरण करने होंगे। इस समय जौ की रोटी एवं छाछ पर रहना होगा। उन्होंने जो भी विधि हमें बतायी, उसे हमने नोट कर लिया था। इसमें उन्होंने हमें एक नयी विधि बतलायी। वह विधि बोने और काटने की थी। उन्होंने कहा कि जो कुछ भी तेरे पास है, उसे भगवान् के खेत में बो दो। उन्होंने यह भी कहा कि जीन चीजें भगवान् की दी हुई हैं और एक चीज तुम्हारी कमाई हुई है।

बौओ और काटो

शरीर, बुद्धि और भावना–ये तीन चीजें जो भगवान् ने दी हैं। यह तीन शरीर–स्थूल, सूक्ष्म और कारण के प्रतीक हैं। इसमें तीन चीजें भरी रहती हैं– स्थूल में श्रम, समय। सूक्ष्म में मन, बुद्धि। कारण में भावना। इसके अलावा जो चौथी चीज है, वह है धन—सम्पदा, जो मनुष्य कमाता है। इसे भगवान् नहीं देता है। भगवान् न किसी को गरीब बनाता है, न अमीर। भगवान् न किसी को धनवान बनाता है, न कंगाल बनाता है। यह तेरा बनाया हुआ है, इसे तू बोना शुरू कर। हमने कहा कि कहाँ बोया जाए? उन्होंने कहा कि भगवान् के खेत में। हमने पूछा कि भगवान् कहाँ है और उनका खेत कहाँ है? उन्होंने हमें इशारा करके बतलाया कि यह सारा विश्व ही भगवान् का खेत है। यह भगवान् विराट् है। इसे ही विराट् ब्रह्म कहते हैं। अर्जुन को भगवान् श्रीकृष्ण ने इसी विराट् ब्रह्म का दर्शन कराया था। उन्होंने दिव्यचक्षु से उनका दर्शन कराया था। यही उन्होंने कौशल्या जी को दिखाया था। हमारे गुरु ने कहा कि जो कुछ भी करना हो, इसी समग्र सृष्टि के लिए करना चाहिए। यही भगवान् की वास्तविक पूजा कहलाती है। इसे ही आराधना कहते हैं।

उन्होंने हमें आदेश दिया कि तू इसी विराट् ब्रह्म के खेत में बो। अर्थात् जनसमाज की सेवा कर। समाज का कल्याण करने, उसे ऊँचा उठाने, समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने में अपनी समस्त शक्तियाँ एवं सम्पदा लगा, फिर आगे देखना कि यह सौ गुनी हो जाएँगी। जो भी तीन–चार चीजें तेरे पास हैं, उसे लगा दे, तुझे ऋद्धि–सिद्धियाँ मिल जाएँगी। यह सब तेरे पीछे घूमेंगी। तू मालदार हो जाएगा। अब हम तैयार हो गये। हमने विचार दृढ़ बना लिया। उन्होंने पूछा कि क्या चीजें हैं तेरे पास? हमने कहा कि हमारा शरीर है। हमने सूर्योदय से पहले भगवान् का नाम लिया है अर्थात् भजन किया है, बाकी समय हमने भगवान् का काम किया है। सूर्य निकलने से लेकर सूर्य डूबने तक सारा समय भगवान् के लिए लगाया, समाज के लिए लगाया है।

दूसरी, बुद्धि है हमारे पास। आज लोगों की बुद्धि न जाने किस-किस गलत काम में लग रही है। आज लोग अपनी बुद्धि को मिलावट करने, तस्करी करने, गलत काम करने में खर्च कर रहे हैं। हमने निश्चय किया कि हम अपनी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर ले जाएँगे तथा इससे समाज, देश को ऊँचा उठाने का प्रयास करेंगे। हमने अपनी अक्ल एवं बुद्धि को यानी अपने सारे-के-सारे मन को भगवान् के कार्य में लगाया।

सिद्धांत खरा उतरा

और क्या था हमारे पास? हमारे पास थी भावना-संवदेना। यह भी हमने अपने कुटुम्बियों के लिए, बेटे-बेटी के लिए नहीं लगाई। हमने अपनी भावना एवं संवदेना के माध्यम से इस संसार में रहने वाले व्यक्तियों के दुःखों के निवारण के लिए हमेशा उपयोग किया। हमने हमेशा यह सोचा कि हमारे पास कुछ है, तो उसे किस तरह से बाँट सकते हैं? अगर किसी के पास दुख है, तो उसे किस तरह से दूर कर सकते हैं। यही हमने अपने पूरे जीवनकाल में किया है। इसके अलावा जो भी धन था, उसे भी भगवान् के कार्य में खर्च कर दिया। इससे हमें बहुत मिला, इतना अधिक मिला कि हम आपको बतला नहीं सकते। हमें लोग कितना प्यार करते हैं, यह आपको नहीं मालूम। लोग यहाँ आते हैं, तो यह कहते हैं कि हमें गुरुजी का दर्शन मिल जाता, तो कितना अच्छा होता। यह क्या है? यह है हमारा प्यार, मोहब्बत, जो हमने उन्हें दी है तथा उनसे हमने पायी है। गाँधी जी ने भी दिया था एवं उन्होंने भी पाया है। हमने तो कहीं अधिक पाया है। मरने के बाद तो कितने ही व्यक्तियों की लोग पूजा करते हैं। भगवान् बुद्ध की पूजा करते हैं। मरने के बाद भगवान् श्रीकृष्ण की जय बोलते हैं, जबकि उस समय लोगों ने उन्हें गालियाँ दी थीं। हमारे मरने के बाद कोई आरती उतारेगा कि नहीं, मैं यह नहीं कह सकता, परन्तु आज कितने लोगों ने आरती उतारी है, प्यार किया है, इसे हम बतला नहीं सकते। यह क्या हो गया? यह है हमारा '**बोया एवं काटा**' का सिद्धान्त। यह है हमारी आराधना-समाज के लिए, भगवान के लिए।

समाज ही भगवान्

मित्रो, हमने पत्थर की मूर्ति के लिए नहीं, वरन् समाज के लिए काम किया है। पत्थर की मूर्ति को भगवान् नहीं कहते हैं। समाज को ही भगवान् कहते हैं। हमने ऐसा ही किया है। हमें दो मालियों की कहानी हमेशा याद रहती

है। एक राजा ने एक बगीचा एक माली को दिया तथा दूसरा बगीचा दूसरे माली को। एक ने तो बगीचे में राजा का चित्र लगा दिया और नित्य चन्दन लगाता, आरती उतारता तथा एक सौ आठ परिक्रमा करता रहा। इसके कारण बगीचे का कार्य उपेक्षित पड़ा रहा। बगीचा सूखने लगा।

दूसरा माली तो राजा का नाम भी भूल गया, परन्तु वह निरन्तर बगीचे में खाद-पानी डालने, निराई करने का काम करता रहा। इससे उसका बगीचा हरियाली से भरा-पूरा होता चला गया। राजा एक वर्ष बाद बगीचा देखने आया, तो पहले वाले माली को उसने हटा दिया, जो एक सौ आठ परिक्रमा करता और आरती उतारता था। दूसरे उस माली का अभिनन्दन किया, उसे ऊँचा उठा दिया, जिसने वास्तव में बगीचे को सुन्दर बनाने का प्रयास किया था।

हमारी सिद्धियाँ

हमारा भगवान् भी उसी तरह का है। उन्होंने कहा था कि जो कुछ भी करना भगवान् के लिए करना, समाज के लिए करना। हमने सारी जिन्दगी इसी तरह का काम किया है और जितना किया है, उतना पा लिया है। आगे जो हम करेंगे, उसके एवज में भी हम पाते रहेंगे। आपका तो हमेशा दिल धड़कता रहता है। आपको तो भगवान् का नाम लेना सहज मालूम पड़ता है, पर भगवान् का काम करना मुश्किल पड़ता है तथा उसके लिए पैसा लगाना तो और भी मुश्किल मालूम पड़ता है। यह आपके लिए मुश्किल हो सकता है, परन्तु हमारे लिए तो यह एकदम सरल है। हमारे दिमाग, शरीर, साहित्य, हमारी प्लानिंग को देख लीजिए, यह हमारी सिद्धियाँ हैं। ज्ञान की थाह आप ले लीजिए, हमारे धन की जानकारी ले लीजिए, हमारी भावना को देख लीजिए, कितने लोग हमारे दर्शन को लालायित रहते हैं। यह सारी हमारी प्रत्यक्ष सिद्धियाँ हैं। ऋद्धियाँ तो हमारी दिखलाई नहीं पड़ती। हमें खूब आराम से नींद आ जाती है, पास में नगाड़ा भी बजता रहे, तो भी कोई परवाह नहीं। चिन्ता हमारे पास नहीं है। हम निर्भीक हैं। आत्मसंतोष हमारी ऋद्धि है। हमारा लोकसम्मान बहुत है। लोकसम्मान उसे कहते हैं- जिसमें जनता का सहयोग मिलता है। भगवान् का अनुग्रह भी हमें मिला है। अनुग्रह कैसा होता है, कहते हैं कि देवता ऊपर से फूल बरसाते हैं। हमारे ऊपर हमेशा फूल बरसते रहते हैं, जिसे हम प्रोत्साहन, साहस, हिम्मत, प्रेरणा, उत्साह, उम्मीद कह सकते हैं। देवता इसे हमारे ऊपर बरसाते रहते हैं।

पिता के वफादार पुत्र

मित्रो, हम अपने पिता के वफादार बेटे हैं। हमने उनके धन को पाया है, क्योंकि हमने उनके नाम को बदनाम नहीं किया है। हमने अपने पिता की लाज रखी है। हमने अपने पिता के व्यवसाय को जिंदा रखा है हमने उनके बगीचे को हमेशा हरा-भरा तथा अच्छा बनाने का प्रयास किया है। मनुष्यों को सुसंस्कारी तथा समुन्नत बनाने के लिए जो भी संभव था, उसे हमने पूरा किया है। हमारे पिता हमसे हमेशा प्रसन्न रहते हैं। युवराज वह होता है, जो अपने पिता के समान हो जाता है। हम अपने पिता के युवराज हैं। हम अपने पिता के समकक्ष हो गये हैं। हमने पिता को गुम्बज की आवाज-प्रतिध्वनि के रूप में देखा है। जो शब्द हमने कहा-वैसा ही सुनने को मिला। हमने कहा कि जो कुछ भी हमारे पास है, वह आपका है। उसने भी ऐसा ही कहा कि जो कुछ हमारे पास है, वह तुम्हारा है। हमने कहा कि हमें नहीं चाहिए आपका, उसने भी वैसा ही कहा।

भगवान् हमेशा हमारे बॉडीगार्ड के रूप में फिरता रहता है। वह कहता है कि कभी भी हिम्मत मत हारना, साहस मत खोना, किसी से डरना मत। जो तुम्हें तंग करेगा उसे हम ठीक कर देंगे। उसकी नाक में दम कर देंगे। वह परेशान एवं हैरान हो जाएगा। उसे हम धूल में मिला देंगे। हमारा बॉडीगार्ड आगे-आगे चलता है। हम उसके पीछे चलते हैं। हमारा पायलट आगे चलता है, बॉडीगार्ड पीछे चलता है। हम सुरक्षित होकर मिनिस्टर के तरीके से शानदार ढंग से चलते हैं। यह हमारा प्रत्यक्ष चमत्कार है, जो आप देख रहे हैं।

कैसी हो साधना ?

आध्यात्मिक क्षेत्र में सिद्धि पाने के लिए अनेक लोग प्रयास करते हैं, पर उन्हें सिद्धि क्यों नहीं मिलती है ? साधना से सिद्धि पाने का क्या रहस्य है ? इस रहस्य को न जानने के कारण ही प्रायः लोग खाली हाथ रह जाते हैं। मित्रो, साधना की सिद्धि होना निश्चित है। साधना सामान्य चीज नहीं है। यह असामान्य चीज है। परन्तु साधना को साधना की तरह किया जाना परम आवश्यक है। साधना कैसी होनी चाहिए इस सम्बन्ध में हम आपको पुस्तकों का हवाला देने की अपेक्षा एक बात बताना चाहते हैं, जिसकी आप जाँच-पड़ताल कभी भी कर सकते हैं।

हम पचहत्तर सालके हो गये हैं। कहने का मतलब यह है कि हमारे पूरे ७५ साल साधना में व्यतीत हुए हैं। यह हमारा जीवन एक खुली पुस्तक के रूप में है। हमने साधना की है। उसका परिणाम मिला है और जो कोई भी साधना करेगा, उसे भी परिणाम अवश्य मिलेगा। हमें कैसे मिला, इसके संदर्भ में हम दो घटनाएँ सुनाना चाहते हैं।

कौन है ब्राह्मण ?

पहली बार हमारे पिताजी हमें महामना मदनमोहन मालवीय जी के पास यज्ञोपवीत एवं दीक्षा दिलाने के लिए बनारस ले गये थे। मालवीय जी ने काशी में हमें यज्ञोपवीत भी पहनाया और दीक्षा भी दी। उस समय उन्होंने हमें बहुत-सी बातें बतलायीं। उस समय हमारी उम्र बहुत कम यानी ९ वर्ष की थी, परन्तु दो बातें हमें अभी भी ज्ञात हैं। पहली बात उन्होंने कहा कि हमने जो गायत्रीमंत्र की दीक्षा दी है, **वह ब्राह्मणों की कामधेनु है**। हमने पूछा कि क्या यह अन्य लोगों की नहीं है ? उन्होंने कहा कि नहीं, **ब्राह्मण जन्म से नहीं, कर्म से होता है**। जो ईमानदार, नेक, शरीफ है तथा जो समाज के लिए, देश के लिए, लोकहित के लिए जीता है, उसे ब्राह्मण कहते हैं। एक औसत भारतीय की तरह जो जिए तथा अधिक से अधिक समाज के लिए लगा दे, उसे ब्राह्मण कहते हैं। गाँधीजी ने भी राजा हरिश्चन्द्र का नाटक देखकर यह वचन दिया था कि हम हरिश्चन्द्र होकर जियेंगे। वे इस तरह का जीवन जिए भी। हमने भी मालवीय जी के सामने यह संकल्प लिया था कि हम ब्राह्मण का जीवन जियेंगे। हमने वैसा ही जीवन प्रारम्भ से जिया है।

हमारे दूसरे आध्यात्मिक गुरु, जो हिमालयवासी हैं और जो सूक्ष्म-शरीरधारी हैं, उन्होंने हमारे घर में प्रकाश के रूप में आकर दीक्षा दी। उन्होंने हमें पूर्व जन्म की बातें दिखलाईं। उसके बाद उन्होंने हमें गायत्री मंत्र की दीक्षा दी। हमने कहा कि गायत्री मंत्र की दीक्षा तो हम पहले से लिए हुए हैं, फिर दोबारा देने का क्या अर्थ है ? उन्होंने कहा कि आपके पहले गुरु ने यह कहा था कि यह ब्राह्मणों की गायत्री है। अब हम यह बतलाते हैं कि बोओ और काटो। इस मंत्र के अनुसार हमने अपने पिता की सम्पत्ति को भी लोकमंगल में लगा दिया। हमने बोया और पाया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि इसके अलावा अन्य चार चीजों को भगवान् के खेत में लगाना चाहिए। समय, श्रम, बुद्धि-जो भगवान् से मिली है। धन वह है, जो संसार में कमाया जाता है। ये चारों चीजें

हमने समाज में लगा दीं। इसके द्वारा हमारी पूजा, उपासना एवं साधना हो गयी। हमारे ब्राह्मण-जीवन का यही चमत्कार है। यही हमारी पूजा है।

आपको भी मिलेगा

समय के बारे में आप देखना चाहें, तो इन पचहत्तर वर्षों में हमने क्या किया है, कितना किया है, वह आप देख सकते हैं। हमने भगवान् यानी जो अच्छाइयों का समुच्चय है, उसे समर्पण करके यह सब किया है। हमारी उपासना और साधना ऐसी है कि हमने सारी जिन्दगी भर धोबी के तरीके से अपने जीवन को धोया है और अपनी कमियों को चुन-चुनकर निकालने का प्रयत्न किया है। आराधना हमने समाज को ऊँचा उठाने के लिए की है। आप यहाँ आइये और देखिये, अपने मुख से अपने बारे में कहना ठीक बात नहीं है। आप यहाँ आइये और दूसरों के मुख से सुनिये। हम सामान्य व्यक्ति नहीं हैं, असामान्य व्यक्ति हैं। यह हमें उपासना, साधना और आराधना के द्वारा मिला है। आप अगर इन तीनों चीजों का समन्वय अपने जीवन में करेंगे, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपको साधना से सिद्धि अवश्य मिलेगी।

चमत्कार प्रत्यक्ष देखिये

हमारे जो भी सहयोगी, सखा, सहचर एवं मित्र हैं, उनसे हम यही कहना चाहते हैं कि आप केवल अपने तथा अपने परिवार के लिए ही खर्च मत कीजिए, वरन् कुछ हिस्सा भगवान् के लिए भी खर्च कीजिए। साथ ही हम यह भी कहते हैं कि बोइये और काटिये। फिर देखिये कि जीवन में क्या-क्या चमत्कार होते हैं। आप जनहित में, लोकमंगल में, पिछड़ों को ऊँचा उठाने में अपना श्रम, समय, साधन लगाएँ। अगर आप इतना करेंगे, तो विश्वास रखिये आपको साधना से सिद्धि मिल सकती है। हमने इसी आधार पर पाया है और आप भी पा सकेंगे, परन्तु आपको सही रूप से इन तीनों को पूरा करना होगा। आपकी साधना तब तक सफल नहीं होगी, जब तक आप हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चलेंगे। यदि आप हमारे कंधे से कंधा मिलाकर और कदम से कदम मिलाकर चल सकें, तो हम आपको यकीन दिलाते हैं कि आपका जीवन धन्य हो जाएगा, पीढ़ियाँ आपको श्रद्धापूर्वक याद रखेंगी। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्तिः

महाकाल के सहभागी बनें

(गुरुपूर्णिमा पर्व १९८० पर दिया गया पावन संदेश)

यह विशिष्ठ समय

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

देवियो, भाइयो!

आज गुरुपूर्णिमा पर्व के महत्त्वपूर्ण पर्व पर महाकाल ने कुछ विशेष संदेश भेजा है। इनमें से पहला संदेश यह है कि युगसंधि के ये बीस साल इतने महत्त्वपूर्ण हैं, जो पीढ़ियों तक याद रहेंगे। इस समय महाकाल कुछ गलाई करने जा रहे हैं एवं कुछ ढलाई करने जा रहे हैं। बेकार की चीजों-बेकाम की चीजों की गलाई होने जा रही है। बेकार के आदमी एवं बेकार की परिस्थितियाँ सब गलने जा रही हैं। गल करके उनकी ढलाई होगी, नये पुर्जे बनने वाले हैं। नयी चीजें बनने वाली हैं। इन बीस वर्षों में बहुत ही जोरों के साथ गलाई एवं ढलाई का काम चलेगा। इतिहास इस बात को याद करेगा कि बीस वर्षों में सड़ी-गली व्यवस्थाएँ एवं व्यक्ति कैसे समाप्त हो गये और किस प्रकार नया प्रभात हुआ। अब नये व्यक्ति, नयी परम्पराएँ, नये चिन्तन उभर कर आयेंगे। अगले दिनों लोग यह सोचकर अचम्भा करेंगे कि इतने कम समय में इतना परिवर्तन कैसे हो गया। अगर इस समय को आप जान पायें, पहचान पायें तो हमारा ख्याल है कि आप सच्चे अर्थों में पुण्यवान बन सकते हैं।

हमें महाकाल ने संदेश भेजा है कि आप लोग इन बीस वर्षों में कीड़े-मकोड़ों के जीवन से ऊँचा उठकर जीवन जियें और कुछ काम करें। आपको औलाद की चिन्ता करते-करते करोड़ों वर्ष हो गये। धन की चिन्ता करते-करते करोड़ों वर्ष हो गये। अगर आप चाहें, तो और करोड़ों वर्ष, करोड़ों जन्म इसी प्रकार के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। इसमें आपको कुछ मिलने वाला नहीं है। आप अगर हमारी बात मानें, तो अपने कुछ व्यवहार एवं चिन्तन इस समय बदल दें। इससे आपको लाभ ही लाभ मिलेगा। आपकी परेशानी दूर हो जाएँगी, अगर आप जमाखोरी करना बन्द कर दें। महाकाल ने दो कार्य बन्द करने को कहा है, सो आप अपनी औलाद एवं धन की बात करना अभी बन्द कर दें। हम आपको बतलाना चाहते हैं कि जार्ज वाशिंगटन ने अपने पुरुषार्थ के बल पर इज्जत एवं धन प्राप्त किया था। भगवान् ने उन्हें जन्म से ही नहीं दिया था। आप भी ये चीजें प्राप्त कर सकते हैं। आप क्यों बंधनों में जकड़ कर मर रहे हैं। आप

अपनी हथकड़ियों को ढीला कर दीजिए। महाकाल चाहते हैं कि आपका इन दिनों भौतिक चीजों से मन खट्टा हो जाए। जब इस प्रकार का आपका मन आपका इस युगसंधि के समय बन जाएगा, तो हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आपके पास समय की कमी नहीं रहेगी। पास धन-दौलत की कमी नहीं रहेगी। आप जो भी काम चाहेंगे, उसे पूरा कर सकते हैं। पुरुषार्थ की कमी नहीं होगी।

सहयोगी बनिये

अतः इस समय हमारा एक ही निवेदन है कि आप महाकाल के, प्रज्ञावतार के सहयोगी का रोल अदा करें। यह संदेश महाकाल ने-प्रज्ञावतार ने, हमारे गुरुदेव ने भेजा है। आप इस काम को कर पायेंगे, तो सारा संसार आपकी सराहना करेगा तथा आप अपने आप भी अपनी सराहना करेंगे। अगर आप इस प्रकार की हिम्मत कर सकेंगे, तो आपको ही लाभ होगा। इस समय हमारा एक ही निवेदन है कि आप महाकाल के, प्रज्ञावतार के सहयोगी का रोल अदा करें। यह संदेश महाकाल ने-प्रज्ञावतार ने, हमारे गुरुदेव ने भेजा है। आप इस काम को कर पायेंगे, तो सारा संसार आपकी सराहना करेगा तथा आप अपने आप भी अपनी सराहना करेंगे। अगर आप इस प्रकार की हिम्मत कर सकेंगे, तो आपको ही लाभ होगा।

भगवान् के साकार रूप बन जाइये

महाकाल का दूसरा संदेश यह है कि इस समय आपको भगवान् का काम करना चाहिए। आप ऋषियों का महात्माओं का इतिहास पढ़ लीजिए कि कोई भी व्यक्ति भगवान् का केवल नाम लेकर ऊँचा नहीं उठा है। उसे भगवान् का काम भी करना पड़ा है। आपको भी कुछ काम करना होगा, अगर आप भगवान् का नाम लेकर अपने आपको बहकाना चाहते हैं, तो हम कुछ नहीं कर सकते हैं। अगर आप अपने आपको बहकाते रहे, भगवान् को बहकाते रहे, तो आप इसी प्रकार खाली हाथ रहेंगे, जैसे आज आप रह रहे हैं। यह आपके लिए खुली छूट है। निर्णय आपको करना है, कदम आपको ही बढ़ाना है। भगवान् काम नहीं कर सकता है, क्योंकि वह अपने आप में निराकार है। आप भगवान् का साकार रूप बनकर उनका काम करने का प्रयास करें। आदमी का सिर काटने के लिए तलवार की आवश्यकता पड़ती है, परन्तु अकेली तलवार से काम नहीं चल सकता है। पुरुषार्थ निराकार है तथा तलवार साकार है। इन दोनों के मिलने से ही काम बनता है। आप भी इसी प्रकार भगवान् का काम करने के

लिए आयें तथा प्रयत्न करें। इस युगसंधि की वेला में भगवान् जो कि निराकार हैं, उन्हें साकार सहयोगी लोगों की आवश्यकता है।

कम में बात बनेगी नहीं

प्राचीनकाल में भी भगवान् का काम जाग्रत आत्माओं ने किया था। आगे जल्दी अवतार नहीं होने वाला है। इस समय सारे विश्व की व्यवस्था नये सिरे से बनने वाली है। उस समय आप कितने महान बनेंगे, इसका जवाब समय देगा। हनुमान् जी ने कितनी उपासना की थी, कितनी कुण्डलिनियाँ जगायी थीं? यह हम नहीं कह सकते हैं, परन्तु उन्होंने भगवान् का काम किया था। नल-नील ने, जामवन्त ने, अर्जुन ने कितनी पूजा एवं तीर्थयात्रा की थी? पर उन्होंने भगवान् के कंधे-से-कंधा मिलाकर काम किया था। इस कारण से भगवान् ने भी उनके कार्यों में कंधे-से-कंधा मिलाया था। विभीषण एवं केवट ने भगवान् का काम किया था, ये लोग घाटे में नहीं रहे। भगवान् का काम करने वाले ही भगवान् के वास्तविक भक्त होते हैं। भगवान् का नाम लेने वाले भी भगवान् के भक्त हो सकते हैं, परन्तु उन्हें भगवान् का काम भी करना पड़ेगा। इससे कम में बात बनने वाली नहीं है।

महाकाल का संदेश

इस समय जो भगवान् के भक्त हैं, जिन्हें इस संसार के प्रति दर्द है, उनके नाम यह विशेष संदेश भेजा गया है कि वे अपने व्यक्तिगत लाभ के कामों में कटौती करें एवं भगवान का काम करने के लिए आगे आयें। भगवान् के काम के लिए, सहायता के लिए आगे आयें। यही है हमारा गुरुपूर्णिमा का संदेश, यही है महाकाल का संदेश। अगर आप सुन सकेंगे, तो आपके लिए बहुत ही लाभदायक होगा। आप सुनेंगे, तो आपको भी लाभ मिलेगा, लेकिन अगर आप इस समय चादर ओढ़कर सोये रहेंगे, तो आपको घाटा-ही-घाटा होगा। अगर इस समय भी आप अपना मतलब सिद्ध करते रहे और मालदार बनते रहे, तो पीछे आपको बहुत पछताना पड़ेगा तथा आप हाथ मलते रह जाएँगे। गाँधी जी के स्वतन्त्रता आन्दोलन में जो आदमी शामिल हो गये थे, वे आज स्वतन्त्रता सेनानी हैं और पेंशन पा रहे हैं, मिनिस्टर हैं, राज्यपाल हैं। पर जो लोग भाग नहीं ले सके, आज वे लोग पछता रहे हैं कि काश! हम भी कुछ काम कर लेते, तो आज नफे में होते। आपकी इन दिनों की चालाकी आपको हजारों वर्षों तक दुःख देती रहेगी तथा आप परेशान रहेंगे। अतः आप अभी से अपने बीस वर्षों की कार्यपद्धति बना लें तथा भावी योजना का निर्धारण कर लें।

बीज बोने का पुरुषार्थ

इस समय आपको तीन काम करने हैं। यह युगसंधि का बीजारोपण वर्ष है। इसमें बीज बोने हैं, ताकि फसल हम प्राप्त कर सकें। बीज बोने के लिए हमें तीन काम करने होंगे। पहला काम वातावरण के परिष्कार तथा आपका आत्मबल बढ़ाने के लिए है। इन दोनों उद्देश्यों के लिए आपको युगसंधि महापुरश्चरण करना चाहिए। यह सामूहिक तप है। आपके अकेले का तप इस काम के लिए सार्थक नहीं हो सकता है। अत: महाकाल ने इस समय विशेष शक्ति देने का निश्चय किया है। यह प्राणसंचार की प्रक्रिया है एवं दिव्य-दृष्टि जागरण की प्रक्रिया है। आप नैष्ठिक तपस्या कीजिये, देवता आपको अनुदान देंगे। यह ऐसा कार्य है, जो हर किसी को करना चाहिए। हम में से हर किसी को जो उपासना में विश्वास करते हैं, उन्हें यह तपस्या अवश्य करनी चाहिए। आपकी उपासना इसलिए असफल रही है कि उसमें निष्ठा का समावेश नहीं हुआ है, श्रद्धा का समावेश नहीं हुआ है। आपने कामनापूर्ति के लिए उपासना की, इसलिए वह सारा-का-सारा प्रयास निष्फल चला गया। आप तपस्यायुक्त उपासना कीजिए, फिर देखिये उसमें चमत्कार होता है या नहीं।

महापुरश्चरण में शामिल हों

मित्रो, आप युगसंधि महापुरश्चरण अवश्य करें। इसमें तपस्या भी शामिल है, निष्ठा भी शामिल है। यह लाभ उठाने का मौका न कभी मिला है और न बीस साल बाद कभी मिलने वाला है। ऐसा आश्वासन किसी ने नहीं दिया होगा कि आपका अनुष्ठान खण्डित हो जाएगा अर्थात् अधूरा रह जाएगा, तो हम उसे पूरा करेंगे। आपकी मृत्यु हो जाने पर भी हम उसे पूरा करेंगे। आप अगर बीच में भी हार जाएँ या थक जाएँ, तो हम आपके बदले का भार उठा लेंगे। यह कितना बड़ा आश्वासन है। आप इतने बड़े आश्वासनयुक्त उपासना को अवश्य प्रारम्भ कर दें। हमारा यह कहना है कि कोई भी प्रज्ञापरिजन ऐसा न हो, जो इस नियमबद्ध उपासना को प्रारम्भ न करे। यह वातावरण के संशोधन तथा साधकों के आत्मबल के अभिवर्द्धन हेतु प्रारम्भ किया गया है। इससे आप सुनिश्चित रूप से जुडें एवं लाभ प्राप्त करें।

दूसरा वाला भगवान् का कार्य है-गायत्री चरणपीठों की स्थापना। तब भगवान् का कार्य करने के लिए कुछ व्यक्ति आ गये थे-मसलन् हनुमान। हनुमान के अन्दर पुरुषार्थ भी था, साहस और साधन भी था तथा उसके अन्दर

भावना भी थी। अब ऐसे आदमियों का मिलना भी मुश्किल है। आपको ऐसी परिस्थिति में क्या करना होगा? आपको एक समानान्तर हनुमान अपने क्षेत्र में खड़ा करना होगा, जिसका कलेवर भी हो तथा जिसमें प्राण भी हो। यह हनुमान क्या है? यह है गायत्री चरण-पीठों की स्थापना। ये चरणपीठें बन रही हैं और आपको बनानी चाहिए। आपकी जहाँ भी गायत्री परिवार की शाखाएँ हैं, वहाँ गायत्री चरणपीठें बना देनी चाहिए। गायत्री चरणपीठों के नये नक्शे बना दिये गये हैं।

प्रज्ञावतार के केन्द्र बनें

आपको ऐसी चरणपीठें बनानी चाहिए, जो कम लागत की होते हुए भी चार बातों को पूरा करने में समर्थ हो सकें। वहाँ एक गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता का निवास अवश्य होना चाहिए। वे मन्दिर हो सकते हैं, परन्तु मात्र उसी से जन-जागरण का काम नहीं हो सकता है। अतः वहाँ पर भगवान् के काम को करने वाला भी उपस्थित होना चाहिए, जो गतिविधियाँ चला सकें। अगर कार्यकर्त्ता निवास नहीं होगा, तो वह सुबह घंटी बजाकर घर चला जाएगा। ऐसे वातावरण में काम कहाँ हो सकता है। हम ऐसे घण्टी बजाने वाले मन्दिर बनाकर क्या करेंगे इसके बाद उसमें एक हॉल होना चाहिए। इस हॉल के माध्यम से कई गतिविधियाँ चलेंगी। उसमें सत्संग होगा। दिन में पाठशाला भी चल सकेगी। रात्रि में उसमें कथा का आयोजन भी चल सकता है। प्रौढ़ शिक्षा का काम भी वहाँ चल सकता है। अतः इस चरणपीठ में हमने १६×२४ का एक हॉल भी जोड़ दिया है। अगर हॉल न हो, तो काम पूरा कहाँ होगा, भले यह खपरैल का ही क्यों न हो, क्योंकि नये युग का संदेश देने के लिए, साहित्य घर-घर देने के लिए, वापस लेने के लिए एक स्थान होना चाहिए। हम अगले दिनों अपने मिशन के द्वारा इस प्रकार एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाने वाले हैं, जिसके द्वारा काम हो सके। इसके बिना काम पूरा हो ही नहीं सकेगा। अतः उसमें देवालय भी होना चाहिए तथा पुस्तकालय भी होना चाहिए। यह प्रज्ञावतार का केन्द्र है। अतः इसमें चार चीजें अवश्य होनी चाहिए, इसके बिना कोई उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है। वे हैं-(१)मन्दिर, (२) पुस्तकालय, (३) हॉल,(४) कार्यकर्त्ता निवास।

कृपणता छोड़िये

आप में से हर शाखा के परिजनों का यह प्रयास होना चाहिए कि वे अपने ग्राम में एक चरणपीठ की स्थापना कर लें। अगर कोई चंदा नहीं देता है, तो कोई बात नहीं। आप यह बात नहीं कहें, वरन् यह सोचें कि आपके कितने बच्चे हैं? हर एक की शादी में आपने दस हजार रुपये खर्च किये हैं, तो इस बच्चे अर्थात् चरणपीठ के लिए भी छह हजार खर्च करें। इसके बिना कृपणता के इस युग में युग निर्माण नहीं हो सकता है। आप अपनी घड़ी बेचकर इस काम में लगाइये। आप अपनी कृपणता को छोड़ें एवं भगवान् के सहयोगी बनें। आप भगवान् के निमित्त अपना समय देना शुरू कीजिए, फिर देखिये आपको सहयोग देने के लिए दूसरे आदमी आपके पास आते हैं कि नहीं। आप पहले अपना लगाइये तो सही, फिर देखिये दूसरा आदमी किस प्रकार देता है। आप अपना लगाना नहीं चाहते हैं और दूसरों से माँगते हैं। इससे काम नहीं बनेगा। आगे आपको आना पड़ेगा। त्याग की कसौटी पर आपको स्वयं को खरा सिद्ध करना पड़ेगा। अगर आप इस प्रकार कर सकेंगे, तो ही काम बनेगा। छह हजार रुपये कुछ भी नहीं हैं। अगर यह मान लें कि हमें अपनी बेटी, बहिन की शादी करनी है, तो हर व्यक्ति अपनी जेब से निकाल कर दे देता है। आप अगर हिम्मत करेंगे और देंगे, तो आपको देखकर दूसरा आदमी भी अनायास ही देगा। आप अगर देने में आगे आयेंगे, तो न जाने कितने लोग आपको सहयोग करने के लिए आमादा हो जाएँगे। हर गाँव में चरणपीठ बनना चाहिए, यह हमारा अनुरोध है आप से।

तीसरे काम के बारे में हम बात बतलाकर अपनी बात समाप्त करेंगे। हमें युगपरिवर्तन की बातों को बतलाने के लिए, युग संदेश को घर-घर पहुँचाने के लिए, प्रज्ञावतार के अलख को घर-घर पहुँचाने के लिए, दो प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता है। हमें इस काम के लिए नम्बर एक-संत तथा नम्बर दो-ब्राह्मणों की आवश्यकता है। ऐसे अनेक आदमी अन्य कार्यों के लिए मिल सकते हैं, परन्तु हमें तो संत चाहिए, हमें तो ब्राह्मण चाहिए।

संत और ब्राह्मण को जगाइये

संत से क्या मतलब है? संत का मतलब है, पुरुषार्थी, त्यागी और तपस्वी। आपके भीतर तो दो ही चीजें जगी हुई हैं। कौन-कौन-सी चीजें जगी हुई हैं? आपके भीतर एक चाण्डाल जगा हुआ है। वह कामवासना की बातें

करता है, बेकार की बातें करता है। यह चाण्डाल बिल्कुल बेकार है। यही माद्दा आपका जगा है, जो हमेशा आपको परेशान करता रहता है। एक इंच भी आपको आगे बढ़ने नहीं देता है। दूसरी चीज एक और जगी हुई है, जिसका नाम बनिया है। इसका मतलब यह है कि वह व्यक्ति किसी भी बिरादरी में पैदा हुआ हो, उसे हर समय पैसा, हर समय दौलत ही दिखायी पड़ती है। हर समय लालच और हर समय लोभ ही घेरे रहता है। यह बनियापन आपका जगा हुआ है। शूद्र आपका जगा हुआ है, परन्तु आपके अन्दर दो चीजें बिल्कुल सोयी हुई हैं, पहला ब्राह्मण और दूसरा-संत। इनको पुरुषार्थ, त्याग, साहस जो भी आप नाम चाहें, दे सकते हैं। यह दोनों आपके अन्दर सो गये हैं, जिसके कारण आप भगवान का कार्य करने में असमर्थ हैं।

मित्रो, हमें आपके भीतर के संत और ब्राह्मण को जगाना है। हम बाहर के ब्राह्मण से क्या बात करेंगे? बाहर के संतों से हम क्या कहेंगे, बाहर संत कहाँ हैं? उनका नाम लेने से हमारा दिमाग खराब हो जाता है। आप उन बाबाजी से हमें कहने को कहते हैं, जिनने कभी कुछ नहीं किया है और न आगे करेंगे। आपके भीतर जो संत सोया है, आप उसे जगायें। **संत किसे कहते हैं? जिसने अपने लोभ एवं मोह को समाप्त कर दिया है।** आप देखेंगे कि इस गायत्री परिवार के लोगों में से कितने संत निकलते हुए चले आयेंगे। ऐसे व्यक्ति आपको दिखायी देंगे जिनकी जिम्मेदारी कम हो गयी है या जो अपने घर को देखते हुए भी मिशन का काम करते हैं, वे सब संत हैं, महाकाल की प्रार्थना है कि आप संत की भूमिका निभायें एवं परिव्राजक के तरीके से जन-जन तक महाकाल के संदेश को पहुँचाने का प्रयास करें। भगवान् का काम करने में अपना समय लगा दें।

उन लोगों का नाम संत है, जो बादलों की तरह से घूमते हैं और भगवान् का संदेश हर जगह पहुँचाते हैं तथा हर आदमी के भीतर जीवट पैदा करते हैं। आप लोगों में से हर आदमी के भीतर ब्राह्मण छिपा पड़ा है। ब्राह्मण तो वे हैं, जो काम तो करना चाहते हैं, परन्तु घर की जिम्मेदारियाँ एवं अन्य समस्याओं के कारण कुछ कर नहीं पाते हैं। हमने ऐसे ब्राह्मणों का आह्वान किया है कि वे निकलकर बाहर आयें। संत वे हैं, जो बिना लिए काम करते हैं। ब्राह्मणों को लेना पड़ता है। हम उन्हें देने को तैयार हैं, वे घर से निकलकर तो आयें। हम उनके गुजारे का प्रबन्ध कर सकते हैं। अगर उन्होंने बड़ी गृहस्थी

इकट्ठी कर रखी है, तो बात अलग है। अगर बहुत बड़ी हविश बना रखी है, तो बात अलग है अन्यथा अगर वे पेट भरना चाहते हैं और तन ढँकना चाहते हैं, तो गायत्री परिवार के सदस्यों को ब्राह्मणोचित खर्च देने को हम तैयार हैं।

ज्ञानघट-धर्मघट

आप जानते हैं कि प्राचीनकाल में ब्राह्मणों का खर्च भिक्षाटन से पूरा होता था। हमने भी इस प्रकार का पात्र बना रखा है। गायत्री परिवार के घरों में ज्ञानघट-धर्मघट के रूप में स्थापित कर दिया है। उनसे कह दिया है कि आप नित्य इसमें दस पैसा डालें। हम किसी भी गायत्री परिवार के व्यक्ति को बिना ज्ञानघट के नहीं रहने देंगे। हम किसी को भी मुट्ठी भर अनाज दिये बिना नहीं रहने देंगे। यह ब्राह्मणों की जीविका के लिए हमें चाहिए। ब्राह्मणों के पेट भरने के लिए, उनके तन ढँकने के लिए आपके ब्रह्मभोज का पैसा चाहिए। आप दस पैसे से इनकार न करें। आप हमारे भिक्षा के पात्रों को लात मत मारिये। ये ब्राह्मणों की आवश्यकता है। ऐसे कंजूस मत बनिये।

इस पैसे का हम क्या करेंगे? इन पैसों को हम इमारत बनाने में, हवन कराने में नहीं खर्च करेंगे। यह ज्ञानघट का पैसा विशुद्ध रूप से ब्राह्मणों के लिए खर्च होगा। ब्रह्मभोज का अर्थ है-हमें कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता पड़ेगी, हम इसके द्वारा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। हम चाहते हैं कि हमारी जितनी भी शाखाएँ हैं, उनमें एक चरणपीठ अवश्य बननी चाहिए। उसमें हमें दो कार्यकर्त्ता चाहिए। उनमें से एक आदमी साइकिल से सारे-के-सारे आस-पास के क्षेत्रों में भ्रमण करके विचार क्रान्ति का काम चलाए। दूसरा आदमी यहाँ मन्दिर में रहकर सारी गतिविधियों का संचालन करेगा। इस प्रकार हमें हजारों आदमी चाहिए। हमें उनके लिए पेट भरने एवं तन ढँकने के लिए पैसा चाहिए। अगर उनके छोटे बच्चे हैं, तो उन्हें फाँसी कैसे लगा देंगे। उसको तो भोजन देना ही पड़ेगा। हाँ, आगे वे बच्चा पैदा न करें, यह बात ठीक है, परन्तु अभी जो हैं, उनकी व्यवस्था तो बनानी ही पड़ेगी। उसकी पत्नी को भी देना होगा। अतः आप लोगों में से जिस किसी में भी संत की प्रवृत्ति, ब्राह्मण की प्रवृत्ति हो, वह जागें और आगे आयें।

लाभ उठाने का समय

हमें संत-ब्राह्मणों को जगाना है तथा इन लोगों के लिए ब्रह्मभोज की व्यवस्था बनानी है। यह सारा-का-सारा काम आपको करना है। आप इस

प्रकार के व्यक्तियों की तलाश करें। अगर आपका कुछ प्रभाव है या दबाव है, तो उसका भी उपयोग करें। आप जब विवाह-शादी में उसका उपयोग कर सकते हैं, चुनाव में खड़े होते हैं, तो उपयोग करते हैं, तो आपको इस कार्य के लिए भी अपने प्रभाव का दबाव का उपयोग करना चाहिए। अगर आपके पास ज्यादा है, तो ज्यादा देने का प्रयास कीजिए। हम इतने आदमी की व्यवस्था कैसे करेंगे? दस पैसा तो शुरुआत है। अगर सम्भव हो तो आप एक दिन का वेतन दीजिए। अगर बेकार की चीजें हैं, तो उन्हें हमें दीजिए। आपकी चीजों की भगवान् को आवश्यकता है। आप जो करेंगे, उसका लाभ-मुनाफा आपको अवश्य ही मिलेगा। अगर आप नहीं कर पायेंगे, अपना दिल चौड़ा नहीं कर पायेंगे, तो आप घाटे में रहेंगे। इस समय दिल चौड़ा करने का समय है, उदारता का समय है। यह बीजारोपण का वर्ष है। यह लाभ उठाने का वर्ष है।

यही इस गुरुपूर्णिमा पर महाकाल का संदेश है, जो हमारे जैसे टेपरिकार्डर के माध्यम से आपको सुनाया जा रहा है। हमें आशा एवं विश्वास है कि आप साहस भरा कदम उठाएँगे और भगवान् का काम करने में पीछे नहीं रहेंगे।

ॐ शान्तिः

युगसंधि महापुरश्चरण और संकट निवारण

(५ अगस्त, १९८० को शांतिकुंज परिसर में दिया प्रवचन)

समय की माँग, युग की पुकार

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

देवियो, भाइयो! बड़ी ही प्रसन्नता की बात है कि इस समय गायत्री महापुरश्चरण की साधना जगह-जगह पर चल रही है। अगर आप विचार करें, तो यह पायेंगे कि यह समय बहुत ही संकटकालीन है। इस समय इस धरती पर महामारी, युद्ध के बादल, वायु-प्रदूषण जैसे अनेक संकट घटाटोप की तरह छाये हुए हैं, जिससे महाप्रलय जैसी स्थिति बनती जा रही है। इस परिस्थिति को देखते हुए हमने आप लोगों को गायत्री महापुरश्चरण करने की सलाह दी थी और इस बात पर जोर डाला था कि आपको यह साधना करनी चाहिए। समय की माँग, समय की पुकार यह है कि इन दिनों वातावरण में जो अवांछनीय तत्त्वों का घुलन एवं मिलन हो गया है, उसे समय रहते निरस्त किया जाय, ताकि जनसाधारण की स्थिति ठीक हो सके एवं सभी को खुले वातावरण में साँस लेने का मौका मिल सके। आवश्यकता इस बात की है कि वातावरण को स्वच्छ बनाया जाय। आज का वातावरण बहुत दूषित हो चुका है। यह ऐसा है, जो बच्चों के मस्तिष्क के ऊपर सीधा प्रभाव डालता है। इसके प्रभाव से वे एक कमजोर आदमी की तरह बहकर कहीं-से-कहीं जा पहुँचते हैं। वातावरण का परिशोधन इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

मित्रो! इनदिनों जो परिस्थितियाँ हैं, वे अगले दिनों बहुत ही विपन्न एवं विषम होने वाली हैं। इसके कारण अनेक प्रलयंकारी घटनाएँ घटित होंगी, विनाश की लीला होगी। उस समय मनुष्य के ऊपर बहुत सारी मुसीबतें आयेंगी। चारों दिशाओं में आँधी-तूफान, पानी-बाढ़ आदि का प्रकोप दिखाई देगा। इसका कारण यह है कि इस समय नेचर-प्रकृति नाराज हो चुकी है। वह बदला लेना चाहती है। इस परिस्थिति में कोई भी आदमी सुरक्षित नहीं है। मौसम का भी कोई ठिकाना नहीं रहेगा। गर्मी में सर्दी और सर्दी में गर्मी महसूस होगी। नित्य नयी-नयी बीमारियाँ बढ़ेंगी। डॉक्टरों के पास भी इसका कोई इलाज नहीं होगा। भाई-भाई में, पति-पत्नी में भी विश्वास नहीं होगा। सामूहिक बलात्कार, चोरी, उठाईगीरी, अनाचार, मारकाट जैसे अपराध, जो कि रावण के

एवं कंस के जमाने में भी नहीं थे, उससे भी ज्यादा बढ़ेंगे। दहेज लोलुपों द्वारा बहुओं को जलाया जाएगा। लोगों में राग,द्वेष, अहंकार बढ़ता चला जाएगा। महत्वाकांक्षा लोगों के सिर पर चढ़कर बोलेगी।

भावी विपन्नताएँ

साथियो! हवा में जो जहर घुलता जा रहा है, वह साँस के साथ आँख, गर्दन, गले और छाती में जाएगा और लोग बीमार होते चले जाएँगे। यही स्थिति पानी की होगी। गंगा का पानी पहले साफ था। उसका हम सेवन करते थे। अब उसको नहीं पीने के लिए प्रचार किया जा रहा है, क्योंकि गंगाजल अब प्रदूषणों से भरता जा रहा है। अब धीरे-धीरे जमीन की गर्मी कम हो गयी है। हमने उसके गर्भ में समाई सारी चीजें, जैसे-लोहा, ताँबा, कोयला, डीजल, पेट्रोल सब निकाल लिया है। जमीन खोखली होती जा रही है। इससे जगह-जगह भूकंप आएँगे। फसल भी कम उत्पन्न होगी। आज विश्वभर में जो लाखों की संख्या में एटामिक हथियार बन रहे हैं, वे क्या बच्चों के खिलौने होंगे? नहीं, वे आग उगलेंगे। इससे मात्र तबाही आयेगी। सारी जगहों पर परमाणु युद्ध की होड़ लग जाएगी। इससे चारों ओर तबाही ही होगी।

हम सबका कर्त्तव्य

मित्रो! क्या इस प्रकार की विपन्नता की स्थिति में, ऐसी संकट-कालीन वेला में- जब आदमी मरने-मारने को तैयार है, जो आप उनको बचाने के लिए डॉक्टरों की तरह सेवा देने के लिए आगे नहीं आ सकते हैं? यह कैसी विडम्बना है, जो आप नौकरी के बाद का चार घंटे का समय भी लोकमंगल के लिए, समाज के लिए, इन्सान का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए नहीं दे सकते। इस प्रकार की जब भी परिस्थितियाँ आती हैं, तो लोग अपने ढंग से इसका समाधान करने के लिए आगे आते रहे और प्रयास करते रहे हैं।

आपने भागीरथ का नाम सुना होगा। एक बार धरती पर से पानी समाप्त हो गया था। खेतों के लिए पानी नहीं था। उस समय उन्होंने तप किया और गंगा को प्रसन्न किया। धरती पर पानी का आगमन हुआ। नदियों में, कुओं में, नहरों में पानी आ गया। फसलें लहलहा उठीं। जो लोग पानी के अभाव में मर रहे थे, वे जीवित हो गये।

दधीचि स्तर का पुरुषार्थ चाहिए

इस धरती पर एक बार वृत्तासुर नाम का राक्षस पैदा हुआ था। वह किसी के कन्ट्रोल में नहीं आ रहा था। उसके अत्याचार से सब त्राहि-त्राहि कर रहे थे। तब महर्षि दधीचि आगे आये और उन्होंने अपना अस्थिपंजर दान दे दिया, ताकि उससे वज्र-धनुष का निर्माण हो सके और वृत्तासुर को समाप्त किया जा सके। आज जो मिसाइले, अस्त्र-शस्त्र, परमाणुबम आपको दिखलाई पड़ रहे हैं, यह क्या वृत्तासुर से कम हैं? आज हमें अनेकों किस्म के हत्यारे दिखाई पड़ रहे हैं। जो मात्र हजार-पाँच सौ रुपये लेकर किसी को, भी मार डालने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

इस प्रकार की परिस्थितियों में हर व्यक्ति ने अपने स्तर पर, सामूहिक स्तर पर प्रयास किया है तथा समाज, देश संस्कृति को बचाया है। आज से पच्चीस सौ वर्ष पहले इसी प्रकार की परिस्थिति आयी थी, जब समाज के लोग त्राहि-त्राहि कर रहे थे। उस समय भगवान् बुद्ध ने परिव्राजकों,भिक्षु-भिक्षुणियों को एकत्रित करके एक सामूहिक साधना कराने का प्रयास किया था, ताकि वातावरण में सुधार आ सके। इसी प्रकार हर विषम समय में व्यक्तियों के द्वारा सामूहिक प्रयास किये गये हैं।

सामूहिक साधनात्मक प्रयास

युगसंधि की इस विषम वेला में भी इस मिशन के द्वारा इसी प्रकार का प्रयास 'युगसंधि महापुरश्चरण' के नाम से आरंभ किया गया है। यह प्रयास अद्भुत है। इसका चमत्कार आप लोगों को भविष्य में देखने को मिलेगा। हमने अपनी जिन्दगी में गायत्री के चौबीस महापुरश्चरण किए हैं। इसकी साधना एवं तप से प्राप्त बल के द्वारा ही हमने युग निर्माण जैसे कठिन कार्य को साहसपूर्वक पूर्ण करने की हिम्मत की है। हमने ध्वंस का समाधान और सृजन का परिपोषण करने के लिए गायत्री जयंती २३ जून, १९८० से बीस वर्ष का युगसंधि महापुरश्चरण आरंभ किया है। इसमें एक लाख नैष्ठिक उपासकों की भागीदारी रहेगी। इसके अलावा दस लाख अनुसाधक होंगे। यह वेला सन् १९८० से सन् २००० तक की होगी अर्थात् यह पुरश्चरण बीस साल का होगा। यह समय महापरिवर्तनों के साथ जुड़ा होने के कारण भारी उथल-पुथल का होगा। अंतिम बारह वर्ष तो भयंकर मारकाट वाले होंगे।

हमारा संकल्प एक लाख नैष्ठिक साधक बनाने का है। नैष्ठिक और सामान्यों को मिलाकर दैनिक जप चौबीस करोड़ हो जाएगा। नियमित रूप से इतनी साधना चल पड़ने से अन्तरिक्ष के परिशोधन एवं वातावरण के अनुकूलन में भारी सहायता मिलेगी। इससे भावी संभावित विपत्तियों के टल जाने की आशा की जा सकती है। उज्ज्वल भविष्य के नवसृजन में इस साधना की प्रतिक्रिया बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। इसमें जो साधक भाग लेंगे, उन्हें आशा से अधिक लाभ प्राप्त होगा। उनको आत्मकल्याण एवं लोककल्याण का दुहरा लाभ मिलता रहेगा। इसके बारे में जब हम चिन्तन करते हैं, तो हमारा मन गर्व से भर उठता है। हमें इस कार्य से काफी संतोष है।

एकाकी बनाम सामूहिक

एकाकी और सामूहिक प्रयत्नों की सफलता के स्तर में काफी अन्तर रहता है। अलग-अलग दस आदमी रहकर जितना काम करेंगे, उन दसों का सम्मिलित प्रयत्न कहीं अधिक सफलता प्रदान करेगा। इसलिए भारतवर्ष में हमेशा से तप एवं सामूहिक साधना का विशेष महत्त्व रहा है। प्राचीनकाल से लेकर अब तक हुए बहुत से कार्यक्रमों में इस प्रकार की साधना के द्वारा ही लाभ प्राप्त हुआ है। गायत्री महापुरश्चरण भी इसी शृंखला की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। इसमें चौबीस लाख परिजन भाग ले रहे हैं। अनेकों कार्यक्रम भी इस शृंखला में आयोजित हो रहे हैं, जिसका वातावरण पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। महात्मा गाँधी के आन्दोलन में भी इस प्रकार की सामूहिक साधना का कम महत्त्व नहीं रहा है। इसके द्वारा ही दिव्य वातावरण बना और हजारों लोग बलिवेदी पर अपनी कुर्बानी देने के लिए आगे आते चले गये। इस प्रकार की साधना में महर्षि रमण, रामकृष्ण परमहंस एवं अरविन्द की साधना का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिन्होंने एक दिव्य वातावरण बना दिया था।

इस समय की विकट परिस्थितियों और भयानक संभावनाओं को समय रहते रोका जाना चाहिए। इस कार्य के लिए यह समय उपयुक्त है तथा यह साधना, जो सामूहिक रूप से होने जा रही है, वह भी एक सही कदम है। छेद बन्द करने के साथ ही बर्तन में कुछ भरा भी जाना चाहिए। रोग-निवृत्ति ही पर्याप्त नहीं है, पोषण भी मिलना चाहिए। अपराधों को रोकना भी एक काम है, परन्तु इसके साथ ही समाज के अन्तर्गत रचनात्मक प्रयत्नों का तारतम्य जोड़ना भी आवश्यक है। वास्तव में इन दिनों यही दोहरी आवश्यकता युग की पुकार

बनकर सामने खड़ी है, जिसे पूरा करने के लिए जाग्रत आत्माओं को आगे आना चाहिए। ध्वंस को रोकने एवं सृजन को गति देने का काम सदा से इसी वर्ग का रहा है। भगवान् राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी जैसे सभी के कार्य इनके बलबूते ही पूरे होते रहे हैं।

पुरश्चरण के सत्परिणाम

प्राचीनकाल यानी सतयुग में प्रकृति का पूर्ण सहयोग मनुष्य को मिलता था। भूमि, बादल, पवन सभी चीजें मनुष्य को समृद्ध बनाने में कोई कमी नहीं होने देते थे। इन दिनों प्रकृति ने विक्षुब्ध होकर आक्रोश प्रकट करना आरंभ कर दिया है, जिसके कारण अनावृष्टि, अतिवृष्टि, महामारी, भूकम्प, तूफान आदि का विनाशकारी त्रास हर जगह चल पड़ा है। दिव्यदर्शियों का अनुमान है कि इन दिनों प्रारंभ किये जा रहे युगसंधि महापुरश्चरण के द्वारा ये अशुभ लक्षण समाप्त हो जाएँगे। इसके साथ-ही-साथ नवसृजन की गतिविधियों में तूफानी उभार प्रस्तुत होगा, जो उज्ज्वल भविष्य की संरचना में अतिमहत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करेगा।

पाँच संकल्प

हमारे नैष्ठिक साधक, जो इसमें हमारा सहयोग करना चाहते हैं, उन्हें इन पाँच संकल्पों को पूरा करना होगा। पहला है-हर दिन न्यूनतम पाँच माला गायत्री महामंत्र का जप। दूसरा-पन्द्रह मिनट की प्राणसंचार की ध्यान-धारणा। तीसरा-गुरुवार को बिना नमक का एक समय का भोजन, ब्रह्मचर्य का पालन तथा दो घंटे मौनव्रत का पालन। चौथा-महीने में कम-से-कम एक बार न्यूनतम चौबीस आहुतियों का यज्ञ-हवन। पाँचवाँ आश्विन एवं चैत्र नवरात्रियों में चौबीस-चौबीस हजार का गायत्री अनुष्ठान।

हमें विश्वास है कि हमारे परिजन इन नियमों-संकल्पों का पालन करते रहेंगे और नित्य नये साधकों को बनाने, उन्हें प्रोत्साहित करने का क्रम चलाते रहेंगे, तो इस आन्दोलन को बल मिलेगा तथा नवसृजन के, नवनिर्माण के इस कार्य को शीघ्र एवं सुगमता से पूर्ण करने में हमें सहयोग मिलेगा।

गायत्री मंत्र जप का फल

प्रज्ञावतार अर्थात् ऋतम्भरा-प्रज्ञा का आलोक-विस्तार अपने युग का अरुणोदय है, जिसके सहारे आत्मिक और भौतिक उभयपक्षीय समस्याओं का हल निकलने की पूरी संभावना है। गायत्री के तत्त्वदर्शन का आलोक जन-जन तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य है। हमने इस महामंत्र की साधना चौबीस साल तक

करके इसके लाभ के बारे में जाना है। वास्तव में इस महामंत्र के चौबीस अक्षरों में चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को सुसंस्कृत बनाने वाले सभी तत्त्व कूट-कूट कर भरे हैं। आपके द्वारा इस तरह की जानकारी अगर जन-जन तक पहुँचायी जा सकी, तो हमारा पूर्ण विश्वास है कि लोकचिन्तन और व्यवहार-प्रचलन में उस उत्कृष्टता का समावेश हो सकता है, जो युगविभीषिका से जूझने और उज्ज्वल भविष्य की संरचना में पूर्ण तथा सफल हो सके।

इस महान अभियान में जो सबसे आगे-आगे चलेंगे, उन्हें ज्यादा लाभ प्राप्त होगा। यह संकटकालीन परीक्षा की घड़ी है, जिसमें भगवान् राम के रीछ-वानरों से लेकर गीध-गिलहरी तक की भूमिका है। इसमें कृष्ण के ग्वाल-वालों की तरह हर एक को अपनी-अपनी लाठी का सहारा देकर गोवर्धन को उठाना है। इसके लिए हममें से प्रत्येक को साहसी होना चाहिए। संभावित कठिनाइयों से किसी को भी भयभीत या आतंकित होने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे अवसरों पर दूरदर्शिता और साहसिकता का अनुपात बढ़ाने से ही काम चलता है। समय रहते रोकथाम करने और कठिनाइयों से जूझने का साधन जुटाने में तत्पर होना ही ऐसे अवसरों पर बुद्धिमत्तापूर्ण होता है। इन दिनों ऐसी ही बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है, जो प्राणवानों के शौर्य-साहस को बढ़ाये और जन-जन की प्रखरता को जगाने के लिए काम आये।

सभी भागीदारी करें

मित्रो! आपको इस कार्य के लिए आगे आना चाहिए। यह महापुरश्चरण आपके लिए तथा समाज के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा। इसको सफल बनाने के लिए आपको प्रयास करना है। भगवान् से हम प्रार्थना करते हैं—जो भी इसमें भाग लें, उनको इसके असंख्य गुना लाभ मिलें। अतः आप सभी से यह निवेदन है कि आप सब इस कार्यक्रम में भाग लें तथा इसे सफल बनाने का प्रयास करें। प्रस्तुत युगसंधि महापुरश्चरण की व्यवस्था हमने गायत्री जयंती यानी २३ जून, १९८० से बनाई है। यह बीस वर्ष तक लगातार चलेगा। सन् २००० की गायत्री जयंती पर इसकी पूर्णाहुति होगी। इसके भागीदार मात्र जप संख्या ही नहीं पूरी करेंगे, वरन् उस प्रयोग में अधिकाधिक निष्ठा का भी समावेश करेंगे।

युगसंधि महापुरश्चरण के प्रत्येक भागीदार को शौकिया, मनमौजी, अस्तव्यस्त, भजन-पूजन करके मन बहलाने की स्थिति में नहीं रहना होगा,

वरन् जो कुछ भी थोड़ा या बहुत करना है, उसमें परिपूर्ण नैष्ठिकता का समावेश करना है। इसी मार्ग पर चलते हुए आत्मशक्ति का विकास एवं आत्मकल्याण का लक्ष्य पूरा होता है। यह युगसंधि महापुरश्चरण देखने में छोटा लग रहा है, परन्तु इसके द्वारा भविष्य में बहुत फायदा होने वाला है। अगर इतना लाभदायक न होता, तो हम आपसे इसमें भागीदार बनने के लिए भावभरा निवेदन नहीं करते। यह समय की माँग है कि वातावरण में अवांछनीयता का जो समावेश हो गया है, उसे समय रहते निरस्त किया जाय।

जब बच्चा घर में पैदा होने को होता है, तो एक तरफ घर में नवजात शिशु के लिए स्वागत की तैयारी चलती हैं, तो दूसरी ओर प्रसूता को प्रसव का भारी कष्ट सहना पड़ता है। युगपरिवर्तन की इन घड़ियों में भी इसी प्रकार की ही उथल-पुथल हो रही है। एक ओर ध्वंस चरम सीमा पर पहुँच चुका है, तो दूसरी तरफ नवसृजन की प्रक्रिया जन्म लेने वाली है। हमें इसी सृजन का काम करना है। इस समय मनुष्य की मन:स्थिति एवं परिस्थिति बिल्कुल बदल चुकी है। उनके विचार करने का ढंग गलत हो गया है। इसके कारण अनेकों प्रकार की विभीषिकाएँ नित्य उत्पन्न हो रही हैं तथा अपना ताण्डव नृत्य दिखाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रही हैं।

सूक्ष्म का परिशोधन अनिवार्य

इस समय की महती आवश्यकता यह है कि सूक्ष्म जगत के वातावरण में परिशोधन किया जाय। प्राचीनकाल में भी ऐसी ही परिस्थितियाँ थीं। लोग रावण के आतंक से त्राहि-त्राहि कर रहे थे। उस समय भगवान् राम ने अपनी शक्ति नियोजित की तथा जनसहयोग के माध्यम से रावण को निरस्त करके समाज में शांति स्थापित की थी, रामराज्य की स्थापना की थी। इसके बाद गुरु वशिष्ठ ने यह कहा कि इतना कार्य करने से ही काम नहीं चलेगा। उन दुष्टों ने तो वातावरण को भी दूषित कर दिया है, अत: उसके लिए स्वच्छ वातावरण बनाने की भी आवश्यकता है। गुरु वशिष्ठ के कहने पर भगवान् राम ने दस अश्वमेध यज्ञ किये। इस अश्वमेध यज्ञ की प्रक्रिया बड़ी ही महान है, इसमें लाखों लोग बैठकर साधना करते हैं, तप करते हैं, यज्ञ-हवन करते हैं तथा वातावरण को बदल डालते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भगवान् राम के रामराज्य की स्थापना रावण के समाप्त होने से नहीं हुई, वरन् दस अश्वमेध यज्ञों के कारण हुई। भगवान् श्रीकृष्ण के जमाने में भी वैसा ही हुआ। महाभारत के बाद ही

वातावरण का सुधार हो सका। यज्ञ एवं उपासना के द्वारा वातावरण में सुधार की बात बहुत प्राचीनकाल से ही चली आ रही है।

एक नयी दुनिया बनाना है

युगसंधि का यह विशेष पर्व है। ऐसे समय हजारों-लाखों वर्ष के बाद आते हैं। भगवान् को युगपरिवर्तन करना पड़ता है, परन्तु वे केवल आप जैसी आत्माओं को ही अपना माध्यम बनाते और प्रभावित करते हैं। निराकार ब्रह्म के लिए यह कठिन है कि वह स्वयं अपने व्यापक विराट् स्वरूप को मेटकर व्यक्तियों का स्वरूप बनाये और सामान्यजनों की तरह उतार-चढ़ाव से जूझने का उपक्रम अपनाये। शासनाध्यक्ष योजना बनाते हैं और निर्देश देते हैं। आज की परिस्थितियाँ ऐसी हैं जिससे भगवान् बहुत ही दुखी हैं। वह परिवर्तन चाहते हैं। एक समय महर्षि विश्वामित्र ने भी इसी तरह का परिश्रम किया था। शास्त्रों में वर्णन आता है कि उन्होंने एक नयी दुनिया बनाने के लिए घनघोर परिश्रम किया था। उस समय उन्हें अपने शिष्यों के लिए बहुत बड़ा अनुदान देना पड़ा था।

मित्रो! आध्यात्मिक अनुदानों की सामान्य परम्परा भी रही है और आपत्तिकालीन की अतिरिक्त व्यवस्था भी रही है। गुरु शिष्यों को, देवता भक्तों को समय-समय पर अनेकानेक अनुदान देते रहे हैं, परन्तु साथ-ही-साथ इसका भी ध्यान रखा जाता है कि उपलब्धकर्त्ता उसे संकीर्ण स्वार्थपरता में खर्च न करे। दैवीय वरदान दिव्य प्रयोजनों के लिए दिया जाता है। ऐसा ही अनुदान-वरदान विश्वामित्र ऋषि ने अपने शिष्यों को दिया था। इसी तरह रामकृष्ण परमहंस को जनकल्याण के लिए कुछ करना था। सो उनने विवेकानंद को ढूँढ़ निकाला और अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति के लिए जितनी शक्ति की आवश्यकता थी, उसे दे दी। इसी प्रकार समर्थ गुरु रामदास का अनुदान शिवाजी को, चाणक्य का चन्द्रगुप्त को मिला था।

आपको मालूम होना चाहिए कि यह युगसंधि का विशेष समय है। इस समय स्रष्टा को परिवर्तन करना है। इस युगसंधि की वेला में नवसृजन का उत्तरदायित्व सँभालने वाली दिव्य शक्तियों को इन दिनों ईश्वरीय प्रयोजनों के लिए जाग्रत आत्माओं की तलाश है। उन्हें जितना लाभ कठोर तपश्चर्या, साधना की कठिन परिस्थितियों को पार करके मिल सकता था, उतना लाभ इस विशिष्ट अवसर पर मिलने वाला है। इसे दैवी अनुदान कहा जा सकता है। इन दिनों युगसंधि की इस उपासना के माध्यम से उच्चस्तरीय अनुदान वितरण

ऋतम्भरा-प्रज्ञा द्वारा किया जा रहा है। जिस प्रकार दुर्भिक्ष आदि संकटकालीन परिस्थितियों में सरकार कुआँ खोदने, उद्योग खड़ा करने, नहर बनाने जैसे कामों के लिए विशेष रूप से धन-राशि देती है, उसी प्रकार इन दिनों ऐसे असंख्य संस्कारवान आत्माओं को दिव्य अनुदान मिलने वाला है, जो किसी जमाने में राम, कृष्ण, बुद्ध, गाँधी के सहयोगियों को प्राप्त हुआ था।

इस धरती पर जब कभी भी अनीति-अत्याचार की बढ़ोत्तरी होती है, तो इसी प्रकार का क्रम चलता है और शालीनता, सज्जनता लाने का प्रयास किया जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण के जमाने में भी ऐसा ही हुआ था। जब कभी ऐसे संकटकालीन समय आते हैं, तो बहुत-से लोग ऋषि-चरणों में अपना सब कुछ अर्पण कर देते हैं। जैसे विश्वामित्र के चरणों में राजा हरिश्चन्द्र, भगवान् बुद्ध के चरणों में राजा अशोक का समर्पण हुआ था और पूरी शक्ति से उन्होंने सहयोग दिया था। भगवान् बुद्ध के समय में जब अराजकता बढ़ी थी, तो उन्होंने अपने शिष्यों को परिव्रज्या का पाठ पढ़ाकर इसके निराकरण के लिए उन्हें देश-विदेशों में भेजा था। इस प्रकार वातावरण को संशोधित करने एवं स्वच्छ वातावरण बनाने में भगवान् बुद्ध का तप, उनके शिष्यों का तप बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। उसमें हर्षवर्धन एवं अशोक जैसे लोगों ने पूरा सहयोग दिया।

परिस्थितियाँ बदलेगा यह सामूहिक अनुष्ठान

पिछले दिनों युद्धों के कारण कितने लोग मारे गये, कितना वातावरण गंदा हो गया। इस परिस्थिति में वातावरण के संशोधन में युगसंधि महापुरश्चरण द्वारा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न होगी। युगसंधि में इन दिनों हिमालय के आध्यात्मिक ध्रुव केन्द्र से ऐसी दिव्य क्षमताओं का-प्राणचेतना का प्रसारविस्तार हो रहा है, जिन्हें ग्रहण-धारण करके असंख्य मनुष्यों का कल्याण हो सकेगा। ऋषि-मुनियों से लेकर लोकसेवी महामानव तक यही कार्य करते रहे हैं। दैवीशक्तियों का अनुदान वे जन-जन तक पहुँचाने में लगे रहे हैं। इससे ही भगवान् की इच्छा पूरी हुई है। और जन-जन का हित हुआ है। यही कार्य युगसंधि महापुरश्चरण के अन्तर्गत हमारे नैष्ठिक साधकों का होगा।

श्रेय लेने की बेला

संकटकालीन परिस्थिति आने पर समाजसेवी, डॉक्टर अपना-अपना काम करते हैं, किन्तु हम एक बात बताना चाहते हैं कि ऐसी परिस्थिति में अध्यात्मवादी आदमी को भी हाथ-पर-हाथ रखकर नहीं बैठना चाहिए। इस

प्रकार की साधना में यद्यपि पुरुषार्थ ही प्रमुख है। इसके द्वारा ही वातावरण का परिष्कार संभव होगा। अंगद, हनुमान्, नल-नील, अर्जुन, शिवाजी आदि को यदि पराक्रम करने का मौका न मिला होता, तो सभी लोग इसी प्रकार का सामान्य जीवन जीने वाले कहलाते। युग-परिवर्तन एवं नवनिर्माण के कार्य का श्रेय उनको नहीं मिलता। ग्वालबालों को श्रेय इसलिए मिला कि भगवान् श्रीकृष्ण ने गोवर्धन उठाने की योजना बनायी और ग्वाल-वालों ने उसमें श्रीकृष्ण को अपनी-अपनी लाठी लगाकर थोड़ा-सा सहयोग दिया और कार्य पूरा हो गया। वे श्रेय के भागीदर बन गये। इस तरह का अवसर आने पर हर किसी को लोकमंगल के लिए, जनजागरण के लिए आगे आकर कार्य करने का प्रयत्न करना चाहिए।

मित्रो! आज आपको जनजागरण के लिए, युगधर्म निवाहने के लिए पुकारा गया है। अतः आपको इस कार्य के लिए आगे आकर और बढ़-चढ़कर कार्य करना चाहिए। वातावरण खराब हो जाता है, तो उसका असर पड़ता है। वातावरण का प्रभाव, परिस्थितियों का प्रभाव क्या होता है, इसे सभी लोग जानते हैं। आज ऐसी परिस्थितियाँ आ गयी हैं कि इसने असंख्य मनुष्यों को दुष्प्रवृत्तियों की ओर, दुश्चिन्तन की ओर धकेल दिया है। इसके कारण कहीं भूकम्प, बाढ़, महामारी तो कहीं अनाचार, अत्याचार पान की विभीषिका अपना पसारा फैला रही हैं। अब समय आ गया है कि आपको रचनात्मक कार्यों की ओर चलना है। यह युगसंधि महापुरश्चरण इसी प्रकार का कार्य है। जिसमें आप सभी लोग शामिल हैं।

सामूहिकता का माहात्म्य

सामूहिकता का लाभ सभी जानते हैं। प्राचीनकाल से लेकर अब तक सभी बड़े-बड़े काम सामूहिकता के द्वारा हल होते रहे हैं। प्राचीनकाल में सभी ऋषियों की सामूहिकता अर्थात् बूँद-बूँद रक्त के द्वारा माता सीता की उत्पत्ति हुई थी। यही सीता भगवान् राम से कहीं ज्यादा असुरता को समाप्त करने में तथा रामराज्य की स्थापना करने में सफल हुईं। सीता क्या थी ? ऋषियों की सामूहिकता का प्रतीक थी। दुर्गा का अवतार क्या था? देवताओं की सामूहिक शक्ति को इकट्ठा करके प्रजापति ब्रह्मा ने दुर्गा का अवतरण कराया था। **श्रेष्ठ कामों के लिए अच्छे लोगों का सहयोग लेने की प्राचीनकाल से ही पद्धति रही है।** भगवान् श्रीकृष्ण का गोवर्धन उठाना तथा भगवान् राम का समुद्र में पुल बाँधना,

यह सब सामूहिकता का ही प्रतीक है। आज से पच्चीस सौ वर्ष पूर्व भगवान् बुद्ध ने अपने भिक्षु-भिक्षुणियों को इसी प्रकार की सामूहिक सेवा-साधना करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया था। हमारे सामने महात्मा गाँधी आये। उन्होंने भी इस देश को आजाद कराने के लिए सामूहिक शक्ति का ही उपयोग किया। इसके द्वारा ही स्वराज्य मिलना संभव हो सका था।

महानतम प्रयास

आज का यह युगसंधि महापुरश्चरण भी इसी तरह का एक महत्त्वपूर्ण सामूहिक प्रयास है। आपको यह भलीभाँति समझ लेना चाहिए कि यह इस युग का महानतम प्रयास है। गायत्री उपासना के द्वारा ही हमने सारा चमत्कार पाया है। हम देखना चाहते हैं कि आप लोग इसमें कितनी श्रद्धा-निष्ठा के साथ काम करते हैं। हमें विश्वास है कि यह कार्य बहुत व्यापक स्तर पर बढ़ने वाला है। हमें यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि यह कार्य बढ़ेगा। अनेक कार्यक्रम होंगे। इससे वातावरण में अप्रत्याशित रूप से बदलाव आयेगा। नयी पीढ़ियाँ बदलती चली जाएँगी। गाँधीजी ने स्वतंत्रता आन्दोलन को तीव्र करने के लिए नमक सत्याग्रह चलाया था। इसमें जो लोग आगे रहे, उन्हें श्रेय मिला। नवनिर्माण के इस कार्य के अन्तर्गत भी जो आगे रहेंगे तथा अपनी भागीदारी देंगे, उन्हें भी श्रेय, सम्मान व सहयोग अधिकाधिक मिलेगा। आपका जो श्रम, भावना, धन इसमें लगा है, वह हजार गुना होकर वापस होगा और आप धन्य हो जाएँगे। यह जो महापुरचरश्चरण चल रहा है, वह न केवल भारत के लिए, वरन् सारे विश्व के लिए, मनुष्य जाति के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहेगा। अगले दिनों युगसृजन में गायत्री महाविद्या को युग-शक्ति का रूप धारण करना है। अगले ही दिनों उसे विश्वदर्शन का, अध्यात्म का केन्द्र बिन्दु बनने का अवसर मिलेगा। अतः आप सब लोग जो इस कार्य में सहयोग देंगे, हमें काफी प्रसन्नता होगी। हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि आप में, आपके घर-परिवार में सुख-शांति आवे, प्रगति की ओर बढ़ें तथा आपका भविष्य उज्ज्वल हो।

आज की बात समाप्त।

ॐ शान्ति

जीवन को धन्य बनाने का महानतम अवसर

(सितम्बर, १९८० में शान्तिकुञ्ज में दिया गया उद्बोधन)

आगामी समय अतिविशिष्ठ

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

देवियो, भाइयो! यह प्रज्ञावतार के अवतरण का समय है। आने वाले वर्ष बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं । इन बीस वर्षों में घोर परिवर्तन की तैयारियाँ महाकाल ने कर ली हैं। ये बीस वर्ष भगवान् के द्वारा गलाई एवं ढलाई के हैं। दुनिया इसे याद करेगी कि ऐसा कौन-सा समय आया जिसमें इतने महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो गए। इसमें आप देखेंगे कि पुराने जमाने की अवांछनीयताएँ समाप्त हो जाएँगी तथा नये जमाने की सुखद संभावनाएँ लोगों को दिखायी पड़ने लगेंगी। मनुष्य का सुख-शान्ति के साथ जीवन जीना संभव हो सकेगा। हमने इस बात को युगशक्ति गायत्री में, अखण्ड ज्योति में छाप दिया है। इस समय हर धर्मवेत्ता तथा हर महान भविष्यवक्ता ने एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया है कि अगले पैंतीस वर्ष बड़े ही उथल-पुथल के होंगे।

इस समय अपनी पृथ्वी के संतुलन को ठीक करने के लिए भगवान् ने अवतार लेने का निश्चय किया है। ये चौबीसवाँ अवतार अन्तिम अवतार होगा। चौबीस अक्षर गायत्री मंत्र के होते हैं। यह प्रज्ञावतार ही गायत्री का अवतार होगा, जो इस शतक के अंत तक अपना काम पूरा कर लेगा और नया युग लाएगा। इसकी तैयारियाँ हो चुकी हैं। ये जो भविष्यवाणियाँ हैं, इन्हें आप माखौल न मानें। ये शब्द स्वयं महाकाल ने-भगवान् ने कहे हैं, ऐसा मानना चाहिए।

अवतार की वास्तविक शक्ति

ऐसे समय में आप सभी जाग्रत आत्माओं को केवल हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं है, बल्कि विशेष काम पूरा करना है। भगवान् का अवतार तो होता है, परन्तु वह निराकार होता है। उनकी वास्तविक शक्ति जाग्रत आत्मा होती है, जो भगवान् का संदेश प्राप्त करके अपना रोल अदा करती है। जो भी भगवान् हुए हैं, वे साकार लोगों के माध्यम से ही अपना काम करते हैं, क्योंकि निराकार अपना काम स्वयं नहीं कर सकता। वह तो प्रेरणा, प्रकाश, शक्ति, मार्गदर्शन कर सकता है। काम तो साकार व्यक्तित्व-जो महान आत्मा, जाग्रत आत्मा होते हैं, उन्हें ही पूरा करना होता है। वास्तव में उन्हें साकार यानि आकार बनाकर ही वह काम करना पड़ता है। प्राण निराकार है, परन्तु उसका आधार साकार ही होता

है। इसीलिए उसे शरीर धारण करके अपना कार्य पूरा करना पड़ता है। ठीक इसी प्रकार प्रज्ञावतार अपनी जो गतिविधियाँ चलाने जा रहे हैं, उसमें अनीति, अत्याचार से लड़ना है। उसके लिए उन्होंने कुछ माध्यम-साधन बनाया है या यह कह सकते हैं कि उन्होंने कुछ माध्यम चुना है, तो वह जागृत आत्माएँ हैं।

आपका सौभाग्य

वास्तव में भगवान् के कार्य में जिन्हें हाथ बँटाने का मौका मिल सके, उन्हें हम बड़ा सौभाग्यशाली मानते हैं। वे स्वयं भी इस बात को अपना सौभाग्य मानेंगे। इतना ही नहीं सारी दुनिया उनको याद करती रहेगी कि हमारे बुजुर्ग, हमारे बाप-दादे इतने महान तथा सौभाग्यशाली थे, जिन्होंने आगे बढ़कर भगवान् का हाथ बँटाया था तथा उनके कन्धे से कन्धा लगाया था। ये बातें आने वाली पीढ़ियाँ गर्व से कहेंगी। आज तो सब चादर तानकर सोये हुए हैं। आज किस प्रकार की स्थिति हो गयी है? चारों तरफ अंधकार ही अंधकार दिखाई पड़ रहा है। आज जो व्यक्ति प्रतिभाशाली हैं तथा आत्मबल से सम्पन्न हैं, उनमें से भी अधिकांश दो बातें ही सोचते हैं कि हमें पेट भरना चाहिए तथा कीड़े-मकोड़े की तरह औलाद पैदा करनी चाहिए। इसके अलावा उनको किसी बात की चिन्ता नहीं है। न तो वे परमार्थ की बात सोचते हैं, न आत्मा की बाबत सोचते हैं, वे केवल अपने स्वार्थ में ही संलग्न हैं।

इस विषम परिस्थिति में युग-निर्माण परिवार के व्यक्तियों को महाकाल ने बड़े जतन से ढूँढ-खोजकर निकाला है। आप सभी बड़े ही महत्त्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली हैं। इस समय कुछ खास जिम्मेदारियों के लिए आपको महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। आपको भगवान् के कार्य में भागीदारी निभानी है। आपको ऐसा सुन्दर मौका मिला है। वास्तव में आपको यह तथ्य समझना चाहिए कि आप भगवान् के विशेष आदमी हैं तथा भगवान् के विशेष काम के लिए आपको धरती पर अवतरित होना पड़ा है। आप धरती पर केवल बच्चे पैदा करने और पेट भरने के लिए नहीं आए हैं, बल्कि आज की इस विषम परिस्थितियों को बदलने में भगवान् की मदद करने के लिए आए हैं। इस बात को फिर से समझ लीजिए।

भगवान् का प्यार किस शर्त पर?

आपका यह ख्याल है कि भगवान् अगर किसी पर प्रसन्न होते हैं, तो उसे बहुत सारी धन-सम्पत्ति देते हैं तथा औलाद देते हैं। यह बिल्कुल गलत

और घटिया ख्याल है, भगवान के बारे में आपका। आपको इस ख्याल को बदलना चाहिए। वास्तविकता ये है कि जो भगवान् के नजदीकी होते हैं, उन्हें धन-सम्पत्ति एवं औलाद से अलग कर दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में ही उनके द्वारा यह सम्भव हुआ है कि वे भगवान् का काम करने के लिए अपना साहस एकत्रित कर सकें और श्रेय भी प्राप्त कर सकें। इससे कम कीमत पर किसी को भी श्रेय नहीं मिला है। आप चाहेंगे कि आपको धन-सम्पत्ति भी मिले, औलाद भी मिले तथा भगवान् का प्यार भी मिले, तो यह कदापि संभव नहीं है। आपको एक चीज को अवश्य छोड़ना पड़े। तभी आप भगवान् के प्यार, आशीर्वाद, अनुदान के भागीदार हो सकते हैं।

युगसंधि में आपके कर्त्तव्य

मित्रो, ऐसे समय में जिसे हम युग-संधि कहते हैं, प्रभातकाल की वेला तथा स्वर्णिम् सौभाग्य की वेला कहते हैं। इस महान समय में आप लोगों को केवल आवश्यक कार्य ही करने चाहिए। इस खास समय में आप लोगों को अपनी-अपनी हथकड़ियों को थोड़ा ढीला कर देना चाहिए। इसका मतलब इस समय में सम्पत्ति इकट्ठा करने की प्रवृत्ति तथा औलाद पैदा करने की प्रवृत्ति को बन्द कर देना चाहिए। इस समय आपको अपने मन को थोड़ा संयमित कर लेना चाहिए। हमारी उनसे प्रार्थना है, जो जागरूक हैं। जो सोये हैं, उनसे हम क्या कह सकते हैं, परन्तु जो जागरूक हैं, उन्हीं से हम कुछ कह सकते हैं। आप जागरूक हैं, इसलिए हम आपसे कुछ कह रहे हैं। वास्तव में इस समय हर क्षेत्र के लोग सोये पड़े हैं। इससे अध्यात्म का क्षेत्र भी अछूता नहीं है। आज अध्यात्म क्षेत्र में वे ही व्यक्ति हैं, जो थोड़ा बहुत पूजा-पाठ करने के बाद अपनी सभी मनोकामनाएँ पूरी कराना चाहते हैं। ये सारे के सारे व्यक्ति सोये हुए हैं। ये चाहे सेठ हों या मंत्री या अध्यापक, सभी सोये हुए हैं। उनसे कुछ कहा भी जाए, तो उनकी आत्मा के ऊपर कोई असर नहीं पड़ेगा। ये इस कान से सुनकर उस कान से निकाल देंगे। इनको तो हम पूजा के क्षेत्र में भी सोये हुए कहते हैं, अध्यात्म के क्षेत्र में सोये हुए कहते हैं।

युग प्रहरी हैं आप

आज प्रज्ञावतार को ऐसे जागरूकों की आवश्यकता है, जो दुनिया के कोने-कोने में जाकर सोये हुए लोगों को जगा सकें, उनके मन-प्राणों को झकझोर सकें। उनमें साहस और हिम्मत पैदा कर सकें। हम आपको देखकर यह बतला सकते हैं कि आप जागरूक व्यक्ति हैं। युगसंधि के समय पर जो

महत्त्वपूर्ण कामों में हनुमान, अंगद और अर्जुन जैसा सहयोग कर सकते हैं तथा भगवान् के उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं। हम आप लोगों को सौभाग्यवान मानते हैं। हम आप लोगों को युगप्रहरी मानते हैं। हम आपको भगवान् का सहयोगी-सहायक मानते हैं। हम आप लोगों से इस समय एक ही निवेदन करना चाहते हैं कि आप लोगों को इस समय उन बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, न ही वैसा करना चाहिए, जिन बातों पर सामान्य लोग ध्यान देते हैं और जो करते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि आपने पिछले हजारों वर्षों में इसी प्रकार कई बार भगवान् का काम किया है। अब आप चाहें, तो पुनः हजार वर्षों तक अपना जीवन धन्य कर सकते हैं तथा महामानव बनने का श्रेय एवं सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।

हम एक बात पुनः आपसे कहना चाहते हैं कि फिर ऐसा कोई समय नहीं आयेगा, जिसमें आपको औलाद या धन से वंचित रहना पड़े, परन्तु अभी इस जन्म में इन दोनों की बावत न सोचें। आपको भगवान् के इस काम के अन्तर्गत रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता सदा पूरी होती रहेगी, इसके लिए किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। भगवान् के काम में सहयोग करने, हाथ बँटाने से आपको दोहरा लाभ मिलता रहेगा-एक लोकमंगल का, दूसरा प्रभु समर्पित जीवन जीने का। मित्रो, हमारी इतनी सी बात अगर आप मान लें कि आप अपने चिन्तन से औलाद एवं धन के प्रति थोड़ा विराम लगा दें, तो मजा आ जाएगा और आपका जीवन सार्थक हो जाएगा। समय की माँग को समझें और जीवन को धन्य बनाने का यह सुयोग हाथ से न जाने दें।

इस समय मात्र भगवान् का काम करें

आप यह मान्यता बनाकर चलें कि इस समय भगवान् का काम करने की आपको नितांत आवश्यकता है। इस काम के प्रति इस समय आपको भी प्यास होनी चाहिए। भगवान् को भी अपने काम कराने की प्यास है। आपसे भगवान् कुछ चाहते हैं। आपको भी भगवान् की आवश्यकता को पूरा करने के लिए साहस एवं हिम्मत के साथ आगे बढ़ना चाहिए। अगले दिनों में धन का संग्रह कोई नहीं कर सकेगा, क्योंकि आने वाले दिनों में धन के वितरण पर लोग जोर देंगे। शासन भी अगले दिनों आपको कुछ जमा नहीं करने देगा, अतः आप मालदार बनने का विचार छोड़ दें। आप अगर जमाखोरी का विचार छोड़ देंगे, तो इसमें कुछ हर्ज नहीं है। अगर आप पेट भरने-गुजारे भर की बात सोचें, तो कुछ हर्ज नहीं है। आप संतान के लिए धन जमा करने, उनके लिए व्यवस्था

बनाने की चिन्ता छोड़ दें। उन्हें उनके ढंग से जीने दें। संसार में जो आया है, वह अपना भाग्य लेकर आता है।

जार्ज वाशिंगटन अपने भाग्य से ही महान बने थे। उनके खानदान वालों ने उन्हें महान नहीं बनाया था। दूसरे और भी मनुष्य जो गरीब खानदान में पैदा हुए, उनके माँ-बाप ने उनके लिए दौलत नहीं छोड़ी थी, परन्तु वे अपने पुरुषार्थ से-हिम्मत से आगे बढ़े, धनवान बने। इस समय औलाद के लिए पैसे-धन-दौलत छोड़कर जाने की बात न सोचें। उन्हें श्रेष्ठ संस्कार दें। औलाद के पास धन नहीं, तो कोई बात नहीं है। आपके पास भी धन नहीं है, तो क्या हुआ? इस महत्त्वपूर्ण समय में आप प्रज्ञावतार का काम तो कर सकते हैं।

फोकट में किसी को नहीं मिला

यह युगसन्धि का पहला वर्ष है। इस समय हर प्रज्ञापरिवार को तीन उत्तरदायित्व सौंपे गए हैं। आपको भी तीन उत्तरदायित्वों को पूरा करना चाहिए। आपको इस समय पुरुषार्थ करना चाहिए तथा वरदान पाना चाहिए। कभी भी किसी को फोकट में कुछ नहीं मिला है। जब से यह इतिहास बना, तब से अब तक मुफ्त में किसी को कुछ नहीं मिला है। स्वामी विवेकानन्द ने, शिवाजी ने भी कीमत चुकाई तब कुछ पाया। आप फोकट के फेर में है। मित्रो, मिट्टी भी फोकट में नहीं मिलती। आप तो कीमत चुकाना भी नहीं चाहते। यह कीमत चुकाने का वक्त है। आप कीमत चुकाने के लिए आगे आइए न। आप बीज बोने का प्रयास तो कीजिए। अगर आप बीज नहीं बोएँगे, तो फसल कैसे काटेंगे। आप कहते हैं कि गुरुजी हम तो भजन करते हैं। भजन का हम क्या करें? केवल भजन से कोई बात नहीं बनने वाली है। भजन के साथ-साथ पुरुषार्थ भी करें। जितने संत, महामानव इस धरती पर हुए हैं, उन्होंने पुरुषार्थ किया है। तब फल पाया है। आप इस तरह पड़े रहेंगे तथा तीन माला का जप करते रहेंगे तो आप घाटे में रहेंगे। आपको कुछ लाभ नहीं मिलने वाला है। आप वरदान माँगते रहिए—कोई भी देने वाला नहीं है।

हिमालय के, महाकाल के तीन आदेश

हमने पुरुषार्थ किया है। हाँ, हमने भजन भी किया है, लेकिन भजन से कुछ नहीं होता। आप में से कोई भी ऐसा आदमी नहीं है, जो पुरुषार्थ नहीं कर सकता है। आप कहते हैं कि हमारे पास क्या है, हम पुरुषार्थ कैसे करें? हम पूछते हैं कि अगर आपके पास धन-दौलत नहीं है, तो अक्ल तो है। आपके पास समय तो है, श्रम तो है। लगाइए न इन्हें भगवान् के काम में। समय की माँग

को देखते हुए हम फिर से आप लोगों से यह प्रार्थना करते हैं कि यह महत्त्वपूर्ण समय है। आपको अपनी अक्ल, समय, श्रम, धन जो भी हो उसे भगवान् के खाते में जमा करने का प्रयास करना चाहिए। इस समय महाकाल, जो हिमालय में रहते हैं, उनका तीन कार्यों को करने का आदेश है। इन कामों के द्वारा आप घाटे में नहीं रहेंगे। ये बातें आपको अवश्य माननी चाहिए।

पहला-युगसंधि महापुरश्चरण की भागीदारी अवश्य निभाने का प्रयास करना चाहिए। नैष्ठिक उपासना-पाँच माला गायत्री मंत्र का जप करें। इससे आपका आत्मबल बढ़ेगा। इसमें अवश्य भाग लें। इसमें आत्म-कल्याण और विश्व कल्याण का भाव जुड़ा है।

दूसरा-हर गाँव में, हर शहर में प्रज्ञावतार का संदेश घर-घर तक पहुँचाने का आपको प्रयास करना चाहिए। इस बार हम सामूहिक कार्यक्रम करना चाहते हैं। इसके लिए हम चाहते हैं कि कुछ लोग परिव्राजक के रूप में युग-चेतना के संदेश को पूरे देश में पहुंचाने का प्रयास करें। वे समयदान दें और साधु-ब्राह्मण का जीवन जिए।

तीसरा-अब व्यक्ति एकाकी काम न करे, बल्कि सब मिलजुल कर काम करेंगे। हम चाहते हैं कि हर गाँव में एक चरणपीठ, ग्रामतीर्थ स्थापित हो जाए और सभी लोग वहाँ इकट्ठे हों तथा मिलजुलकर आगे के काम की-प्रगति की योजना बनायी जाए। जिस तरह एम.एल.ए. अपने क्षेत्र के विकास की योजना बनाते हैं, उसी प्रकार चरणपीठ वाले अपने-अपने गाँव के विकास की योजना बनाएँ और उसे चरितार्थ करें।

देवी का प्रतीक स्थापित हो गाँव-गाँव

हमने शक्तिपीठ के लिए अनुरोध किया था। वह वजन हमने उठा लिया है। प्रज्ञापीठों का भी काम, उत्तरदायित्व पूरा होने वाला है, परन्तु हम उससे ज्यादा महत्त्व चरणपीठ को देना चाहते हैं, जो हर गाँव में हो। यह हमारे प्रज्ञावतार का प्रतीक हो-देवी का प्रतीक हो। इस वर्ष हमें हर गाँव में जाने की इच्छा है। अत: आप अपने-अपने मित्रों, रिश्तेदारों को बोल कर हर गाँव में एक चरणपीठ बनाने का प्रयास करें। इस चरणपीठ का काम कोई महँगा नहीं है। आप इसे सहज में पूरा कर सकते हैं। एक विवाह-शादी में कम से कम खर्च ६००० रुपये से कम नहीं होता है। चरणपीठ में तो उतना भी नहीं लगने वाला है। आप यह मानकर चलें कि आपको भगवान् ने एक संतान चरणपीठ के रूप में दी है। आप अपना दिल चौड़ा तो कर लीजिए, हिम्मत तो कर लीजिए,

इसके बाद आपका काम सरलता से हो जाएगा। आपको मालूम नहीं है मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के एक भील ने प्रज्ञापीठ के लिए अपनी जमीन दे दी। उसकी व्यवस्था एवं परिव्राजक खर्च के लिए एक और भी खेत दान कर दिया। आप क्या उस भील से भी गए-गुजरे हैं।

चरणपीठ की योजना

आप भगवान् के भक्त हैं, प्रज्ञापुत्र हैं, फिर आपकी हिम्मत इतनी कम कैसे है? आप चाहें तो किसी के पास हाथ पसारने की आवश्यकता नहीं है। आप तो एक बीघा जमीन बेचकर इस काम को कर सकते हैं। भगवान् के भक्त इतने कंजूस एवं कायर? यह देखकर तो हमें आश्चर्य होता है। आपको इतना कृपण नहीं होना चाहिए। आप दूसरों पर दोष लगाते हैं कि अमुक ने समय नहीं दिया, अमुक ने पैसा नहीं दिया। आप अपने को तो पहले तैयार करें। हम आपको कह रहे हैं। इतना ही नहीं सबसे पहले आपको आगे बढ़कर काम करना चाहिए। आप स्वयं २०० रुपये देकर पहल कीजिए, फिर देखिए चरणपीठ बनता है या नहीं। आप तो लोगों से पहले चार आना, रुपया माँगते हैं। आप अगर स्वयं पहल करेंगे, तो देखेंगे कि आप घाटे में नहीं रहेंगे। आप अपने से काम शुरू करें।

हमने ६००० रुपये में चरणपीठ बनाने की एक योजना दी है। उसमें चार चीजें हैं। इसमें कार्यकर्त्ता निवास नितान्त आवश्यक है। मंदिर बनाकर ताला लगा देंगे, तो कैसे काम चलेगा? इसलिए एक कार्यकर्त्ता निवास अवश्य बनाना होगा। दूसरा एक हॉल बना दिया जाए, जिसमें हवन, सत्संग के कार्य के साथ-साथ रात्रि को कथा-गोष्ठी, योग शिविर प्रशिक्षण भी चल सकें। उसी में देवमन्दिर भी होना चाहिए, क्योंकि देवता नहीं होंगे, तो श्रद्धा कहाँ से जुड़ेगी। ये सभी चीजें ६००० रुपये में शामिल हैं। आपको अगर गायत्री माता की मूर्ति लेनी है, तो १००० रुपये का खर्च अतिरिक्त हो जाएगा। उस परिस्थिति में ७००० रुपये खर्च होगा। आप बड़ी मूर्ति नहीं लगा सकते, तो छोटी लगा दें। इसमें एक पुस्तकालय भी शामिल है। इस प्रकार ६००० रुपये का त्याग आप सभी को मिलजुल कर करना चाहिए। इसके अलावा जहाँ बड़ी शक्तिपीठें बन रही हैं वहाँ भी आपको सहयोग देना चाहिए। उनके बन जाने के बाद वहाँ से कार्यकर्त्ता आपको मिलेंगे, वहाँ से सहयोग और मार्गदर्शन मिलेगा। आप सभी उन्हें सहयोग करें, ताकि वे जल्दी बन जाएँ और मिशन का उद्देश्य पूरा हो सके। हमारी गुजरात में पाँच सौ-छह सौ शाखाएँ हैं। हम चाहते हैं कि कम से कम

२४० चरणपीठें वहाँ अवश्य बनें। ६००० रुपये कोई बड़ी बात नहीं है। इतना खर्च करके आप इसे बना डालिए। हम आपका ब्याज सहित रुपया वापस कर देंगे।

जो देगा वह पाएगा

हमने जो कुछ भी समाज को दिया है, उससे अधिक पा लिया है। प्राचीनकाल में भी जिन लोगों ने जो कुछ दिया, उससे ज्यादा पाया था। आप यकीन रखें, आप भी जितना लगाएँगे, उससे अधिक पाएँगे। आप ज्यादा देने के लिए पात्रता साबित कीजिए। आप दे नहीं पाएँगे, तो हम आपकी सहायता कैसे कर सकते हैं। आप कृपण बने रहें, तो हम क्या करेंगे? आपको महत्त्वपूर्ण श्रेय किस प्रकार दे पाएँगे। आप आगे बढ़िए और इस चरणपीठ के कार्य को पूरा कीजिए। आपके क्षेत्र में जहाँ कहीं भी शक्तिपीठें बन रही हैं, उन्हें पूरा कराने का प्रयास कीजिए।

तीसरी बात यह है कि मात्र इतने से काम नहीं चलेगा, बल्कि आपको जनशक्ति को भी जगाना होगा। इसके बिना युग-परिवर्तन की भूमिका सम्भव नहीं होगी। आदमी की भी इसमें नितान्त आवश्यकता है। आपने मशीन तो बना दी, परन्तु कारीगर न हो, तो मशीन चलेगी कैसे? हमारे मिशन के साथ जनशक्ति की भी आवश्यकता है। इतने बड़े समाज की माँग केवल शान्तिकुंज से कहाँ पूरी हो सकती है। आप लोगों में से हर आदमी से प्रार्थना है कि आपके अन्दर जो चाण्डाल एवं बनिया छिपा हुआ है, उसे निकालिए। चाण्डाल आपको अच्छे काम नहीं करने देता है। वह हमेशा आपको बुरे काम करने की ही प्रेरणा देता है। आपके भीतर बनिया भी छिपा है, जो आपको कंजूस बनाकर रखता है। एक दमड़ी भी समाज के लिए, लोकमंगल के लिए सही ढंग से खर्च करने की प्रेरणा भी नहीं देता है। इसी के साथ यह बात भी सत्य है कि आपके भीतर ब्राह्मण एवं संत भी छिपा है। उसे भी देखने का, जाग्रत एवं जिन्दा करने का प्रयास करें। ब्राह्मण एवं संत को आगे आना चाहिए। इसका क्या मतलब? इसका मतलब यह है कि आपमें से जो पचास साल के हो गए हैं या जिनकी घरेलू जिम्मेदारी पूरी हो गई है अथवा कम हैं, उन्हें संत-ब्राह्मण के काम के लिए आगे आना चाहिए। आपके लिए गुजारे का है तो आप हाय-हाय क्यों करते हैं? आपके बच्चे जब कमाने लग गए हैं, तो क्यों आप घर में बैठकर मर रहे हैं? आपको घर से बाहर निकलना चाहिए। आपको परिव्राजक के रूप में बादलों की तरह घर से निकलना चाहिए तथा समाज के लोगों को नया प्रकाश, नयी प्रेरणा, नयी रोशनी देनी चाहिए।

अपने संत-ब्राह्मण को जगाइए

गायत्री परिवार के हर व्यक्ति से हमारा अनुरोध है कि जितने व्यक्ति अपने घर की व्यवस्था करके जितना समय समाजसेवा के लिए निकाल सकते हों, वे युगसृजन की भूमिका निभाने के लिए आगे आएँ। संत की प्रवृत्ति को आप जगाइये तथा अपने समय का एक अंश लगाकर समाज के लोगों को ऊँचा उठाने का प्रयास करें। उन्हें जीवन जीने की कला सिखाएँ। अगर संत की प्रवृत्ति आपमें जाग जाए, तो जो आप अपने परिवार, बाल-बच्चों के लिए खर्च कर रहे हैं, उसका एक अंश समाज के लिए अवश्य खर्च करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। संत अगर मुर्दा पड़ा रहे, संत अगर सोता रहे, तो हम क्या कर पायेंगे? आप में संत की प्रवृत्ति जागनी ही चाहिए। आपके भीतर एक और भी चीज है, जिसे हम ब्राह्मण कहते हैं। ब्राह्मण कौन है? जो किफायतसारी जीवन जीता हो। अगर आप ब्राह्मण हैं, तो हम आपके खर्चे की व्यवस्था कर सकते हैं। आप आगे आएँ और भगवान् का कार्य करें। पिछले जमाने में लोग ब्राह्मणों को दक्षिणा देते थे। इसका मतलब यह था कि वे उनके खर्चों का भार उठाते थे।

हमारी दक्षिणा

हमने भी अपने परिजनों से दक्षिणा माँगी है। घर-घर में ज्ञानघट स्थापित किए हैं और लोगों से कहा है कि आप इसमे दस पैसे नित्य डालिए। हमें दक्षिणा दीजिए, समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए इसकी आवश्यकता है। लोगों ने हमारी बात मानी और ज्ञानघटों की संख्या बढ़ रही है। आप इसमें कंजूसी मत कीजिए। नियमित रूप से इसमें दस पैसे डालिए। इससे हम युग-परिवर्तन की सारी जिम्मेदारी पूरी करेंगे। साथ ही साथ हम ब्राह्मणों को भी जीवित करेंगे और उनकी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। हम अपने देश, समाज के लोगों को ऊँचा उठाएँगे।

ब्राह्मण कौन?

मित्रो, ब्राह्मण किसे कहते हैं? यह कोई जाति नहीं, वरन् मानव समुदाय का वह वर्ग है, जो केवल अपने लिए ही नहीं, देश समाज और संस्कृति के लिए जीता है। जो पेट भरने और तन ढकने के लिए दो कपड़े की व्यवस्था जुटा लेने के पश्चात् बाकी बचे समय में समाज का काम करता है। यही ब्राह्मण की वास्तविक पहचान है। जो इस आदर्श एवं सिद्धान्त पर चल रहे हैं, वे सारे के सारे लोग ब्राह्मण है। आपको मालूम होना चाहिए कि आगामी

दिनों प्रज्ञावतार का जो कार्य विस्तार होने वाला है, उस काम की जिम्मेदारी केवल ब्राह्मण तथा संत ही पूरा कर सकते हैं। अतः आपको इन दो वर्गों में आकर खड़ा हो जाना चाहिए तथा प्रज्ञावतार के सहयोगी बनकर उनके कार्य को पूरा करना चाहिए। अगर आप अपने खर्च में कटौती करके तथा समय में से कुछ बचत करके इस ब्राह्मण एवं संत परम्परा को जीवित कर सकें, तो आने वाली पीढ़ियाँ आप पर गर्व करेंगी। अगर आपको इस युग की समस्याओं के समाधान करने के लिए खर्चे में कुछ कमी आती है, तो हम आपको सहयोग करेंगे, परन्तु एक बात मालूम रहे कि हम आपके लिए प्रोविडेण्ट फण्ड की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं। अगर आप समय निकाल सकते हों, तो समय निकालने का प्रयास करें। हमें समयदानियों की नितान्त आवश्यकता है। आप आगे आएँ तथा प्रज्ञावतार के कामों को पूरा करें। आपमें से जहाँ कहीं भी संत, ब्राह्मण जिन्दा हों, वे आगे आवें और महाकाल के साथी-सहचर बन कर लोकमंगल का काम करें।

ये तीन अनिवार्य कार्य

संत पूरा समय देते हैं और ब्राह्मण कुछ समय देते हैं। आपको इन दोनों में से जो अच्छा लगता हो, उस उत्तरदायित्व को पूरा करें। आपको इस समय तीन काम अवश्य पूरे करने चाहिए-

(१) युगसंधि महापुरश्चरण आपको करना ही चाहिए

(२) किसी न किसी प्रकार हर गाँव में एक चरणपीठ, ग्रामतीर्थ जिसकी लागत लगभग ६ हजार रुपये है, अवश्य बनाना चाहिए।

(३) आपको संत या ब्राह्मण दोनों में से किसी न किसी परम्परा को अपनाना चाहिए।

आप इसे स्वयं करें, जो आपके लिए सम्भव दिखलाई पड़ता है। इसके साथ ही आप औरों से भी कराइए। अगर आप इन तीनों कामों को कर सकते हैं, तो हमें विश्वास है कि आप प्रज्ञावतार के कामों को पूरा करने में सक्षम हो सकते हैं। आपसे हमारा निवेदन है कि आप हमारे सच्चे साथी-सहचर बनकर, महाकाल के सच्चे साथी-सहचर बनकर अगर इतना कर पाए, तो जो इस समय की माँग है, वह पूरी हो सकेगी। हमें विश्वास है कि आप इसे पूरा कर सकेंगे।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

ॐ शान्तिः

आत्मिक प्रगति का ककहरा

(शान्तिकुञ्ज हरिद्वार में अक्टूबर १९८० में दिया उद्बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलें— **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

मनुष्य, भगवान् की नकल

देवियो, भाइयो! कई बार ऐसा होता है कि बाप-दादों की बहुत-सी दौलत हमारे हाथ लग जाती है। बच्चे चाहे कमाएँ या न कमाएँ, माता-पिता बहुत-सा धन बच्चे के लिए छोड़कर चले जाते हैं। जो लड़के समझदार होते हैं, वे पैतृक धन के रहते हुए भी अपनी आमदनी का कोई-न-कोई जरिया निकाल ही लेते हैं, जिससे पैतृक धन में कमी न आने पाए। लेकिन कुछ ऐसे भी लड़के होते हैं, जो माता-पिता के धन को जुआ खेलने में, शराब पीने में गँवा देते हैं। इस तरह बुरे व्यसनों से उनका समस्त धन नष्ट हो जाता है और वे विनाश के कगार पर पहुँच जाते हैं। बुराइयों के गर्त में गिर जाते हैं।

भगवान् ने अपनी औलाद के लिए अपने अलग नियम व तरीके बनाए हैं और उसका नाम रखा है, "मनुष्य।" मनुष्य क्या है? मनुष्य भगवान् की नकल है। हम इसी से अंदाज लगा सकते हैं कि भगवान् बड़े रूप में कैसा होगा? जैसे इनसान है, भगवान् भी वैसा ही होगा। ऐसे ही हम अनुमान लगा सकते हैं कि समुद्र कैसा होगा? जैसा कि तालाब है, हम वैसा ही कुछ अंदाज लगा सकते हैं। कुछ ऐसी शक्तियाँ भी सृष्टि में हैं, जो छोटे तालाब को बड़े समुद्र में बदल सकती हैं।

श्रेष्ठतम कृति है मानव

मित्रो! भगवान् ने अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रतिमा इनसान के रूप में ही बनाई है। शेर जब बच्चा पैदा करेगा, तो अपने समान ही पैदा करेगा, बिल्ली पैदा नहीं करेगा। इसी प्रकार सभी जीव अपने समान ही संतानोत्पत्ति करते हैं। इसी प्रकार भगवान् ने अपने प्रतिरूप में इनसान को बनाया है। इनसान को उसने इसलिए बनाया है कि वह संसार को सुंदर एवं महत्त्वपूर्ण बनाने में अपना योगदान दे। फिर हमारी आपकी मिट्टी पलीद कैसे हो गई? हर आदमी दुःखी क्यों पाया जाता है? पूरे संसार में अनाचार और भ्रष्टाचार क्यों फैला हुआ है? पूरा संसार अज्ञानता

के अंधकार में क्यों डूब रहा है? इसका क्या कारण है? भगवान् चुप क्यों है। भगवान् को 'सत्यम्-शिवम-सुंदरम्' कहा जाता है, फिर उसके राजकुमार इनसान में इस बात की कमी कैसे हो गई? क्या बात हुई कि इनसान ने भगवान् के दिए हुए गुणों को एकदम भुला दिया!

ताकत का जखीरा है

स्रष्टा ने सृष्टि का जो प्रत्येक घटक बनाया है, उसकी छोटी-से-छोटी कलाकृति का नाम 'एटम' है। क्या आपने 'एटम' को कभी देखा है? एटम में बहुत ताकत होती है। समूचे सौरमंडल में सूर्य केन्द्र में रहता है, परंतु एटम को कभी देखा है? एटम में बहुत ताकत होती है। समूचे सौरमंडल में सूर्य केन्द्र में रहता है, परंतु एटम के अंदर ऐसा भूचाल रहता है कि वह वह सूर्य को भी अपनी ताकत से ढक लेता है। जिस तरह से अंतरिक्ष में नवग्रह चक्कर काटते रहते हैं, उसी तरह से एटम भी अपने आप में पूर्ण शक्तिशाली है व सूर्य के चारों ओर चक्कर काटता रहता है। एटम न्यूट्रानों, प्रोटानों व इलेक्ट्रानों के रूप में बराबर चक्कर काटता रहता है।

भगवान् बड़ा है, यह भी मैं मानता हूँ। एटम और इनसान दोनों बहुत ही सूक्ष्म हैं, किंतु मनुष्य की प्रकृति भगवान् ने ऐसी बना दी है कि उसमें ताकतों और चमत्कारों का समावेश कर दिया है। भगवान् और इनसान का तरीका एक ही है, सत्यम्-शिवम-सुंदरम् का। जैसे आदमी बड़ा होता है और बच्चा छोटा होता है, पर भूख दोनों की एक ही होती है। ऐसे ही भगवान् और इनसान की प्रकृति एक ही होती है।

अंतर पड़ा शक्तिक्षय के कारण

फिर यह फर्क कैसे पड़ा? मैं बताता हूँ—आपको। जैसे बड़े लोग, संपन्न लोग अपव्यय के कारण गरीब हो जाते हैं, उनकी जागीरें नीलाम हो जाती हैं। ये सब कैसे हुआ? ये सब लड़कों के अपव्यय के कारण हुआ। लड़कों ने किसी अच्छे कार्य में उस धन को नहीं लगाया, जिससे उनका जीवन आज खाना बदोशों की तरह से हो गया। आदमी के पास कमाई के बहुत सारे साधन हैं। उसकी उन्नति के लिए, लक्ष्यप्राप्ति के लिए और उसके अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहुत धन एकत्र हो सकता है, परंतु उसने ईश्वरप्रदत्त धन का अपव्यय किया।

मित्रो! आज हमारे सामने उपयोग की समस्या है। उत्पादन की समस्या नहीं है, कमाने की समस्या नहीं है, वरन् समस्या यह है कि धन को किस तरह से खरच किया जाए। हमें कमाने से ज्यादा उसकी चिंता करनी चाहिए, जो हमारे पास है। हमें उसकी रखवाली करनी चाहिए। एक कहावत है, **'अंधी पीसे कुत्ता खाए।'** यह कहावत हम और आप जैसे लोगों के लिए ही किसी ने बना दी है, क्योंकि हमें अंधी की तरह दिखाई नहीं देता। जिस तरह से उसके आटे को कुत्ता खा गया था और वह बैठी अनाज पीसती रही, उसी प्रकार हमारे ईश्वरप्रदत्त धन को कोई और ही निरर्थक खा जाता है और हम कमाते रहते हैं। इसी से मिलती हुई एक और कहावत है-'अंधा रस्सी बँटता जाए। बछड़ा उसे खाता जाए' आपके और हमारे सामने भी ऐसी ही समस्या है।

आत्मिक प्रगति का पथ

साथियो! मैं आपको अध्यात्म के चार रास्ते बताने जा रहा हूँ। उसमें से एक साधना के बारे में है। अभी जो बछड़ा और कुत्ता का उदाहरण दिया है, वो भवसागर है। पारस को छूकर लोहे के सोना बनने की बात आपको बता चुका हूँ। पर अब मैं यह कहता हूँ कि भगवान् को छूकर आदमी भगवान् बन जाता है। रामचंद्र जी, कृष्ण जी माँ के गर्भ से पैदा हुए और जलसमाधि में या श्मशान घाट में जलाए गए। इसलिए इनसान कहलाए। जो पैदा होता है, वह मर सकता है, क्या वह आदमी भगवान् नहीं हो सकता, इनसान ही रहता है?

भगवान् आपसे यह कहता है कि यदि आपकी उपासना सही हो, तो आप साधारण मनुष्य से भगवान् बन सकते हैं। आप नर से नारायण बन सकते हैं। मुक्ति का रास्ता आपके लिए भी खुला हुआ है। आप आग हैं, लकड़ी हैं या और भी कोई त्याज्य चीज हैं। जो भी हैं आप, घबराइए मत। आग से रिश्ता बनाइए और आग की भाँति दोषरहित जीवन बनाइए। जिस प्रकार से बच्चे गुड्डे-गुड़ियों से खेलते हैं, उसी प्रकार आप भी पूजा-पाठ के द्वारा भगवान् से खेलते हैं। आपने कभी उपासना का महत्त्व ही नहीं समझा। यदि समझा होता, तो भगवान् के नजदीक बैठने वाले जैसे उनके बराबरी के हिस्सेदार हो जाते हैं, आप भी उसी प्रकार उनके बराबर हो जाते।

सही उपासना कैसी

मित्रो! यदि आप भगवान् की उपासना सही तरीके से करें, तो आप टिड्डे की तरह से हो जाएँगे। बरसात में जब चारों ओर हरियाली छाई रहती है, तो

उस हरियाली को देखकर टिड्डा हरे रंग का हो जाता है। गरमियों में घास सूखकर पीले रंग की हो जाती है, तो टिड्डा पीली घास को देखकर पीले रंग का हो जाता है। इसी तरह से जब आपको चारों तरफ से शैतान दिखाई पड़ता है, तब आप शैतान हैं। जब आपको हैवान दिखाई पड़ता है, तब आप हैवान हैं। जब आपको इनसान दिखाई पड़ता है, तो आप इनसान हैं। यदि आप टिड्डे की तरह से देखेंगे, तो आपको भगवान् दिखाई पड़ेगा। बताइए आपने कब की थी भगवान् की उपासना? गुरुजी! हमने तो कल ही की थी। भगवान् हमारी चौकी पर रखे हुए हैं। बेटे! भगवान् को चौकी पर नहीं, अपने हृदय में रखा जाता है, जिससे हमारे खून के साथ भगवान् घुल-मिल जाए। उपासना जीवन में समाहित की जाती है, साँसों में घोली, समाई जाती है। उपासना जीवन का साइंस है, जो हमारे जीवन के प्रत्येक आचरण में छाई रहती है। गोमुखी में हाथ डालकर माला घुमाने से उपासना नहीं होती।

नकली उपासना

मित्रो! हम उपासना को आपके चिंतन में देखना चाहते हैं, आपके विचारों में देखना चाहते हैं। जैसे सूरदास के जीवन में भगवान् आ गया था, मीरा के जीवन में भगवान् आ गया था, वैसे आपके जीवन में क्यों नहीं आया? क्योंकि भगवान् के चिंतन को आपने नहीं समझा। उसके स्वरूप को नहीं समझा। हिंदुस्तान के करोड़ से अधिक इनसान नकली उपासना करते हैं। नकली उपासना से कभी भी आप भगवान् में समाविष्ट नहीं हो सकते। प्राचीन समय के सात ऋषियों की हम उपासना करने वाला मानते थे। उन्हें हम सप्तर्षि कहते थे। परंतु आज हिंदुस्तान में न जाने कितने बाबाजी रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर उपासना करते हैं और जगह-जगह लोगों से अपमानित होते हुए डोलते हैं। क्यों? क्योंकि उनके पास नकली उपासना है। जिस तरह से नकली दवाइयाँ होती हैं, नकली सोना होता है, उसी तरह से जो उपासना आप करते हैं, वह नकली है। आपको माला व पूजा-पाठ के जरिए बहकाया जा रहा है। इस पूजा-पाठ से आप असली कर्मकांडों की तह तक नहीं पहुँच पाएँगे और ईश्वर के ज्ञानरूपी चमत्कार से आप वंचित रह जाएँगे। अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाएँगे।

उपासना जीवन में उतरे

जिस प्रकार अकेले कलम से हम परीक्षा पास नहीं कर सकते, उसके साथ ही हमें अपने विषय का संपूर्ण ज्ञान आवश्यक है, उसी प्रकार माला फेरने से हम भगवान् को प्राप्त नहीं कर सकते। अच्छी तस्वीर तब तक नहीं बन सकती जब तक कलात्मकता कलाकार की आत्मा में प्रवेश न कर जाए। केवल रंगों व कागज के प्रयोग से ही अच्छी तस्वीर नहीं बन सकती। आप उपकरणों से ही काम चलाना चाहते हैं, कर्मकांड की तह तक नहीं जाना चाहते?

मित्रो! मैंने कहा था कि आत्मा की प्राप्ति के लिए चार तरीके हैं। उनमें से एक न कम हो सकता है और न ज्यादा। आप भगवान् को अपना गुलाम मत बनाइए। भगवान् के चरणों में अपना मस्तक झुकाइए और यह कहिए कि हम आपकी आज्ञानुसार चलेंगे। हम आपके सेवक हैं। आप इस लायक नहीं हैं कि अपनी हुकूमत भगवान् पर चला सकें। भगवान् को जो कुछ आपको देना था, दे दिया। अब आपका काम है कि आप भगवान् का ब्याज चुकाएँ। भगवान् पर अपने कर्मों का रौब मत दिखाइए। पहले तो आप भगवान् से जो मनुष्य का जीवन लेकर आए हैं, उसका ब्याज चुका दीजिए। नहीं, हमने तो पहले भी बैंक का ब्याज नहीं चुकाया था। बेटे! यह बैंक का ब्याज नहीं है, यह ईश्वर का दिया हुआ मानव-जीवन है। गुरुजी! हमने तो ऐसे ही सुना था कि राम नाम होने से ही सारे काम हो जाते हैं। फिर क्या जरूरत है—भगवान् का कर्ज चुकाने की।

एक मुवक्किल एक वकील

मित्रो! एक समय की बात है। एक वकील और उनका एक मुवक्किल था। मुवक्किल किसी केस में फँस गया था। उसने कहा, वकील साहब! आप मुझे छुड़ा दें, तो मैं जन्म भर आपका एहसान मानूँगा। वकील ने कहा, जन्म भर एहसान मत मान, बस तू मुझे पाँच हजार रुपये दे दे, मैं तेरा केस लड़ दूँगा। तू पागल बन जाना। मैं डॉक्टरों से मिलकर तेरे पागलपन का सर्टीफिकेट बनवा दूँगा। जब तू अदालत में जाए, तो बस एक ही शब्द याद करके जाना। जब-जब तुझसे कोई सवाल पूछे तो तू कह दिया करना—भैं। हमारे कानून में पागलों के लिए कोई कानून नहीं है। न्यायाधीश ने पूछा, क्या नाम है तेरा? उसने कहा, भैं। क्या तूने गलत काम किया है? भैं। न्यायाधीश कोई भी बात पूछते तो वह कहता, भैं। वकील ने कहा कि साहब यह तो पागल है। यह बात उसने गवाहों व सबूतों के माध्यम से सिद्ध कर दी। जजसाहब ने कहा कि इसे बरी किया जाए। छूटने

के बाद वह आदमी वकील साहब की कोठी पर गया। वकील साहब ने कहा, लाइए हमारी फीस के पाँच हजार रुपये। उस व्यक्ति ने कहा, भैं। इस तरह वकील साहब अपना माथा ठोकते रह गए। भाइयो! आप और हम सब पागल ही तो हैं। आप सब राम-राम की में लगाए रहते हैं। आप वास्तविकता का मुकाबला कीजिए, नहीं तो जंजालों में भटक जाएँगे। आप जमीन पर चलिए।

चमत्कार नहीं, मर्म है भाव

राबिया एक संत थी। एक बार हसन राबिया के यहाँ आए और उन पर अपना रौब गालिब करना चाहा। उन्होंने राबिया से कहा, आओ हम दोनों नमाज पढ़ेंगे। जमीन गंदी है, इसलिए हम पानी पर बैठकर नमाज पढ़ेंगे। हसन ने अपना 'मुसल्ला' पानी पर फेंक दिया। 'मुसल्ला' पानी के ऊपर तैरने लगा। 'मुसल्ला' नमाज पढ़ने के आसन को कहते हैं। हसन के कहने पर राबिया ने सोचा, अच्छा तो ये पानी वाली बात कहकर मेरे ऊपर अपनी करामात दिखाना चाहते हैं। राबिया ने कहा, पानी पर ही क्यों? पानी को तो मछली, मेढक गंदे करते रहते हैं। राबिया ने अपना मुसल्ला उठाया और हवा में फेंक दिया। मुसल्ला हवा में तैरने लगा। राबिया ने कहा, आइए हसन, हवा में बैठकर नमाज पढ़ेंगे। हसन यह सब देखकर दंग रह गए, क्योंकि वे राबिया पर अपने चमत्कार, सिद्धि दिखाने आए थे और अपना रौब जमाने आए थे। राबिया ने कहा—हसन! जो काम आप करने आए थे, वह तो एक मछली भी कर सकती है और जो हवा में तैरने का काम मैं करने वाली थी, उसे तो एक मक्खी भी कर सकती थी। इसलिए न हमें पानी में तैरने की जरूरत है और न हवा में उड़ने की। हमें जमीन पर ही रहने की आवश्यकता है। हमें सचाई का मुकाबला करने की जरूरत है, क्योंकि हम जमीन पर ही पैदा हुए हैं।

मित्रो! हमें भी रामनाम के चमत्कार देखने की आदत छोड़ देनी चाहिए। इनसान का हृदय तीन हजार रुपये का होता है। रामनाम सवा रुपये का होता है। तीन हजार रुपये की जमीन पर आप सवा रुपये का बीज बोइए। फसल पैदा हो जाएगी। यह जमीन की कीमत है। बीज की कीमत बहुत कम है। खाली जमीन में घास पैदा हो सकती है। आप उसमें अपनी बकरी चरा सकते हैं, परंतु बिना जमीन के आप बीज किसमें बोएँगे? भजन से अनेक काम पूरे हो सकते हैं, परंतु भजन को दृढ़ बनाने के लिए आदमी का दृढ़ चरित्र रहना, उदार रहना अति आवश्यक है।

स्वाध्याय की महत्ता

मैंने आपसे यह निवेदन किया था कि स्वाध्याय को भी भजन का एक हिस्सा माना जाना चाहिए। हमें किसी साहित्य विशेष में कोई दिलचस्पी नहीं है। हम तो उन्हीं विचारों को अपनाना चाहते हैं, जो नेकी के रास्ते पर चलने में मदद करें, चाहे वे विचार इनसान के मुँह से निकले हों, चाहे वे किताब में छपे हों। स्वाध्याय के लिए ऐसे ही प्रेरणाप्रद विचारों व कथनों की आवश्यकता है। आप अपने अंदर से कुविचारों को निकाल फेंकिए, दृढ़ता से उनका मुकाबला कीजिए। अपने अंदर सुविचारों को पनपने दीजिए। छेनी से छेनी काटी जाती है, यदि आपके बुरे विचार आप पर हावी होते हैं तो आपके पास ब्रह्मचर्य का हथियार है, उसका उपयोग कीजिए। यदि दोनों की कुश्ती करवाई जाए, तो बुरे विचारों को अच्छे विचार एक ही टक्कर में चित्त कर देंगे। आपको अपनी दिनचर्या में स्वाध्याय के लिए महत्त्वपूर्ण समय रखना ही चाहिए, नहीं तो कामुकता के अश्लील विचार दिमाग में छाए रहेंगे और आप किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

संयम बरतिए

साथियो! हम आपसे यही निवेदन करना चाहते हैं कि आप अपनी बरबादी को बंद कीजिए, संयमशील बनिए। असंयम कहते हैं—बरबादी को। जो गुण हमें पूर्वजों द्वारा विरासत में मिले हुए हैं, उनको हम अपव्यय करने में लगे हुए हैं। मथुरा में एक कोतवाल साहब थे। वे बहुत ही रिश्वत लेते थे। नोटों से उन्होंने थैले और पेटियाँ भरकर रखी हुई थीं। उनके लड़के नोटों को पतंग में बाँधकर छत से उड़ाया करते थे। बच्चों से कहते कि जो हमारी पतंग को काटेगा, हम उसे दस का नोट देंगे। कभी-कभी उनके लड़के दस के नोट की सिगरेट बनाकर पी लेते थे। नोट में तंबाकू रखी और सिगरेट बनाकर पी गए। पाँच-दस वर्ष में उन्होंने बाप की सारी कमाई को नष्ट कर दिया और गरीबी का जीवन जीने लगे। वह कोतवाल और उसके बेटे बरबाद हो गए। यही हालत आपकी है और आप हैं कि कहते हैं कि कोतवाल के लड़के बड़े उद्दंड थे। हम और आप भी तो धन की बरबादी करने पर आमादा हैं।

बीमारी का कारण असंयम

प्रकृति का प्रत्येक जानवर लंबे समय तक जीता है। मौत तो सबको आती है, परंतु कोई भी जानवर कभी बीमार नहीं पड़ा। लेकिन आदमी बीमार

पड़ता है। उसके साथ रहने वाले जानवर भी जरूर बीमार पड़ते हैं। इसकी वजह क्या है ? भगवान् ने जानवरों का शरीर इस तरह से बनाया है कि वह कभी बीमार नहीं पड़ते। यदि यह मान लिया जाए कि वायरस या कीटाणु आपको बीमार करते हैं, तो अस्पताल में टी०बी० के मरीजों के कपड़े धोने वाले धोबियों को तो यह बीमारी होती ही नहीं। तब वायरस कहाँ जाते हैं। मित्रो! ये सारे कीटाणु असंयम से आते हैं, जिसकी वजह से आपने अपनी सेहत खराब कर ली है। मनुष्य अपनी जीभ की नोंक से अपनी कब्र तैयार करता है। हमने जो बीमारियाँ अपने लिए पैदा की हैं, वे सब जीभ की नोंक द्वारा पैदा की हुई हैं, क्योंकि हमने जीभ की नोंक को संयम में नहीं रखा। इससे क्या हो जाता है। जिस तरह पहले आप परीक्षा में प्रथम आते थे, अब फेल होते चले जा रहे हैं। नजर कमजोर हो गई है, उस पर चश्मा चढ़ गया है। हमारे पड़ोस में एक किरायेदार थे, मकान में दो नल लगे हुए थे। जब कभी ऊपर वालों को परेशान करना होता, तो नीचे का नल खोल देते थे। तब ऊपर वाले को पानी लेने के लिए नीचे के कई चक्कर लगाने पड़ते थे। वे चिल्लाते रहते थे पानी के लिए।

सस्ती दवा : संयम की

मित्रो! हमारी आँखें कहती हैं कि हमें तेज चाहिए हमारे कान कहते हैं कि हमें ताकत चाहिए। हमारा दिमाग कहता है कि हमें खुराक चाहिए। आपके अंदर हर तरह का 'वर्चस्' चाहिए। स्वामी दयानंद सरस्वती एक बार शौच के लिए बाहर गए, तो मार्ग में दो साँड़ कुश्ती लड़ रहे थे। दोनों ही बड़े बलिष्ठ थे और क्रोध में लड़ते हुए लहूलुहान हो रहे थे। आपस में फिर से टक्कर मारने चले, तो स्वामी दयानंद ने कहा, क्यों रे! तुम नहीं मानोगे। साँड़ फिर भी नहीं माने तो स्वामी जी ने लोटे को जमीन पर रख दिया और एक साँड़ का सींग एक हाथ से तथा दूसरे का सींग दूसरे हाथ से पकड़कर घुमा दिया। इससे एक साँड़ गिर गया और दूसरा भाग गया। यह ताकत उनमें कहाँ से आई ? संयम से। आपको भी जरूरत है संयम की। आप सभी संयम की दवाई खाइए। यह दवाई शंकराचार्य, भीष्म पितामह, हनुमान् जी आदि सभी ने खाई थी। आप कहते हैं कि बाजार की दवाइयों में बहुत ताकत होती है, सो ऐसी बात नहीं है। वे दस पैसे की चीज का एक रुपये वसूल करते हैं। इसी से आप उसकी ताकत का अंदाजा लगा सकते हैं। इसलिए आप संयम की सस्ती दवा खाइए। यही आपको लाभ पहुँचाएगी। इसी से आपका दिल-दिमाग और स्वस्थ बनेगा।

संयम ही जीवन है

मित्रो! संयम ही जीवन है। संयम चार तरह के हैं। पहला है, इंद्रिय संयम। इंद्रिय संयम से मतलब है, जीभ का संयम, जिसने आपका पेट खराब कर दिया और आप बीमार रहने लगे। जरूरत से ज्यादा आप खाते चले गए और शरीर में जहर फैल गया। आप ठीक हो सकते हैं, बशर्ते आप अपने पेट पर कृपा कीजिए, जरूरत से ज्यादा मत खाइए। स्वामी रामकृष्ण परमहंस विवाहित थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम शारदा था। वे उन्हें भरपूर प्यार करते थे, परंतु कोई जरूरी नहीं कि एक-दूसरे के शरीर को बरबाद किया जाए। एक-दूसरे के शरीर में बीमारी को प्रवेश करा दिया जाए। क्या इसी से आपका प्यार होता है? क्या मतलब है आपके प्यार से! मरद औरत को खाएगा और औरत मरद को खाएगी, क्या यही अर्थ है विवाह का? गाँधी जी ने एक किताब लिखी है, 'संयम की राह पर'। उसमें लिखा है कि स्त्री और पुरुष बहन-भाई की तरह भी रह सकते हैं। आप पशुओं से भी कुछ सीखिए। साँड़ गायों के झुंड में रहता है, परंतु बिना गाय की आवश्यकता के वह गायों की तरफ देखता भी नहीं है। वह भी ब्रह्मचर्य का पालन करता है। जब पशु संयम से रह सकते हैं, तो आप क्यों नहीं रह सकते? मित्रो! आप अपनी जीभ को बुरे वचन बोलने और भक्ष्य खाने से रोकिए, क्योंकि इन दोनों से ही जीभ जलती है। जली हुई जीभ से भगवान् का भजन नहीं किया जा सकता। "जैसा खाए अन्न-वैसा बने मन"—आपकी यही नियति बन गई है। अतः आप संयम का आरंभ जीभ से करिए। उससे कहिए कि हम आपको भगवान् की पूजा के लायक बनाना चाहते हैं। स्वाद के लिए हम कोई भी ऐसी चीज नहीं खाएँगे, जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक हो। हम किसी से ऐसे शब्द नहीं बोलेंगे, जो दूसरों को गुमराह करने वाले हों, दूसरों को पतन के मार्ग पर ले जाने वाले हों। आप संयम जीभ से शुरू कीजिए, फिर देखिए कि आपकी वाणी में चमत्कार कैसे पैदा होता है?

जीभ के संयम की महत्ता

आप इस संबंध में हमसे पूछते हैं कि गुरुजी! आपने अपनी वाणी को कैसे शुद्ध बनाया? बेटे! हमने संयम किया है। चौबीस वर्षों तक जौ की रोटी और छाछ का सेवन किया। इससे हमारी जीभ इस योग्य हुई। नमक हमने बिल्कुल नहीं खाया। इस्लाम धर्म के संस्थापक बिना पढ़े थे, परंतु जीभ के संयम से उन्होंने अपने अंदर अपनी बात मनवाने का गुण पैदा किया। ऋषियों

की जीभ से निकले हुए वचन भी मंत्र थे। उन्होंने भी संयम किया था, इसलिए आपको भी उनके बताए मार्ग पर चलना चाहिए। आप भी अपने जीवन के उचित लक्ष्य को प्राप्त कीजिए। धनुष की प्रत्यंचा जितनी खींची जाएगी, तीर उतना ही तेज चलेगा। धनुष से तात्पर्य है, हमारी जीभ से, जो मंत्र के उच्चारण के लिए है। ऋषियों की जीभ से निकले हुए मंत्रों ने राजा दशरथ के चार बच्चों को जन्म दिया था। लोमश ऋषि ने राजा परीक्षित को शाप दिया था कि जा तुझे सातवें दिन साँप काट खाएगा। उनका शाप सच्चा इसलिए था, क्योंकि ऋषि संयमशील थे। अक्षरों में कोई ताकत नहीं है। ताकत तो वाणी के संयम से आती है। शक्ति का स्रोत संयम ही है। आप दोनों में से कोई भी चीज ले लीजिए, भौतिक या आध्यात्मिक। दोनों में ही संयम की आवश्यकता है। अतः आप इंद्रियों का संयम कीजिए। इंद्रियों के संयम का अर्थ है कि आपने अपने जीवन में चार सूराख कर रखे हैं, उनमें से एक-एक को बंद करना। अगर आपने एक भी सूराख को बंद कर दिया, तो आप में ताकत आती चली जाएगी। सूराख बंद करते ही आप यह महसूस कर सकते हैं कि आप में ताकत आनी शुरू हो गई। आपको इसके चमत्कार अच्छे स्वास्थ्य के रूप में, दीर्घजीवन के रूप में दिखाई देने लगेंगे। आप तो हर समय परायी पत्तल ही चाटने की कोशिश करते हैं। आप अपने ऊपर विश्वास करना सीखिए। अपनी ताकत को पहचानिए। संयम की शक्ति का अंदाजा लगाइए। संयम को हम तप कहते हैं। आप खाना खाएँ चाहे न खाएँ। शरीर को धूप में खड़ा रखने से भी कुछ बनता-बिगड़ता नहीं, अनेकों ऋषि धूप में खड़े रहते हैं, परंतु उच्चस्तरीय उपलब्धियाँ संयम के कारण ही मिलती हैं, अन्यथा धूप में खड़े रहने पर कोई फरक नहीं पड़ता।

विचारों का संयम

दूसरा संयम है, मन का संयम, विचारों का संयम। यह इस तरह से है, जिस तरह से आवारा लड़के मारे-मारे फिरते हैं। यह भी इसी तरीके का है। आपके मन में हमेशा बेकार के विचार आते रहते हैं। यदि आप थोड़ा भी संयम विचार को एकत्र करने में लगाएँ, तो आप देखेंगे कि आपके विचार क्या से क्या बन जाएँगे। साहित्यकार एवं वैज्ञानिकों में क्या विशेषता होती है ? कुछ भी नहीं। बस ये विचारों को एकत्र करते हैं—मन की शक्ति से। सर्कस में काम करने वाली लड़कियों में बस एकाग्रता की शक्ति होती है। वे अपने मन को भागने से रोके रखती हैं, तभी तो वे ऊँचे झूले से झूलकर जाल में कूद पड़ती हैं और

उनको जरा भी चोट नहीं आती। आप यदि एक काम पर पूरा विचार करना सीख जाएँ, तो आप क्या से क्या बन सकते हैं? हमने अपने जीवन में स्वाध्याय का नियमित समय एक घंटे के हिसाब से रखा। पंद्रह वर्ष की उम्र से सत्तर वर्ष की उम्र तक हमने सत्तर लाख पन्ने पढ़े हैं। ये सब विचारों का संयम है। आप रात को पिक्चर देखकर आते हैं और हीरोइनों के सपने देखने लगते हैं। हीरोइनों के फोटो खरीद कर लाते हैं। पहले आप यह बताइए कि आपका वेतन कितना है? महाराज जी तीन सौ रुपये। अरे! तीन सौ रुपये तो एक हीरोइन अपने सैंट पर खरच कर देती है। आप इसी बल पर हीरोइन से दोस्ती करने की सोच रहे थे। अपने विचारों पर संयम करना सीखो। अपने विचारों को समाज-सुधार के लिए अच्छी दिशा दो। आपके दिमाग व शरीर की शक्ति आपको कहाँ-से-कहाँ पहुँचा सकती है।

समय संयम

मित्रो! एक और संयम है और वह है समय का संयम। आपने जितनी अधिक समय की बरबादी की है, यह उसी का परिणाम है कि आप दुःखी जीवन जी रहे हैं। समय भगवान् ने आपको इसलिए दिया है कि समय की कीमत से आप दुनिया की कीमती-से-कीमती वस्तु खरीद सकते हैं। आप चाहें तो समय की कीमत से लोकसेवी बन सकते हैं, साहित्यकार बन सकते हैं। समाज-सुधारक बन सकते हैं, परंतु आपने समय के मूल्य को नहीं पहचाना। आपने अपने जीवन का सारा समय वैसे ही व्यर्थ में नष्ट कर दिया। जिन लोगों ने समय का उपयोग किया है, वे उन्नति के ऊँचे शिखर पर चढ़ते चले गए। चर्मकार, धोबी, छोटी जाति के कहले जाने वाले व्यक्ति भी रात्रि पाठशाला में जाकर दो घंटे प्रतिदिन के हिसाब से पढ़कर ऊँचे पद पर तरक्की कर जाते हैं। समय का सदुपयोग करने के कारण ही आज वे अनेकों संस्थाओं में कार्यरत हैं। लेकिन आप तो कहते हैं कि क्या करें साहब! हमारे पिताजी मर गए थे, इसलिए हम प्राइमरी तक ही पढ़ पाए। तो क्या पिताजी अपने साथ आपका शरीर भी ले गए? मित्रो, आपने समय की कीमत नहीं पहचानी। एक ड्राइंग मास्टर थे। साठ वर्ष की आयु में वे रिटायर हुए। रिटायर होने के बाद उन्होंने संस्कृत पढ़ना शुरू किया। संस्कृत पढ़कर वे वेदों के भाष्यकार कहलाए। उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि भी मिली थी। उन्होंने संस्कृत में भी बहुत साहित्य लिखा है। आप क्या करते हैं रिटायर्ड होकर? हमारा बेटा कमाकर लाता है और हम बेकार बैठे रहते

हैं। बताइए हम क्या करें? बेकार बैठे रहना भगवान् की दी हुई संपदा का तिरस्कार करना है। उसके नियमों की अवहेलना करना है। आदमी जब तक श्रमशील नहीं होगा, तब तक उन्नतिशील नहीं हो सकता। आप अपने श्रम का उपयोग समाज की उन्नति के लिए कीजिए, जिससे हमारा समाज अच्छा और सुंदर बने।

काल को बाँध सकते हैं आप

रावण की कथा है। रावण ने एक दिन काल को पकड़ लिया। पकड़कर पाटी से बाँध लिया और फिर काल की पिटाई लगाई। काल चीखने-चिल्लाने लगा। रावण ने कहा कि काल तू मुझे धन दे और विद्या दे। काल ने डर के मारे लंका को सोने की बना दिया और रावण को विद्वान बना दिया। काल का क्या अर्थ है? आप तो काल को भूत-प्रेत या देवता मानते हैं, परंतु वास्तव में काल समय को कहते हैं। इसका जो सदुपयोग करते हैं वे महान् उपलब्धियों के स्वामी बनते हैं। बिहार में हजारी नाम का एक किसान था। उसने अपना सारा समय आम के बगीचे लगाने में लगाया। बिहार में उसने एक हजार बाग लगाए। हजार बांगों की वजह से उस जिले का नाम 'हजारी बाग' रखा गया। आप तो अपना समय गप्पें हाँकने में लगाते हैं। समय की कीमत समझिए। आप अपने समय को आध्यात्मिक उन्नति में लगाइए। जिससे आपका जीवन सफल हो जाए। आप समय की दिनचर्या बनाइए।

चार तरह की दौलत

साथियो! आपकी दौलत चार तरह की है। पहली है-इंद्रिय संयम। इसे अपने जीवन में महत्त्व दीजिए। इंद्रियों का संयम न करने से आप अपने आप को तबाह करते जाते हैं। आप अपने विचारों की संपदा को किन्हीं उपयोगी कार्यों में लगाना सीखिए। यदि आप ने विचारों का संयम करना प्रारंभ कर दिया, तो आपका दिमाग जिसे हम ब्रह्मलोक कहते हैं, सद्विचारों का भंडार हो जाएगा। यही अतीन्द्रिय क्षमता का मालिक है, आपकी शालीनता का, सुख-समृद्धि का स्वामी है। यह दिमाग एक कंप्यूटर की तरह से है, जिसकी क्षमता असीम है। तीसरा संयम-समय का संयम है। इसके लिए आप अपनी दिनचर्या बनाकर चलिए। गाँधी जी ने देश के लिए अनेकों कार्य किए। अपने समय की दिनचर्या उन्होंने बनाकर रखी थी। सब कार्य वे नियत समय पर करते थे। समय को बिल्कुल भी व्यर्थ नहीं गँवाते थे। उन्होंने बहुत सारा साहित्य लिखा।

मित्रो! हम मशीन की तरह से जीते हैं। आठ बजे का समय हमारा सोने का है। मित्र आते हैं और कहते हैं कि हमसे बात कीजिए। हम कहते हैं कि हम नहीं करेंगे आप से बात, यदि आप नाराज होते हैं, तो हो जाइए हमारी बला से। हम प्रतिदिन चार घंटे लेखन करते हैं। नौ अखबारों का हम संपादन करते हैं, अखण्ड ज्योति का संपादन करते हैं, अपने मनोयोग और तन के सहयोग से। हम दोनों काम इसलिए कर लेते हैं कि हमारा अपना मन और तन दोनों एक साथ लगते हैं, परंतु आपकी कभी 'तन डोले' तो 'कभी मन डोले' वाली स्थिति रहती है। इसलिए आप काम में अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाते हैं। गुरुजी! आपकी उन्नति में कौन-कौन सहायक हुआ है? बेटे! आध्यात्मिक दृष्टि से गायत्री मंत्र हुआ है, किंतु इन सबके पीछे जो चमत्कार आपको दिखाई देता है, उसका कारण है, समय का संयम। हम समय के गुलाम हैं। हमारी प्रेमिका कौन है, जिसे देखे बिना हमें चैन नहीं पड़ता? वह है हमारी घड़ी, जो हर समय हमारी मेज पर रखी रहती है। आपके पास भी है घड़ी? हाँ साहब! हमारे पास और हमारी पत्नी-दोनों के पास घड़ी है। तब तो आपकी पत्नी ने एम०ए० पास कर लिया होगा? नहीं साहब, उसे तो घर के कामों से ही समय नहीं मिलता है। तो दिखाइए अपनी घड़ी और बताइए कि कितने बज रहे हैं? साहब, इसमें तो साढ़े उनतीस बज रहे हैं। समय देखना आता नहीं और घड़ी लिए फिरते हैं।

अर्थ संयम

चौथा एक और महत्त्वपूर्ण संयम है। उसका नाम है-अर्थसंयम। अर्थसंयम का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। "सादा जीवन-उच्च विचार" उन आदमियों का जीवन है, जिन्होंने अपना जीवन पहले चरण के हिसाब से जिया है। जो आदमी जमीन को चूमते हैं, आसमान को चूमते हैं, वे आदमी बेईमान होते हैं, करजदार होते हैं। जिन्होंने अध्यात्म में प्रवेश किया है और पैसे की दृष्टि से सामंजस्य नहीं रखा, उन्हें आगे चलकर बहुत कठिनाई उठानी पड़ सकती है। मित्रो! उन्हें जीवन की उन्नति के लिए कोई रास्ता नहीं मिलेगा। बच्चों की शिक्षा व पालन-पोषण का वे उचित प्रबंध नहीं कर सकेंगे। हमेशा उनके ऊपर फिजूलखरची छाई रहेगी। आध्यात्मिक दृष्टि से फिजूलखरची एक गुनाह है। कानून चाहे आपके ऊपर मुकदमा चलाए या न चलाए, लेकिन अध्यात्म आपके ऊपर मुकदमा जरूर चलाएगा। जिस देश व समाज में आप पैदा हुए हैं, उसके औसत के हिसाब से आप खरच कीजिए। आप कमा तो सकते हैं, लेकिन अपनी कमाई को खरच नहीं कर सकते। आप अपनी कमाई में से कुछ बचत कीजिए।

अर्थसंयम के बारे में मैं अक्सर ईश्वरचंद्र विद्यासागर का नाम लेता हूँ। उनको पाँच सौ रुपये वेतन मिला था। उन्होंने अपने घरवालों को बुलाया और कहा कि ये लीजिए पचास रुपये। हिन्दुस्तान का व्यक्ति इससे ज्यादा खरच नहीं कर सकता। जो रुपये हमारे पास बच जाते हैं, इसको हम विद्यार्थियों के लिए खरच करेंगे। हमारा देश बहुत गरीब है। विद्यार्थियों की भीड़ उनके दरवाजे पर लगी रहती थी। आप तो जरूरत से ज्यादा खरच करते हैं। आपने-अपने जीवन में बेकार की जरूरतों को पाल रखा है। फिजूलखर्ची बंद कीजिए। मित्रो! एक बार हमने आपको बताया था कि जब हमारे बाप-दादा मरे थे, तो जो पैसा हमें मिला था वो सारा हमने गायत्री तपोभूमि पर लगा दिया। हमने अपनी जमीन स्कूल के नाम दान कर दी। अपने लिए हमने कुछ नहीं बचाया। जब से हम अखण्ड ज्योति में रहे हैं, हम अपने परिवार में पाँच प्राणी हैं, दो बच्चे, एक हमारी माताजी और हम दो पति-पत्नी। परंतु पाँच आदमियों का हमारा खरच दो सौ रुपये मात्र रहा है। भारत के नागरिकों को बड़े ही किफायत से धन खरच करना चाहिए। गाँधी जी ने बहुत कम धन में गुजारा किया।

कृपण या उदार

अमेरिका के एक सज्जन थे। पुराने कपड़े पहनते थे। खाने में भी किफायत करते थे, लेकिन वे करोड़पति थे। उनके पास एक महिला आई और कहने लगी कि हम आप से विवाह करना चाहते हैं। उस सज्जन ने कहा कि विवाह तो हम कर लेंगे, परंतु आप हमें देंगी क्या? क्या कमाएँगी हमारे लिए? महिला ने कहा, इस कंजूस के साथ कोई शादी नहीं करेगा। उस व्यक्ति के बारे में विख्यात हो गया कि वह बड़ा कृपण है। एक बार एक विश्वविद्यालय को चंदे की आवश्यकता पड़ी। कमेटी के लोग कंजूस के पास गए और कहने लगे कि साइंस की एक प्रयोगशाला बनाई जा रही है। विद्यार्थियों के लिए आप कुछ धन दीजिए। कहने को तो उसने नमस्त कर लिया। उसकी मेज पर तीन मोमबत्तियाँ जल रही थीं। उसने एक मोमबत्ती बुझा दी। लोग यह देखकर हँस पड़े। कंजूस ने पूछा कि आपको कितना पैसा चाहिए? कमेटी के लोगों ने डरते हुए कहा पाँच सौ रुपये। कंजूस ने तुरंत पचास हजार रुपये का चेक काट दिया। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। कहने लगे हमने तो आपसे पाँच सौ रुपये माँगे थे और आपने इतना दे दिया। ये क्या किया आपने? उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था। कंजूस व्यक्ति कहने लगा कि मैं अपने जीवन भर प्रयोगशाला बनाने का सपना देखता रहा, पर पूरा न कर सका। अच्छी बात है—जो आप इस काम को करने जा रहे हैं।

लीजिए यह पहली किश्त है। मैं आपके विश्वविद्यालय को देखने आऊँगा। अगर काम सही तरीके से हुआ तो आगे भी धन दूँगा। मैं अपनी सारी दौलत आपको देकर के जाऊँगा? मैं इसे रखकर क्या करूँगा।

मित्रो! हम व्यक्तिगत जीवन में भी किफायत कर सकते हैं। पैसा तो ऐसी चीज है कि जरा-सी मुट्ठी खुलते ही समाप्त हो जाता है। फिजूलखरची को ही चोरी कहते हैं। इससे कभी भी पूरा नहीं पड़ सकता। अतः आप संयमशील बनिए और उतना ही खरच कीजिए, जिससे आपका शरीर जिंदा रह सके, परंतु अभी तो आप शरीर के लिए कम तथा विलासिता के लिए अधिक खरच करते हैं। हमारे चारों सूराखों में से हमारी उन्नति, अध्यात्म, पुण्य और लक्ष्य टपक जाता है।

देवों के अनुदान

अध्यात्मिक जीवन में संयम को तप कहते हैं। तप चार तरह के होते हैं। यदि आप चारों तरह के तप करना शुरू करेंगे, तो तपस्वी को जो सिद्धियाँ मिलती हैं, वे सिद्धियाँ आपको प्राप्त हो जाएँगी। एक बार आप फिर समझ लें कि तप माने इंद्रियनिग्रह, तप माने मनोनिग्रह, विचारों का निग्रह। तप माने समय का संयम और तप माने अर्थ का निग्रह। एक बात और देवताओं के अनुग्रह की बात आप समझ लें। देवता नाम इसलिए रखा गया है कि वे दया करते हैं। देवता का अर्थ है, देने वाला। देवता हर समय कुछ न कुछ देते रहते हैं, लेते नहीं हैं, हम माँगते हैं और वे देते हैं, परंतु यहाँ यह विचार करना पड़ेगा कि देवता क्या देते हैं? देवता के पास जो चीजें होंगी वही तो वह देगा। जिसके पास जो चीज नहीं होगी, तो वह क्या देगा? जो चीज बैंक में मिलती है वह है रुपया और कुछ नहीं मिलता है बैंक में। रुपये के बदले में आपको सब चीज मिल सकती है। रुपये में ताकत तो है, लेकिन देवता में जो चीज है-वह है-देवत्व। यही देवता हमें दे सकते हैं। देवत्व कहते हैं-गुण, कर्म, स्वभाव में उत्कृष्टता को। गुणों की दृष्टि से श्रेष्ठ, कर्मों की दृष्टि से श्रेष्ठ, स्वभाव की दृष्टि से श्रेष्ठ-इतना काम करने के बाद देवता निश्चिंत हो जाते हैं, अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं।

मित्रो! दुनिया में सफलता एक चीज के माध्यम से मिलती है और वह है-उत्कृष्ट व्यक्तित्व। जिस व्यक्ति ने बिना मेहनत के कोई चीज प्राप्त कर ली है, उसे कहते हैं, तरकीब और तिकड़म। यदि इस तरीके से आपने कोई चीज प्राप्त कर ली है, तो वह वस्तु आपके पास नहीं ठहरेगी। आप में हजम करने की ताकत हो, तो ही आप सब चीज खा सकते हैं। दौलत को हजम करने का तरीका

होना चाहिए। जैसे-जैसे आपके पास पैसा बढ़ता जाएगा, तो आपके अंदर दोष बढ़ते जाएँगे। आप गरीबों से भी बुरे पड़ेंगे। जीवन में ऐसी विसंगतियाँ बढ़ती जाएँगी, जो आपको दौलत का फायदा पहुँचाना तो दूर आपको नुकसान ही पहुँचाएँगी। यह दौलत आपको तबाह कर देगी। संतानें बिगड़ जाएँगी, इससे तो गरीबी अच्छी है।

हजम करने की ताकत हो

दौलत को हजम करने की आपके शरीर में ताकत होनी चाहिए। अच्छे विचार मन में होने चाहिए। तभी आप दौलत को हजम कर सकेंगे, नहीं तो आप बुरे कार्य करेंगे। हिम्मत से बुराइयों का मुकाबला कीजिए। आपका भीम के तरीके से बलवान होना समाज के लिए अभिशाप साबित हो सकता है। इसलिए आप अपनी ताकत को उचित कार्यों में लगाइए। मैं मानवता का पुजारी हूँ। दुनिया में तबाही पढ़े-लिखे लोगों ने ही मचाई है। तो क्या हम पढ़ना-लिखना छोड़ दें? पढ़ाई छोड़ने से हमारे आगे वही हालात पैदा हो जाएँगे, जैसे गाँवों में पहले एक ही आदमी पढ़ा-लिखा होता था। बाकी सब निरक्षर रहते थे। हम आपसे बार-बार कहते हैं कि किताब वालों के पास जाइए, स्वाध्याय करिए। उनका सत्संग करिए।

मित्रो! मेरा ख्याल है कि यदि सबके सब बिना पढ़े रह जाएँ, तो दुनिया में शांति कायम रह सकती है, क्योंकि तब आदमी की अक्ल का विस्तार सीमित होगा। वह सीमित क्षेत्र में ही बुराइयाँ करेगा, क्योंकि उसकी अक्ल का विस्तार ही नहीं हुआ है। तो क्या मैं शिक्षा विरोधी हूँ? क्या मैं साक्षरता विरोधी हूँ? नहीं, मैं शिक्षा का विरोधी नहीं हूँ, परंतु शिक्षा को अपने अंदर आत्मसात् करने का गुण होना चाहिए। शिक्षा के साथ मनुष्य में जिम्मेदारी भी आनी चाहिए-इसका मैं हिमायती हूँ। बहुत सारी चीजें दुनिया में हैं। देवता आपको हजम करने की शक्ति देते हैं। दुनिया की दौलत को हजम करने की भी विशेषता आप में होनी चाहिए। यदि देवत्व आपको प्राप्त हो जाए, तो आप संसार की समस्त वस्तुओं से लाभान्वित हो सकते हैं। इन्हीं सब बातों पर चलकर आप "पूर्णमिदं" बन सकते हैं।

आज की बात समाप्त

ॐ शांति

भक्ति का वास्तविक तात्पर्य समझें

(कल्प साधना सत्र अप्रेल १९८२) शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

जो आदमी को भगवान् से जोड़े

देवियो, भाइयो! ज्ञानयोग, कर्मयोग के संदर्भ में मैं आप से पिछले दिनों चर्चा कर रहा था कि आपको दूरदर्शी तथा विवेकवान् होना चाहिए। आपको अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग होना चाहिए, जैसे कि महापुरुष अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहते हैं। ज्ञानयोग और कर्मयोग के बाद एक मुख्य योग रह जाता है, जिसका नाम—भक्तियोग है। हम उस योग की बात कर रहे हैं, जो आदमी को भगवान् से जोड़ देता है। आत्मज्ञानी इनसान को भगवान् से जोड़ देता है। आज हम इसी भक्तियोग के बारे में आप से चर्चा करना चाहते हैं। आज भक्ति के संदर्भ में लोगों के विचार विकृत हो चुके हैं। आज भावसंवेदना को, रोने को लोगों ने भक्तिभाव समझ रखा है। देवी के सामने नाक रगड़ना, उनके सामने रोना—यह भक्ति नहीं कहलाती है। उलटा बैठ जाना, सीधा बैठ जाना, आँसू बहाना—यह भक्ति नहीं है। यह भावुकता है, भक्ति नहीं। जहाँ तक आध्यात्मिक प्रगति एवं भक्ति के स्वरूप का संबंध है, यह सही नहीं है।

परिभाषा भक्ति की

भक्ति किसे कहते हैं—इसका सीधा सादा मतलब है प्यार-मोहब्बत। जिसके अंदर यह होता है, वह भावना से लबालब भरा होता है। प्यार से बड़ी कोई चीज नहीं है। इसी की तलाश में जीवात्मा रहता है। आनंद प्राप्त करने के लिए मनुष्य इंद्रियों का भोग करता है, सिनेमा देखता है, कामवासना के फेर में रहता है। परंतु अगर आप तीन घंटे से ज्यादा सिनेमा देखेंगे, तो आँखें खराब होने लगेंगी। इसी तरह कामवासना का भी आनंद थोड़े समय-चंद मिनटों का होता है। परंतु जीवात्मा को जो स्थिर एवं चिरस्थायी आनंद परमात्मा को प्राप्त करने पर मिलता है, उसे भक्ति कहते हैं। आपने अगर इसको अनुभव करके देखा होता, तो मजा आ जाता। आपको अपने आपसे, अपनों से प्यार होता है। अपनी मोटर से, साइकिल से प्यार होता है। आप इसी तरह हर व्यक्ति को अपना

मानिए। अगर पड़ोसी के बच्चे को भी अपना मानेंगे, तो आपको आनंद होगा। अगर कोई अपना आदमी घर में आ जाता है, तो आपको मजा आ जाता है। वास्तव में आनंद अपनेपन से होता है। अपना एवं पराये का जो फरक है, वह बहुत बड़ा है। जहाँ टार्च का प्रकाश पड़ता है, वहाँ की चीजें दिखाई पड़ती हैं। जहाँ प्रकाश नहीं पड़ता है, वहाँ अंधकार छाया रहता है। मित्रो! आप प्यार का टार्च जहाँ कहीं भी डालेंगे, जिस चीज पर भी डालेंगे, वह चीज आपको प्यारी एवं बढ़िया-आनंददायक मालूम पड़ेगी। मजनूँ-लैला कोई खास सुंदर नहीं थे, परंतु दोनों को एक-दूसरे से प्यार था, इसलिए दोनों एक-दूसरे पर मरने-खपने के लिए तैयार रहते थे।

रसो वै सः

मित्रो! भगवान् एक रस का नाम है, जिसे शास्त्रकारों ने 'रसो वै सः' बतलाया है। रस किसे कहते हैं? आनंद को कहते हैं। यह आनंद कहाँ है? भगवान् में है। अगर आप भगवान् के साथ आत्मीयता जोड़ लें, तो आपको भगवान् की भक्ति का आनंद मिल जाएगा। हम भगवान् के हैं तथा भगवान् हमारे हैं, यदि ऐसी भावना मनुष्य के भीतर आ जाए, तो मजा आ जाता है। मीरा ने भगवान् को अपना पति मान रखा था। इस कारण से उस प्यार के लिए भगवान् और मीरा दोनों भूखे थे। यही भक्ति है। मित्रो! जरासंध एवं कंस ने कृष्ण भगवान् को पराया माना था, इस कारण उसे उनसे राग-द्वेष था। अपने होते हुए भी वे पराए लगते थे, फिर आनंद एवं प्यार कहाँ से उभरता? आनंद एवं प्यार एक ही चीज का नाम है। अगर आपको आनंद पाना है, तो प्यार का माद्दा बढ़ाना पड़ेगा। यह दिखाना नहीं पड़ता, वरन् अंदर से उपजता है और बिना प्रतिदान की इच्छा के अपना सब कुछ औरों पर उँड़ेल देता है। उदाहरण के लिए, अगर आपने अपने शरीर से जरा भी प्यार किया है, तो जब उसमें जरा-सी भी गड़बड़ी हो जाती है, तो आप उसको ठीक करते हैं, दवा खाते हैं, सवाँरते हैं, बाल बनाते हैं। इसका कारण यह है कि हम अपने शरीर को अपना मानते हैं। अपनेपन का माद्दा जहाँ कहीं भी होता है, वहाँ आनंद एवं प्यार बरसता रहता है। गेंद जब दीवार पर फेंकी जाती है, तो वह लौटकर आपके पास आ जाती है। गुंबज में जो आवाज लगाई जाती है, वैसी ही आवाज लौटकर प्रतिध्वनि के रूप में हमें पुनः सुनाई देती है। अर्थात् वह वापस आ जाती है।

प्रतिध्वनि का सिद्धान्त

मित्रो! ठीक उसी प्रकार जब हम किसी को प्यार करते हैं, मोहब्बत करते हैं, तो वह भी उसी गुम्बद की आवाज की तरह हमारे पास वापस आ जाती है। कहने का मतलब यह है कि हम जिसे प्यार करते हैं, वह भी हमें प्यार करता है। इस संसार में अगर आप लोगों को राग-द्वेष के रूप में देखेंगे, तो सारे संसार में आपको राग द्वेष ही मिलेगा। अगर आप लोगों की उपेक्षा करना आरंभ कर देंगे, तो आपको चारों तरफ उदासी, सूनापन तथा उपेक्षा ही मिलेगी। सब माया तथा मिथ्या दिखलाई पड़ेगा। परंतु अगर आपकी भावनाएँ ठीक होंगी, तो आपको हर जगह राम एवं सीता दिखलाई पड़ेंगे। जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है—

सीयराम मय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥

मोहब्बत करना सीखिये

साथियो! अभी तक आपने अपना दायरा अपने शरीर तथा अपने कुटुंब तक सीमित रखा है। उस दायरे को बढ़ा दीजिए। अपने आपको सारे संसार के रूप में बढ़ा दीजिए। स्वामी रामतीर्थ अपने आपको रामबादशाह कहा करते थे। किसका बादशाह हूँ? बादलों का, आकाश का बादशाह हूँ, यह कहा करते थे। आप गंगाजी का पानी निहारना चाहें, सड़क पर चलना चाहें, बादलों को निहारना चाहें, तो आपको कौन रोक सकता है? आप किसी के काम आएँ, किसी से मीठे वचन बोलें, चिड़ियों को दाना डाल दें, तो आपको कौन रोक सकता है? यह सत्य है कि अगर किसी के घर में घुसें या किसी का सामान आदि चुरा लें, तो आपको कोई रोक भी सकता है, कानून के हवाले कर सकता है, परंतु आप अगर अच्छा काम करेंगे, तो आपको कौन रोक सकता है? आप जिससे भी मोहब्बत करेंगे, उसके लिए हमेशा सेवा के लिए तैयार रहेंगे। मित्रो! प्यार का वास्तविक स्वरूप सेवा में ही दिखलाई पड़ता है। इसके द्वारा ही प्यार में निखार आता है। प्यार करने की पहचान ही यह है कि आप उसकी सेवा करना चाहते हैं या नहीं? प्यार करने वाला अपना अनुदान दूसरों को देता है। प्यार करने वाला स्वयं कष्ट उठाता है तथा दूसरों को सुखी बनाता है। प्यार सेवा सिखलाता है, प्यार अनुदान देना सिखाता है। देशभक्ति, विश्वभक्ति, भगवान् की भक्ति इसी का तो नाम है। अगर आपको हैरानी होती है, तो हो जाए, परंतु आप

अपने बच्चे, देश, सारे संसार को सुखी बनाने का प्रयास करते हैं, तो वही भक्ति कहलाती है। इस दुनिया की सर्वश्रेष्ठ चीज यही है।

भक्ति से पुण्य-परमार्थ

इस प्रकार भक्तियोग न केवल मानसिक तथा भावनात्मक संपदा है, वरन् उसके आधार पर परमार्थ तथा पुण्य का मौका भी मिलता है। आप भक्ति कीजिए तथा सेवा कीजिए, यह दोहरा लाभ प्राप्त होता है। प्यार का वास्तविक अर्थ यही है। मनुष्य का मोह एवं बंधन उसके साथ ही होता है, जिसके साथ उसका प्यार तथा मोहब्बत होता है। शंकर भगवान् की हम उपासना करते हैं, तो हमें शंकर की भक्ति के साथ भूत-पलीत लोगों की अर्थात् गए-गुजरे लोगों की, गरीब एवं पिछड़े लोगों की भी हमें सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जिनकी समझदारी कम है, उनको ऊँचा उठाना चाहिए। उनकी सेवा करनी चाहिए। शास्त्र में कहा गया है—'भज सेवायाम्' अर्थात् हमें भजन के साथ सेवा भी करनी चाहिए। दोनों एक ही चीज हैं। अगर हम भक्ति करते हैं तथा समाज की, पिछड़े लोगों की सेवा नहीं करते हैं, तो हमारा भजन सार्थक नहीं हो सकता है।

सेवा हम किसकी कर सकते हैं? मित्रो! इस दुनिया में व्यक्ति उसकी ही सेवा कर सकता है, जिससे वास्तव में उसकी मोहब्बत है। अतः आप अपने मोहब्बत का दायरा बढ़ाइए। जैसे-जैसे आपका यह दायरा बढ़ेगा, आप सेवाभावी बनते चले जाएँगे एवं जैसे-जैसे आप सेवाभावी बनते चले जाएँगे, आपकी भक्ति भी बढ़ती चली जाएगी।

अभ्यास प्रभु के दंगल में

भक्ति का अभ्यास हम भगवान् से करते हैं। यह व्यायामशाला है। जिस प्रकार पहलवान व्यायामशाला में जाकर कसरत करता है, मसक्कत करता है तथा अपने स्वास्थ्य को ठीक कर लेता है। उसी प्रकार मनुष्य भगवान् के साथ भक्ति यानी मोहब्बत करके समाज के बीच में भी जाकर प्यार एवं मोहब्बत करता है, कर सकता है। भगवान् आदर्शों के—सिद्धांतों के समुच्चय को कहते हैं। भगवान् की कोठरी में बैठकर हम वे चीजें सीखते हैं जिनका व्यावहारिक स्वरूप जाकर हम समाज के बीच प्रस्तुत करते हैं। भगवान् कोई व्यक्ति नहीं है। वह तो एक नियामक सत्ता है, एक कायदा है, एक कानून है। भगवान् तो सेवा का नाम है। आप उसे मिठाई क्या खिलाएँगे? मुकुट क्या पहनाएँगे? यह आपकी भूल है। इसे सुधारना आवश्यक है।

आदर्शों का समुच्चय भगवान्

पूजा-उपासना के समय, भक्ति के समय आपने कोई मूर्ति या चित्र रखा है, तो इसमें कोई हर्ज की बात नहीं है, परंतु आप भगवान् को आदर्श एवं सिद्धांतों का समुच्चय मानिए। आपने अगर भगवान् शंकर को व्यक्ति विशेष माना है, तो आप भ्रम-जंजाल में पड़ जाएँगे। अगर शंकर भगवान् को आपने ऐसा माना है कि वह एक व्यक्ति है, जो बैल पर बैठकर इधर-उधर घूमता रहता है। बेल का पत्ता, आक का पत्ता, धतूरे का फूल खाता रहता है। उसके माथे पर चंद्रमा है, सिर से गंगा निकल रही है तथा भूत-प्रेत उसके साथ रहते हैं। यदि आप ऐसा मानने लगेंगे, तो आप भ्रम एवं जंजाल में पड़ जाएँगे।

शिवजी के अलंकारिक प्रतीक

मित्रो! आपको शंकर भगवान् की आदर्श एवं सिद्धांतों का एक समुच्चय मानना चाहिए साथ ही आपको यह समझना चाहिए कि शंकर भगवान् के सिर से गंगा निकलने का अर्थ—ज्ञान का प्रवाह, गले में मुंडमाला का अर्थ—हमेशा मौत को गले लगाना, बैल की सवारी के माने-परिश्रमी बनना, चंद्रमा का मतलब—मानसिक संतुलन, भूत-प्रेत का मतलब—गए गुजरे एवं पिछड़े लोगों को गले लगाना तथा उनके विकास के बारे में सोचना, श्मशान में निवास का मतलब—वीरान में रहकर भी समाज के विकास के बारे में सोचना है। यही है शंकर भगवान् की विशेषता, जिसे हर भक्त को सोचना चाहिए।

इसी प्रकार हर भगवान् के बारे में यही बात है। हर भगवान् इसी तरह आदर्शों एवं सिद्धांतों का एक समुच्चय है, चाहे वह गणेश जी हों, हनुमान जी हों, रामचंद्र जी हों या भगवान् श्रीकृष्ण जी हों। इसी प्रकार हर देवी एवं देवता तथा अवतारों को आपको मानना चाहिए। आप जिस भी देवता की भक्ति करते हैं, उसका मतलब समझते हैं, उस देवता के सिद्धांतों एवं आदर्शों को मानते हैं, उस रास्ते पर चलते हैं। वास्तव में यही सच्ची भक्ति कहलाती है। अगर उन सिद्धांतों के प्रति, आदर्शों के प्रति आपकी श्रद्धा, आस्था का विकास होता चला जाएगा, तो आपकी भक्ति भी बढ़ती हुई चली जाएगी। अगर आप वास्तव में ऐसी भक्ति करेंगे, तो आपको फायदा होगा। आप सच्चे अर्थों में भगवान् के भक्त कहलाएँगे। मरने के बाद आप स्वर्ग-मुक्ति में जाएँगे या नहीं, कह नहीं सकता, परंतु आपको इसी जीवन में चारों ओर ऐसा नजारा नजर आएगा कि चारों तरफ स्वर्ग है। आपको चारों ओर दिव्य वातावरण दिखाई पड़ेगा। आप निहाल हो जाएँगे।

राग-द्वेष से दूर

मित्रो! आप किसी के प्रति नफरत न करें। आप व्यक्ति से नहीं, उसकी बुराइयों से नफरत कीजिए तथा उसमें सुधार लाने का प्रयास कीजिए। आप प्यार के आधार पर भी लोगों को बदल सकते हैं। आप किसी से राग-द्वेष न करें। आप ऐसा काम करें कि उसके व्यक्तित्व की रक्षा भी हो जाए तथा उसकी बुराई भी दूर हो जाए। गाँधी जी ने इसी प्रकार अँगरेज़ों से प्यार की लड़ाई लड़ी, प्यार का अनुदान दिया। उसके बाद क्या हुआ? मित्रो! अँगरेज भारत छोड़कर चले गए। प्यार बहुत बड़ा संबल होता है, यह आप न भूलें। प्यार से मनुष्य के अंदर शांति आती है, उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। मित्रो! हमने गायत्री माता से प्यार किया है और सारे समाज की सेवा की है। आप भी चाहें तो इसी प्रकार आनंद की अनुभूति कर सकते हैं तथा सब ओर से प्यार तथा आनंद प्राप्त कर सकते हैं। अगर आप अपने दृष्टिकोण तथा विचार बदल दें तथा सभी लोगों से प्यार करें, तो आप अमृतपान कर सकते हैं। यह अमृत चारों ओर बिखरा पड़ा है। आप चाहें तो उस अमृत को पी सकते हैं तथा दूसरों को भी पिला सकते हैं। यह है भक्तियोग, यह है प्यार मोहब्बत। आप चाहें तो इसे अपनाकर अपने जीवन को महान् बना सकते हैं, आत्मविकास कर सकते हैं।

आज की बात समाप्त।

ॐ शान्तिः

कैसे करें कायाकल्प?

(कल्पसत्र के दौरान १९८२ में दिया गया उद्बोधन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

बंधन से बड़ा कोई दुख नहीं

देवियो, भाइयो! मनुष्य को दो दुःख है। एक दुःख का नाम 'नरक' है और दूसरे का नाम 'बंधन'। इन दोनों चीजों से आदमी निकल जाए, तो सारे संसार में सुख-ही-सुख है। बंधन क्या है? बंधन वह है, जिसमें हम और आप जकड़ जाते हैं। कल्पना कीजिए उस पक्षी की, जो पिंजड़े में बंद किया हुआ है। जो कुछ आता या मिलता है, खा लेता है। दाना तो खा लेता है, लेकिन बंधन में जकड़ा हुआ होने की वजह से कुछ कर नहीं पाता। बंधन की वजह से न कहीं खुली हवा ले पाता है, न कहीं बादलों को देख पाता है। कुछ नहीं देख पाता, केवल छोटे-से पिंजड़ें में दिन गुजारता रहता है।

बंधन से बँधा हुआ व्यक्ति कैसा होता है? जेलखाने के कैदी के बारे में आप जानते हैं न, वह चारों ओर से जकड़ा हुआ होता है। हाथ जिसके बँधे हुए हैं, पैर जिसके बँधे हुए हैं। गले में जिसके रस्सा पड़ा हुआ है। आजकल तो इतना नहीं होता है, लेकिन पुराने जमाने में जेलखाने में जो आदमी रखे जाते थे, उनके हाथों में हथकड़ियाँ हर समय पड़ी रहती थीं। वे कुछ कर नहीं सकते थे। पैरों में बेड़ियाँ पड़ी रहती थीं। गले में रस्सा पड़ा रहता था। बेचारा कुछ कर नहीं सकता था। जैसे घोड़े को अगाड़ी व पिछाड़ी लगाम लगा देते हैं, उसी तरह से कैदी को रहना पड़ता था। जो लोग उस जमाने में रहते थे, आप उनके दुख की कल्पना कर सकते हैं कि तब मन को कितना मसोसना पड़ता होगा।

बंधनमुक्ति से जुड़े भ्रम

मित्रो, हमारी योग्यता, प्रतिभा, भगवान् का दिया हुआ संसार और हमारी क्षमता—इन सबका हम कुछ भी उपयोग नहीं कर पाते हैं। सब कुछ गड़बड़ा जाता है। तब क्या करना चाहिए? हमारे शास्त्रों में आदमी के लिए सबसे बड़ा पुरुषार्थ एक ही बताया गया है। वह क्या बताया गया है? वह है- 'बंधनों से मुक्ति'। बंधनों से अगर मुक्ति मिल जाए, तो आदमी कितना सुखी हो सकता है! मुक्ति का अर्थ लोग कुछ और तरह से समझते हैं। सायुज्य मुक्ति,

सारूप्य मुक्ति, की कल्पना इस तरीके से लोगों ने अपने में बिठा रखी है कि भगवान् नाम का कोई व्यक्ति है। उसका एक बड़ा-सा कोई बैकुंठ नाम का गाँव है। इस गाँव में फालतू फंड के आदमी बैठे रहते हैं। भगवान् के समीप बस बैठे रहते हैं, न कुछ करते हैं और न करने देते हैं। बस उनके पास में सान्निध्य मुक्ति, सालोक्य मुक्ति के लोभ में रहते हैं। खाने-पीने की सब चीजें भरी पड़ी हैं। बस उसी में लगे रहते हैं। ये सालोक्य मुक्ति है, सारूप्य मुक्ति है। इसका रूप कैसा है? इसका रूप भगवान् जैसा है। भगवान् का रूप बहुत सुंदर है। हमारा भी रूप बहुत सुंदर हो गया है। खाने-पीने की सारी व्यवस्था सालोक्य में है। हम भी उसी में शामिल हो गए। सामीप्य में चौबीस घंटे बैठे रहे। क्या सुगंध आ रही है, पंखे झल रहे हैं, भगवान् जी के समीप। इस तरह की कल्पना मुक्ति के संबंध में लोगों ने कर रखी हैं। वास्तव में यह कल्पना बच्चों जैसी है। इससे क्या लाभ हो सकता है?

मुक्ति का मर्म व माहात्म्य

मुक्ति का माहात्म्य हर एक आध्यात्मिक शास्त्र ने सिखाया है और यह बताया है, सुनाया है कि जो आदमी मुक्ति के अधिकारी हो जाते हैं, वे जीवन में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। जीवन-मुक्त और भगवान् की प्राप्ति समान अर्थों में ली गई है। जीवनमुक्त किसे कहते हैं? जीवन मुक्त उसे कहते हैं जिसका जीवन बंधनों से छूट गया, जो पिंजड़े में से निकल गया, जो जेलखाने से छूट गया। जो बच्चा माँ के पेट में छोटे-से दायरे में बैठा रहता है, वह न हिल सकता है, न डुल सकता है, न बोल सकता है, न बात कर सकता है, न साँस ले सकता है। उसमें से जब डिलिवरी हो जाती है, जन्म हो जाता है, तब वह मुक्त हो जाता है। आप सांसारिक मुक्ति का अर्थ समझ गए होंगे न? अच्छा, अब उसकी बात सोचिए कि मोह से मुक्ति क्या है? बंधनों से मुक्ति क्या है? बंधनों से मुक्ति यह है कि जिस तरीके से हमारी विचारणाएँ, भावनाएँ हैं और हमारी क्रियाशीलताएँ हैं, जिन बंधनों से जकड़ गई हैं, उन बंधनों को हम तोड़ डालें, छोड़ दें, तो हम जीवनमुक्त हो जाते हैं। असल में यही जीवनमुक्ति है। लोगों का जो ये ख्याल है कि स्वर्ग में जा करके मुक्ति मिलती है, व्यक्ति स्वर्ग में कहीं बैठा रहता है या भगवान् जी के मालगोदाम में कहीं जमा हो जाता है। बेटे! न कहीं भगवान् जी का मालगोदाम है और न कहीं आदमी बैठे रहते हैं। मुक्ति केवल जीवन में ही होती है। जीवनमुक्त आदमी होते हैं, जिनको ऋषि कहते हैं, तत्त्वदर्शी कहते हैं, जिनको मनीषी कहते हैं। मुक्ति केवल मानव जीवन में ही संभव है।

तोड़ दीजिए बंधन

तो क्या करना चाहिए? यही तो मैं आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि क्या करना चाहिए। आपको तीन बंधनों से छुटकारा पा लेना चाहिए। आप यहाँ शांतिकुंज में आए हुए हैं, कल्पसाधना कर रहे हैं, उपासना कर रहे हैं, तो आपको क्या करना चाहिए? आपको तीन बंधनों से मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए। आप कोशिश कीजिए कि तीनों बंधन तोड़ दें। अगर आप चाहें तो इन तीन बंधनों को तोड़ सकते हैं। मकड़ी जाला स्वयं बनाती है और उसमें स्वयं फँस जाती है और फँसने के बाद में जब उसका मन आता है कि जाला हमारे लिए नुकसानदायक है और जाले में हमको नहीं रहना चाहिए, तो वह क्या करती है कि सरे-के-सारे जालो को अपने मुँह में समेट लेती है और निगल जाती है तथा भाग खड़ी होती है। मित्रो! यह हमारा बंधन भी, जो चारों ओर से हमको जकड़े हुए है, असल में किसी और बाहरी शक्ति की देन नहीं है। किसी बाहरी शक्ति में इतनी गुंजाइश और दम नहीं है कि वह आदमी को जकड़ सके। भगवान् के बेटों को भला कौन जकड़ सकता है? बंधनों में जकड़ने के लिए उसका अपना ही अज्ञान, अपनी ही बेवकूफी, अपने ही कुसंस्कार हैं। जिसने आपको जकड़ लिया है। वे कौन-कौन से बंधन हैं? उनमें से एक का नाम है-'लोभ', एक का नाम है-'मोह' और एक का नाम है-'अहंकार'। ये तीन हमारे शत्रु हैं। गीता के तीसरे अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है-

तीन सबसे बड़े बैरी

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

ये तीनों ही सबसे बड़े बंधन और बैरी हैं। अपने इन तीनों बैरियों से-रावण कुंभकरण और मेघनाद से अगर आप निपट लें, तो मजा आ जाएगा। अगर आप कंस, जरासंध आदि से निपट लें, तो मजा आ जाएगा। ये तीन आपके दुश्मन हैं। उन्होंने आपकी जिंदगी को कैसा भयानक बना दिया है? कैसा पिछड़ा बना दिया है? कितना अस्त-व्यस्त बना दिया है? अगर ये आपके जीवन को अस्तव्यस्त न बनाएँ, तो आप अपने आप को देख सकते हैं कि आपके जीवन में कितना कायाकल्प हो सकता है और आप वर्तमान परिस्थितियों की तुलना में थोड़े दिनों में कहाँ-से-कहाँ पहुँच सकते हैं। आप इन दुश्मनों से आगाह हो जाइए और इन्हें तोड़ने के लिए कोशिश कीजिए।

लोभ क्या है और इसे किस तरीके से तोड़ा जाए? लोभ कहते हैं— अनावश्यक संग्रह को। लोभ यही है कि आदमी को गुजारे के लिए मुट्ठी भर चीजों की जरूरत है। मुट्ठी भर चीज चाहिए उसे। मुट्ठी भर से गुजारा हो जाता है। आदमी का पेट कितना छोटा होता है? भैंसे का पेट कितना बड़ा है? गधे का पेट कितना बड़ा है? घोड़े का पेट कितना बड़ा है? परंतु आदमी का पेट कितना छोटा है। जरासा है। उसके लिए थोड़ा-सा चार मुट्ठी अनाज काफी होना चाहिए। लेकिन आदमी के लोभ को देखा है न आपने, वह कितना लालची, कितना संग्रही, कितना विलासी होता है। कितना जमा कर ले, चौबीसों घंटे जमा करने के लिए मरता, खपता और छटपटाता रहता है।

लालच भी एक तरह की शराब

संसार में बहुत से नशे हैं, जिनकी लोगों को हविश हो जाती है। शराबियों को नशे की हवस हो जाती है और वह बार-बार शराब माँगता है। इसी तरीके से लालच एक शराब है। आदमी की जरूरत क्या है और कितनी है? कुछ भी नहीं। व्यर्थ में अपने अहंकार को बढ़ाने के लिए, अपनी औलाद को और अपने घरवालों को तबाह और बरबाद करने के लिए, पीछे कलह उत्पन्न करने के लिए और दुर्व्यसन पैदा करने के लिए केवल धनसंग्रह करता रहता है। जिंदगी का सारे-का-सारा हिस्सा इसी में खर्च हो जाता है। आपको इस लालच में खर्च को छोड़ना पड़ेगा। आपको इस लोभ को छोड़ना पड़ेगा।

इसके लिए आपको क्या करना पड़ेगा? आप क्या करेंगे? आपको सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धांतों को स्वीकार करना पड़ेगा। ऊँचे विचार सिर्फ उस आदमी के पास आ सकते हैं, जो सादा जीवन जिए। सादा जीवन का मतलब ठाटबाट से नहीं है, वरन् इसका मतलब लोभ और लालच से है। आप लोभ और लालच अपने मन से निकाल दें और निर्वाह की बात सोचें, तो आप थोड़े-से घंटे मेहनत करने के बाद में अपना पेट बड़े मजे में भर सकते हैं। रही कुटुम्बियों की बात, तो कुटुंबियों की बात भी वैसी ही है, जिसको 'मोह' कहते हैं। लोभ का बढ़ा हुआ दायरा, जो कुटुंब तक फैल जाता है, उसका नाम 'मोह' है और जो अपने आप तक सीमित रहता है, धन तक सीमित रहता है, उसका नाम 'लोभ' है और जो कुटुंबियों तक फैल जाता है, उसका नाम मोह है।

मोह से बचें

कुटुंबियों के प्रति आपकी जिम्मेदारियाँ तो हैं, ये तो मैं नहीं कहता कि आपकी जिम्मेदारी नहीं है। जिम्मेदारी तो आपकी सबके प्रति है। आपकी जिम्मेदारी आपके शरीर के प्रति भी है, मस्तिष्क के प्रति भी है। जीवन के प्रति भी आपकी जिम्मेदारी है। भगवान् के प्रति भी आपकी जिम्मेदारी है। आपकी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। इन सभी जिम्मेदारियों को आप सहयोग से निभाइए। उसमें आपका कुटुंब भी शामिल है। कुटुंबियों के शामिल होने का मतलब यह नहीं है कि कौन कैसा है? उन सबका लालच आप पूरा करते हैं क्या? कुटुंबियों का लालच आप मत पूरा कीजिए। कुटुंबियों की अनावश्यक आवश्यकताओं को और अनावश्यक माँगों को आप मानने से इनकार कर दीजिए। तो आप क्या करेंगे? अगर वे माँगते हैं, तो भी नहीं और नहीं माँगते हैं, तो भी नहीं। जिस चीज की जरूरत है उसे दीजिए।

शिक्षित बनाइये

आपके कुटुंबियों को किसकी जरूरत है? आपके कुटुंबियों को तीन चीजों की जरूरत है। पहली जरूरत है शिक्षा। आपके कुटुंबियों को शिक्षित होना चाहिए। स्कूली शिक्षा की बात तो मैं नहीं कहता, पर मैं यह कहता हूँ कि स्कूली शिक्षा अगर आपके पास में न भी हो, तो भी जिसको शालीनता कहते हैं, सभ्यता कहते हैं, सज्जनता कहते हैं, वह तो होनी ही चाहिए। शिक्षा का मतलब सभ्यता, शालीनता और सज्जनता से है। आप अपने घरवालों को बनाइए। उनका व्यवहार ऐसा बनाइए, उनके सोचने का तरीका ऐसा बनाइए, जानकार बनाइए, शिक्षित बनाइए। अगर ये बना देते हैं, तब हम समझते हैं कि आपने अपने घरवालों को आजीविका से भी ज्यादा, जीवन बनाने से भी ज्यादा, रेशम के कपड़े बनाने से भी ज्यादा, सोने-चाँदी के जवाहरात बनाने से भी ज्यादा आपने उनकी मदद की। इसलिए आपको मोह की अपेक्षा शिक्षा में खर्च करना चाहिए।

स्वावलम्बी बनाइये

मित्रो! शिक्षा के साथ-साथ में क्या करें? अपने हर कुटुंबी को स्वावलंबी बनाइए। किसी को परावलंबी मत बनने दीजिए। आप अपनी पत्नी को स्वावलंबी बनाइए, गुड़िया मत बनाइए। उसको आप यह मत कहिए कि आपको पानी नहीं भरना है, खेती नहीं करती है। आप खाना मत बनाइए। कपड़े आपके

नौकरानी धोएगी। बस, आप पंखे के नीचे बैठे रहा करिए। ऐसा मत कीजिए। आप उसे स्वावलंबी होने दीजिए। भगवान् न करे कभी ऐसा खराब दिन आ जाए जब आप न हों। भगवान् न करे कि ऐसा दिन आ जाए कि आपकी संपत्ति चली जाए। फिर आप क्या करेंगे? आपने तो अपनी स्त्री को घूँघट में रख करके अपाहिज बना दिया। उसे मेहनत नहीं करने दी, परिश्रम नहीं करने दिया। उपार्जन के लिए योग्य बनाया नहीं, क्षमता बढ़ाई नहीं। आज हर आदमी के अंदर उपार्जन की क्षमता उत्पन्न होनी चाहिए। आप अपने कुटुंबियों में से हर एक में उपार्जन की क्षमता उत्पन्न होने दीजिए, बढ़ने दीजिए। बच्चे जरा बड़े हो गए हैं, तो उनको हाथ बँटाने दीजिए, ताकि जो वे घर का अनाज खाते हैं,उस संस्था का जरा सहयोग तो करें। उन्हें कुट्टी कूटना सिखाइए, पानी भरना सिखाइए, शाक-वाटिका लगाना सिखाइए, कपड़े धोना सिखाइए, ताकि वे अपने घर की आर्थिक स्थिति में कुछ मदद कर सकें। आप उन्हें स्वावलंबी बनाइए, परिश्रमशील बनाइए।

यह आपका कर्त्तव्य है।

साथियो! अगर आपने अपने घर-गृहस्थी वालों को स्वावलंबी नहीं बनाया है, तो यह आपका मोह है। अगर आप अपने घरवालों की अनावश्यक इच्छाओं को पूरा करने के लिए जेवर खरीदने से लेकर सिनेमा दिखाने तक अर्थात् वे चीजें जो उनके जीवन को विकसित करने के लिए आवश्यक नहीं हैं, केवल उनके मनोरंजन के लिए, उनकी हविश और जो बुरी आदतें हैं, उनको पूरा करने के लिए जो वे माँगते हैं, आप उसको पूरा कर देते हैं, तो वह आपका 'मोह' हो जाता है। इसके स्थान पर आप उन्हें संस्कारवान् बनाइए, सभ्य बनाइए, शिक्षित बनाइए, स्वावलंबी बनाइए, अगर आप ये तीनों काम करने के लिए जितनी मेहनत करते हैं, हम समझते हैं कि आप अपने कुटुंबियों के लिए कर्त्तव्यपालन कर रहे हैं।

आत्मा की प्रसन्नता के लिए जियें

अगर आप कुटुंबियों की हविश, कुटुंबियों की इच्छा और कुटुंबियों का दबाव इसलिए पूरा करते हैं कि कुटुंबी आपसे प्रसन्न रहेंगे और प्रसन्न रह करके बच्चे आपकी आज्ञा मानेंगे और औरत आपकी कामवासना की पूर्ति के लिए मदद करेगी, इसलिए आपको उन्हें प्रसन्न करना चाहिए, तो आप गलती करते हैं। आप किसी को मत प्रसन्न कीजिए। प्रसन्न करना है, तो अपनी आत्मा

को प्रसन्न कीजिए, अपने परमात्मा को प्रसन्न कीजिए। इसके अलावा इस संसार में आप जितना ही लोगों को प्रसन्न करने की कोशिश करेंगे, उतना ही आप हैरान होंगे और उतने ही आप खाली हाथ रह जाँएगे। इसलिए लोभ और मोह के दो बंधनों से लालच मत कीजिए। समय पर अगर आप अपने दिमाग को खाली कर दें कि हमको गुजारे भर के लिए कमाना है, तो आपका दिमाग, आपकी स्कीम, आपकी योजनाएँ, आपका परिश्रम और पुरुषार्थ सब बच जाएगा। फिर उस बची हुई शक्ति को-क्षमता को आप उन कामों में लगा सकेंगे, जिससे आपकी आत्मा की उन्नति होती है और समाज के प्रति अपना कर्त्तव्यपालन होता है और भगवान् के आदर्शों का निर्वाह होता है। उससे कम में काम बनेगा नहीं।

लालच बुरी बला

आपका लालच चाहे पूरा हो या न होता हो, यह तो मैं नहीं कहता कि आप संपन्न हो गए हैं कि नहीं हो गए हैं, पर आप लालची मुझे जरूर मालूम पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में आप संपन्न कैसे हो जाएँगे? अक्ल तो है नहीं, योग्यता तो है नहीं, विद्या तो है नहीं, पुरुषार्थ है नहीं, परिश्रम है नहीं, चांस है नहीं, पूँजी है नहीं तो कैसे धनवान् हो जाएँगे? आप तो गरीब-के-गरीब रहने वाले थे और गरीब ही रहने वाले हैं। क्योंकि आदमी को संपन्न बनाने के लिए तो अनेक साधन चाहिए। आपके पास तो कुछ भी साधन नहीं हैं, फिर संपन्न कैसे बनेंगे? परंतु अगर आपने लालच छोड़ दिया होता, तो आप इतने ही साधनों में कम-से-कम समय में गुजारा कर सकते थे। लालच अभी जितना आपका समय खा जाता है, शक्ति खा जाता है, बुद्धि खा जाता है, उस सबको आपने बचा लिया होता। बचाने के बाद में वह काम कर लिया होता, जो असंख्य लोगों ने किया है, पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए भी।

बदलिए अपने आपको

कबीर की भी शादी हो गई थी। जवाहरलाल नेहरू की भी शादी हो गई थी। गाँधी जी की भी शादी हो गई थी। शंकर भगवान् की भी शादी हो गई थी। रामचंद्र की भी शादी हो गई थी। हमारी भी शादी हो गई है। शादी होना और पेट भरना इतना बड़ा काम नहीं है कि जिसके लिए यह कहा जा सके कि हमारी सारी शक्ति और सारी बुद्धि, सारा परिश्रम और सारा पुरुषार्थ इसी में खर्च हो जाता है। वस्तुतः ये लोभ और मोह के व्यामोह के दो बंधन हैं, जो न आपकी

अक्ल को चलने देते हैं, न परिश्रम को चलने देते हैं। आपका सारा परिश्रम लोभ के लिए विसर्जित हो गया, आपकी अक्ल और आपकी भावना मोह के लिए विसर्जित हो गई। लोभ के लिए आपका शारीरिक श्रम विसर्जित हो गया, मोह के लिए भावनाएँ एवं मानसिक क्षमता विसर्जित हो गई, तो फिर क्या रह गया आपके पास? तोड़िए न इन बंधनों को। आप यहाँ रह करके इस कल्पसाधना में अपने आपको बदल दीजिए और लोभ एवं मोह के बंधनों से अपने आपको पीछे हटाइए। मित्रो! मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि आपको पेट भरने के लिए गुजारा नहीं करना चाहिए। गुजारा करना एक बात है और लालच के लिए मरते-खपते रहना दूसरी बात है। आपको अपना कुटुंब सीमित रखना चाहिए, फिर आप क्यों बढ़ाते चले जाते हैं? किसने कहा था आपको रोज बच्चे पैदा करने के लिए? आप बिना बच्चों के जिंदा नहीं रह सकते क्या? कम बच्चों से आपका गुजारा नहीं हो सकता? आपके जो कम बच्चे हैं, उनको आप क्या पर्याप्त नहीं मान सकते? हमारा कहना मानिए अब बच्चे मत बढ़ाइए। जो बच्चे हैं, अगर उनकी क्वालिटी बढ़ाना चाहते हैं, तो आपको संख्या घटानी चाहिए। इससे आगे तो किसी भी हालत में आगे मत बढ़ाइए। तब आपका मोह कम हो जाएगा। फिर आप एक माली के तरीके से अपने गृहस्थ का पालन कर रहे होंगे। तब आप एक सदाचारी और संयमी के तरीके से अपना गुजारा कर रहे होंगे। इन दोनों तरीकों से आप गुजारा कर लेंगे, तो मजा आ जाएगा।

तीसरा शत्रु : अहं

इनके अतिरिक्त आपको तीसरा एक और काम करना चाहिए। अहंकार को हटाना चाहिए। आप अपने अहंकार को भी हटाइए। आदमी अपना आत्मविज्ञापन करने के लिए, बड़ा आदमी बनने के लिए न जाने कितना ढंग और ढोंग बनाता रहता है। लिबास, फैशन, ठाटबाट ये सब अहंकार के लिए करता है। अहंकार के लिए—सब जगह से मेरी पदवी बढ़नी चाहिए, मेरे पास बढ़िया जेवर होना चाहिए, मुझको नेता बनना चाहिए, मुझे मंच मिलना चाहिए। अपने अहंकार की पूर्ति और बड़प्पन के लिए वह जाने क्या-क्या स्वाँग रचाता रहता है। अपने अतिरिक्त किसी और की उन्नति उसे सुहाती नहीं। 'मैं' और 'मेरा' बस यही उसके दो लक्ष्य बन जाते हैं। मित्रो! यह अहंकार बड़ा हानिकारक है। यह आपको ले डूबेगा। गुरुजी! आप क्या कह रहे हैं? बेटे! मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपकी महत्त्वाकांक्षाएँ नहीं बढ़नी चाहिए। आपकी महत्त्वाकांक्षाएँ

जरूर बढ़नी चाहिए परंतु अहंकार के नाम पर, लोगों के सामने अपनी चकाचौंध पैदा करने के नाम पर, लोगों के सामने बड़ा आदमी बनने के नाम पर अगर आप अपने अहंकार का पोषण कर रहे होंगे, तो गलती कर रहे हैं। इस अहंकार की दिशा मोड़ दीजिए। फिर किसमें लगाएँ? आप इस अहंकार को महानता की दिशा में लगाएँ कि हम महान् बनेंगे। आप महान् बनिए। यह विचार कीजिए कि दूसरों की तुलना में हमारे गुण, कर्म, स्वभाव अच्छे बनेंगे। आप ये विचार कीजिए न। क्या विचार करें? आप ये विचार कीजिए कि हमको महान् बनना है। दूसरों के सामने आपको अपनी निशानियाँ छोड़ जानी हैं, ताकि वे आपके बारे में सोचते रहें, विचार करते रहें कि देखो यह आदमी कितना शानदार था, कितना मनस्वी था, कितना धैर्यवान् था, कितना साहसी था। आप इसको बड़प्पन पर न्योछावर कर सकते हैं।

आपकी वसीयत-विरासत शानदार हो

संसार में जितने भी महान् आदमी हुए हैं, उन्होंने अपनी जिंदगी श्रेष्ठ कामों में लगा दी। वे लोगों के सामने उदाहरण छोड़कर चले गए। यही उनकी विरासत है। आप तो विरासत में क्या छोड़कर जाएँगे? बेटे के लिए मकान बनाकर जाएँगे। बेटे के लिए मकान जरूरी नहीं है। फिर क्या जरूरी है? आप बेटे के लिए यह विरासत छोड़कर जाइए, ताकि लोग यह कह सकें, कि यह किसका बच्चा है। उससे आपका सम्मान बढ़ेगा। न केवल अपने बच्चों के लिए, वरन् सारे समाज के लिए विरासत छोड़कर जाइए कि जिससे लोग यह कह सकें कि हमारे पूर्व पुरुष ऐसे थे, हमारे गाँव का निवासी ऐसा था। अमुक सज्जन ऐसा था। लोक-सम्मान अर्जित कीजिए न। आत्मसम्मान अर्जित कीजिए न। भगवान् का अनुग्रह अर्जित कीजिए न। आपको इसमें क्या दिक्कत पड़ती है? इसमें तो कोई दिक्कत नहीं पड़नी चाहिए।

आत्म संतोष गया

ये ही तीन बंधन हैं, जिन्होंने आपकी तीन चीजों को खत्म कर दिया है। पहला—आत्मसंतोष, जो आप पा सकते थे, उससे आप वंचित रह गए और उसे अब आप पा नहीं सकेंगे। क्यों? क्योंकि लोभ तो आपको कहाँ पाने देगा? लोभ तो आपको उचित और अनुचित काम करने के लिए लगाए रहेगा। लोभ आपको मेहनत करने के लिए लगाए रहेगा, कर्ज लेने के लिए लगाए रहेगा। लोभ आपको रिश्वत लेने के लिए मजबूर करता रहेगा। लोभ आपको

बेईमानी करने के लिए मजबूर करता रहेगा। फिर आप किस तरीके से आत्मसंतोष पाएँगे? आत्म आपकी निरंतर जलती ही रहेगी, क्योंकि आपका लालच इतना बड़ा दुश्मन है, जिसको आप छोड़ नहीं पाएँगे, तो उसके बदले में आपको आत्मसंतोष गँवाना-ही-गँवाना है।

लोक सम्मान गया

एक दूसरी और चीज है—लोक-सम्मान। लोकसम्मान आप नहीं पा सकेंगे? क्यों? क्योंकि आपकी सारी शक्ति, सारा प्यार इन थोड़े-से आदमियों में केंद्रित हो गया है। आप अपनी औरत को ही सब कुछ समझ बैठे हैं। आप अपने बच्चों को ही सब कुछ समझ बैठे हैं। कहीं कोई समाज में भी रहता है क्या? कहीं कोई संस्कृति भी है क्या? कहीं कोई दीन-दुखियारे भी रहते हैं क्या? समाज के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य और फर्ज है क्या? नहीं साहब! जो हमने कमाया था, चार बेटों में बराबर बाँट दिया। और पड़ोसियों को? और मोहल्ले वालों को? और लोगों को? और उन लोगों को, जिनके अहसान आपके ऊपर लदे हुए हैं। उनके लिए-जिन अध्यापक ने आपको पढ़ाया था और जो बेचारा आजकल भिखारी की तरह गुजारा कर रहा है। उसके प्रति भी कुछ फर्ज है आपका कि नहीं है? नहीं, साहब मैंने तो चार बेटों में बराबर बाँट दिया। ऐसा मत कीजिए। चार बेटों में बराबर मत बाँटिए। बच्चों को स्वावलंबी बनने दीजिए और जो कुछ भी आपकी संपत्ति है, उससे समाज को लाभ उठाने दीजिए। संस्कृति को लाभ उठाने दीजिए।

चलें महानता की ओर

भाइयो! बहनो! अपने अहंकार का परिपोषण आप उस मायने में कीजिए कि हमको महापुरुष बनना है और हम महामानव बनते हैं। अपनी चाल-ढाल और चाल-चलन ऐसा शानदार बनाते हैं कि जिससे भगवान् का अनुग्रह भी हमको प्राप्त हो सके। अगर आप महानता की दिशा में नहीं जाएँगे, बड़प्पन की दिशा में जाएँगे, तो आपको लोभ, मोह और अहंकार इन तीन को पकड़ना पड़ेगा। इनके सहारे आपको नरक में गिरना पड़ेगा और बंधन में गिरना पड़ेगा। कदाचित् अगर आप एक कदम आगे बढ़ा दें और महानता की ओर चल पड़ें तब? तब आपको दूसरा काम करना पड़ेगा। तब फिर आपको औसत भारतीय की तरीके से सीमित में निर्वाह करना पड़ेगा। आपके सारे भाई जिस तरह का गुजारा करते हैं, आप क्यों नहीं कर सकते? क्या सारे बच्चों को अपना

क्यों नही बना सकते। कितने बच्चे हैं, जो विद्या के अभाव में बैठे रहते हैं। आप अपने बच्चों को कीमती कपड़ा पहनाएँ और अमुक चीज छोड़कर मरें और पड़ोसियों के बच्चों के लिए आप किताब तक खरीद कर नहीं दे सकते? ईश्वरचंद्र विद्यासागर के तरीके से आप क्या ऐसे नहीं कर सकते कि अपने घर का पचास रुपए से गुजारा कर लें और बची हुई चार सौ पचास रुपए की नौकरी को पड़ोस के विद्यार्थियों के लिए खर्च कर दें। ऐसा आप नहीं कर पाएँगे क्या? मित्रो! लोभ, मोह को आप छोड़ दीजिए। आप अहंकार की, बड़प्पन की, अमीरी की और दूसरों की आँखों में चकाचौंध पैदा करने की हवस को छोड़ दीजिए। इसके स्थान पर आप दूसरी हवस पैदा कीजिए कि हम महान् बनेंगे। दूसरों के सामने उदाहरण पेश करेंगे।

जीवन्मुक्ति की ओर

अपनी जिंदगी का नमूना पेश करेंगे और लोगों को अपने रास्ते पर चलने के लिए, पीछे चलने के लिए हम नया रास्ता बनाकर जाएँगे। ये महानता के रास्ते हैं। अगर आप महानता के रास्ते पर चल पड़ें, तो आपके जीवन की मुक्ति हो गई। जीवनमुक्त जैसे इसी जिंदगी में आनंद उठाते हैं। मजा उड़ाते हैं और सारे विश्व में पंख लगाकर स्वच्छंद उड़ते चले जाते हैं, जैसे कि पखेरू सारे विश्व में उड़ता हुआ चला जाता है। वह कैसा सुंदर दृश्य देखता है? कैसी सुहावनी छवि का लाभ उठाता है, आप भी ठीक वैसी छवि का लाभ उठा सकते हैं, अगर आप जीवनमुक्त होने की दिशा में कोशिश करें तब। यह आपकी मुट्ठी में है और आप चाहें तो इसे खरीद भी सकते हैं। आप जरा हिम्मत तो कीजिए। लोभ, मोह और अहंकार का तिरस्कार कीजिए, फिर देखिए आपकी मुक्ति आपके चरणों में आती है कि नहीं। मुझे उम्मीद है कि आप यहाँ इस कल्पसत्र में आए हैं और जीवनमुक्त होकर जाएँगे। आज की बात समाप्त।

ॐ शान्तिः

संकल्पशक्ति की महिमा एवं गरिमा

(अक्टूबर १९८२ कल्पसाधना सत्र में दिया गया प्रवचन)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

गिरना सरल है

देवियो, भाइयो! प्रकृति का कुछ ऐसा विलक्षण नियम है कि पतन स्वाभाविक है। उत्थान को कष्टसाध्य बनाया गया है। पानी को आप छोड़ दीजिए, नीचे की ओर बहता हुआ चला जाएगा, उसमें आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। ऊपर से आप एक ढेला जमीन पर फेंक दीजिए, वह बड़ी तेजी के साथ गिरता हुआ चला आएगा, आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। नीचे गिरने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। ऐसे ही संसार का कुछ ऐसा विलक्षण नियम है कि पतन के लिए बुरे कर्मों के लिए आपको ढेरों के ढेरों साधन मिल जायेंगे, सहकारी मिल जायेंगे, किताबें मिल जायेंगी, और कोई न मिलेगा, तो आपके पिछले जन्म-जन्मान्तरों के संग्रह किये हुये कुसंस्कार ही आपको इस मामले में बहुत मदद करेंगे, जो आपको गिराने के लिये बराबर प्रोत्साहित करते रहेंगे। पापपंक में घसीटने के लिये बराबर आपका मन चलता रहेगा। इसके लिए न किसी अध्यापक की जरूरत है, न किसी सहायता की जरूरत है, यह तो अपनी नेचर ऐसी हो गई है। ग्रेविटी पृथ्वी में है न। ग्रेविटी क्या करती है? ऊपर की चीजों को नीचे की ओर खींचती है। न्यूटन ने देखा सेव का फल जमीन पर ऊपर से गिरा। क्यों,गिरने में क्या बात है? जमीन में एक विशेषता है, "कशिश है" कि वह खींच लेती है। नीचे गिराने वाली कशिश इस संसार में इतनी भरी पड़ी है, कि उससे बचाव यदि आप न करें, उसका विरोध आप न करें, उसका मुकाबला आप न करें, तो आप विश्वास रखिये आप निरंतर गिरेंगे। पतन की ओर गिरेगे। सारा समाज इसी ओर चल रहा है। आप निगाह उठाकर देखिए आपको कहाँ ऐसे आदमी मिलेंगे, जो सिद्धान्तों को ग्रहण करते हों और आदर्शों को अपनाते हों। आप जिन्हें भी देखिये, अधिकांश लोग बुराइयों की ओर चलते हुए दिखाई पड़ेंगे। पाप और पतन के रास्ते पर उनका चिंतन और मनन काम कर रहा होगा। उनका चरित्र भी गिरावट की ओर और उनका चिंतन भी गिरावट की ओर। सारे के सारे जमाने में यही भरा पड़ा है।

ऊँचा उठना है तो व्रतशील बनें

ऐसी स्थिति में आपको क्या करना चाहिये? आपको अगर ऊँचा उठना है, तो अपने भीतर से एक नई हिम्मत इकट्ठी करनी चाहिये। क्या हिम्मत करें? यह हिम्मत करें, कि ऊँचे उठने वाले जिस तरीके से संकल्प बल का सहारा लेते रहे हैं और हिम्मत से काम लेते रहे हैं, व्रतशील बनते रहे हैं, आपको उस तरीके से व्रतशील बनना चाहिये। देखा है न आपने, जब जमीन पर से ऊपर चढ़ना होता है, तो जीने का इंतजाम करते हैं, सीढ़ी का इंतजाम करते हैं, तब मुश्किल से धीरे-धीरे चढ़ते हैं। गिरने में क्या देर लगती है। आपको कोई ढेला ऊपर फेकना हो, तब देखिये न कितनी ताकत लगाना पड़ती है और गिरा दें तब, गिराने में क्या देर लगती है। अंतरिक्ष से उल्कायें अपने आप गिरती रहती हैं, जमीन की ओर। जब राकेट फेंकना पड़ते हैं तब। आपने देखा है न, करोड़ों-अरबों रुपया खर्च करते हैं, तब एक राकेट का अंतरिक्ष में ऊपर उछालना संभव होता है। गिरावट में तो पत्थर के टुकड़े और उल्कायें अपने आप जमीन पर आ जाती हैं। बिना किसी के बुलाये, बिना खर्च किये। पानी को कुएँ में से निकालना होता है, तो कितनी मेहनत करना पड़ती है और कुएँ में डालना हो, तो डाल दीजिये। कोई मेहनत नहीं करना पड़ेगी।

संकल्प शक्ति का विकास करें

चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए जो ढेरों कुसंस्कार इकट्ठे कर लिये हैं, अब इन कुसंस्कारों के खिलाफ बगावत शुरू कर दीजिये। कैसे करें? अपने को मजबूत बनाइये। अगर मजबूत नहीं बनायेंगे तब? तब फिर, आपके पुराने कुसंस्कार फिर आ जायेंगे। मन को समझायें, बस जरा सी देर को समझ जायेगा, फिर उसी रास्ते पर आ जायेगा। फिर क्या करना चाहिये? अपना मनोबल ऊँचा करने के लिये आपको कोई संकल्प लेना चाहिये। संकल्प शक्ति का विकास करना चाहिये। संकल्प शक्ति किसे कहते हैं? संकल्प शक्ति उसे कहते हैं, जिसमें कि यह फैसला कर लिया जाता है कि यह तो करना ही है। यह तो हर हालत में करना है। करेंगे या मरेंगे। इस तरीके से यदि आप संकल्प किसी बात का कर लें, तो आप विश्वास रखिये कि आपका जो मानसिक निश्चय है, वह आपको आगे बढ़ा देगा। अगर आपमें मनोबल नहीं है और निश्चयबल नहीं है, ऐसे ही ख्वाब देखते रहते हैं, यह करेंगे, वह करेंगे, विद्या पढ़ेंगे, व्यायाम करना शुरू करेंगे, फलाना काम करेंगे। आप कल्पना करते रहिये, कहीं कुछ नहीं कर सकते। **कल्पनाएँ आज तक किसी की सफल नहीं हुई और संकल्प किसी के असफल नहीं हुए।**

दृढ़ निश्चय जरूरी

इसलिये मित्रो, संकल्प शक्ति का सहारा लेने के लिए व्रतशील बनना चाहिये। आप व्रतशील बनिये। आप यह करेंगे तो बस दृढ़ निश्चय कर लीजिये कि अच्छा काम करेंगे। जो भी छोटा हो या बड़ा हो आप यह काम करेंगे। जैसे हमको बुराइयों को छोड़ने के लिए संकल्प करने पड़ते हैं। बीड़ी नहीं पियेंगे, नहीं साहब हमको टट्टी नहीं होगी। टट्टी नहीं होगी तो हम दूसरी जुलाब की दवा ले लेंगे पर बीड़ी नहीं पियेंगे। बस यह निश्चय हुआ तो बीड़ी गयी। और आपका मन कच्चा, कच्चा, कच्चा छोड़े कि न छोड़े, पिये कि न पियें, कल पीली, फिर आज और पीलें, कल छोड़ देंगे, आज पी लेंते हैं। आगे देखा जायेगा। आप कभी नहीं छोड़ सकते। ठीक इसी तरीके से श्रेष्ठ काम करने के लिये, उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए, आपको कोई न कोई संकल्प जरूर लेना चाहिये। यह काम करेंगे। यह काम करने तक के लिये कई लोग ऐसा कर लेते हैं कि यह काम जब तक पूरा नहीं करेंगे, तब तक यह काम नहीं करेंगे। जैसे नमक नहीं खायेंगे। घी नहीं खायेंगे, शक्कर वगैरह नहीं खायेंगे। यह क्या है? देखने में तो कोई खास बात नहीं है, आपको अमुक काम करने से नमक का क्या ताल्लुक? और आप शक्कर नहीं खायेंगे, तो क्या बात बन जायेगी। अगर आपने घी खाना बंद कर दिया, तो कौंन सी बड़ी बात हो गई। कि जिससे आपको काम में सफलता मिलेगी। इन चीजों में तो दम नहीं है, लेकिन दम उस बात में है, कि आपने इतना कठोर निश्चय कर लिया है और आपने सुनिश्चित योजना बना ली है कि यह हमको करना ही करना है। करना ही करना है, तो फिर आप विश्वास रखिये वह काम पूरा होकर रहेगा।

अणुव्रत

मित्रो, चाणक्य की बात आपको नहीं मालूम? चाणक्य ने निश्चय कर लिया था। बाल बिखेर दिये थे कि जब तक नंद-वंश का नाश नहीं कर दूँगा, तब तक चोटी नहीं बाधूँगा। यह अपने व्रत और प्रतिज्ञा याद रखने का एक प्रतीक है, सिम्बल है। प्रतिज्ञा लोग भूल जाते हैं, लेकिन अगर कोई ऐसा बहिरंग अनुशासन भीतर लगा लें तो आदमी भूलता नहीं है। इसलिये कोई न कोई अनुशासन लगा लें तो अच्छा है। जैसे एक बार ऐसा हुआ—भगवान् महावीर के पास एक बहेलिया गया। उसने कहा—हमको दीक्षा लेनी है, तो भगवान् ने कहा कि आपको गुरुदक्षिणा में अहिंसा का पालन करना पड़ेगा और मांस खाना

छोड़ना पड़ेगा। तो उसने कहा हम बहेलिए हैं, यह तो हम नहीं कर पायेंगे। फिर बच्चों को कहाँ से खिलायेंगे? समझदार लोगों ने उसको सलाह दी कि कम से कम एक प्राणी को न मारने का संकल्प ले ले, तो भी तेरी अहिंसा के व्रत का प्रारंभ मान लिया जायेगा। बहुत विचार करता रहा बहेलिया, फिर उसने एक जानवर को पाया। जिसके ऊपर वह दया करने को तैयार हो गया और उसे न मारने को तैयार हो गया। उस जानवर को नहीं मारूँगा, कभी नहीं मारूँगा, कौए पर दया करूँगा। बस उसने संकल्प ले लिया और दीक्षा ले ली। बस रोज विचार करता कौऐ पर दया करनी चाहिये। कौआ बेचारा कितना निरीह होता है, उसको कष्ट नहीं देना चाहिये, उसके भी तो बाल बच्चे होंगे, उसको भी तो भगवान् ने रचा है, हम अपने छोटे से लोभ के लिये कौए को क्यों मार डालें? बस यह विचार जब जड़ जमाता हुआ चला गया तो धीरे-धीरे फिर ऐसा हो गया कि फिर वह सब प्राणियों पर दया करने लगा। अंततः वह जैन धर्म का एक बड़ा सिद्ध पुरुष हुआ। कैसे? दिशा जो मिल गई। छोड़ेंगे, करेंगे।

अंतःबन सशक्त हो

बुरे कर्म छोड़ेंगे और अच्छे कर्म करेंगे, इसके लिए मन कच्चा न होने पावे और भूलभुलैयों में न पड़ने पावें इसीलिए कोई न कोई संकल्प लेना बहुत जरूरी है। अनुष्ठान में यही होता है। अनुष्ठान में जप की संख्या तो उतनी ही होती है, पर उसके साथ-साथ व्रत और संकल्प लेने पड़ते हैं। काया का उपवास एक, ब्रह्मचर्य का दो, मौन का तीन, जमीन पर सोने का चार, अपनी सेवायें अपने आप करने का पाँच। क्या बात है? यह मनोबल बढ़ाने की प्रक्रियायें है। आदमी का संकल्प मजबूत होंना चाहिये। अध्यात्म का प्राण ही संकल्प है। संकल्प को अगर आप जीवन में से निकाल दें फिर क्या काम बनेगा। आपको ध्यान होगा? राणा प्रताप ने यह निश्चय किया था कि वह थाली में भोजन नहीं करेंगे, जब तक अपनी आजादी प्राप्त न कर लेंगे, तब तक वह पत्तल में भोजन करेंगे। आपने कभी गाड़ी वाले लोहार देखे हैं? गाड़ी वाले लोहार अभी भी पत्तल में भोजन करते हैं, थाली में भोजन नहीं करते। अपने आपको राणा प्रताप का वंशज बतलाते हैं और यह कहते हैं, जब राणा ने यह प्रतिज्ञा ली थी कि हम घर में नहीं घुसेंगे, बाहर जंगल में घूमेंगे और पत्तल में भोजन करेंगे यह उनका था व्रत। गाड़ी वाले लोहार यही कहते पाये गये हैं—घर में अब नहीं रहेंगे, बाहर ही घूमते रहेंगे। आजादी नहीं मिली, तो हम क्यों सुखों

का भोग करेंगे। इस तरीके से संकल्प कर लेना, व्रत धारण कर लेना कई बार बड़ा उपयोगी होता है। अनुष्ठान काल में नमक को त्याग करने वाली बात, शक्कर को त्याग कर देने वाली बात, हजामत न बनाने वाली बात, चप्पल न पहनने वाली बात, ऐसी बहुत सी बातें हैं, जो आदमी के संकल्प बल को मजबूत करती हैं। आपको अपने संकल्प मजबूत बनाने चाहिये।

आधी मंजिल पूरी

संकल्प के लिये कई बातें हैं। कठिनाइयाँ सामने आती हैं, तो आदमी को संकल्प बल मजबूत बनाना चाहिये। संकल्प बल न हो तब? हिम्मत न हो तब? फिर आदमी बेपेंदी के लोटे की तरह से इधर-उधर भटकता रहता है। मनोबल बढ़ाने के लिये कोई न कोई संकल्प जीवन में रखना बहुत जरूरी है। गाँधी जी ने ३३ वर्ष की उम्र में ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ली थी और यह कहा था कि हम यह निभायेंगे। इसे निभाने में, मनोबल में, कच्चाइयाँ जरूर रही होंगी, दूसरों की तरीके से। शायद उनका भी मन कभी-कभी भीतर-भीतर डगमग-डगमग करता रहा हो? लेकिन उनके संकल्प ने कहा-नहीं, हमने निश्चय कर लिया है, **रघुकुल रीति सदा चल आई प्राण जाई पर वचन न जाही।** इस तरीके से जब उनका संकल्प चला, तो फिर वह निभा। भीतर की कमजोरियाँ उठीं तो उनसे लड़ा गया। अगर संकल्प न होता तब? व्रत नहीं लिया होता तब? निश्चय न किया होता तब? तब फिर संभव नहीं था। संकल्प कर लेने के बाद तो आदमी की आधी मंजिल पूरी हो जाती है। आपको भी अपने मनोबल की वृद्धि के लिये आत्मानुशासन स्थापित करना चाहिये। आत्मानुशासन वह है, जिसमें फिसलने वाली बरसात में पहाड़ पर चढ़ते समय लाठी लेकर लोग चलते हैं और उससे जहाँ फिसलन होती है, अपने आपको बचा लेते हैं। उसका सहारा मिल जाता है। संकल्प बल लाठी के तरीके से है, जो आपको गिरने से बचा लेता है और आपको ऊँचा चढ़ने के लिये आगे बढ़ने के लिये हिम्मत प्रदान करता है।

फरहाद का संकल्प

मित्रो, शीरी फरिहाद की बात सुनी होगी आपने? फरिहाद को यह कहा गया था अगर वह शीरी से शादी करना चाहता है, तो यहाँ से ३२ मील लम्बी दूरी को काटकर के एक नहर बनाकर के लाये। पहाड़ पर ही तालाब था ऊँचे पर। वह शहर से इतनी दूर था कि जिससे पानी के लिये बड़ी किल्लत रहती थी। राजा ने फरिहाद से यह कहा कि यदि आप ३२ मील लम्बी नहर

खोदकर के यहाँ तक ला सकें, तो शीरी से शादी हो सकती है। उसने यही कहा, संकल्प लिया कि हम करेंगे या मरेंगे, यह निश्चय करके जब उसने इतना कर लिया हमको नहर खोदनी है, तो वह कुल्हाड़ी और हथौड़ी लेकर चल पड़ा। उसने पहाड़ काटना शुरु कर दिया। बाहर के आदमी, कुछ दिन मजाक करते रहे। कुछ मखौल उड़ाते रहे, कोई पागल कहता रहा, कोई बेवकूफ कहता रहा, लेकिन जब यह देखा कि इस आदमी ने यह निश्चय कर लिया है कि हम हर कीमत पर करके रहेंगे, तो लोगों की सहानुभूति पैदा हुई। संकल्पवानों के प्रति सहानुभूति भी होती है। संकल्पवान सहानुभूति के अधिकारी होते हैं। जिनके पास संकल्प शक्ति नहीं है, वह मजाक के कारण बनते हैं, व्यंग और उपहास के कारण बनते हैं। इसलिये फरिहाद को लोगों ने मदद की, लोग आये और स्वयं भी उसके साथ बैठकर कुल्हाड़ी और हथौड़ा चलाने लगे और नहर खोदने में मदद करने लगे। टाइम तो थोड़ा लग गया, लेकिन फरिहाद ने नहर खोदकर के और वहाँ तक लाकर रख दी जहाँ तक राजा ने बतायी थी।

व्रत के साथ अनुशासन

साथियो, यह सब संकल्प बल की बातें मैं कह रहा हूँ। संकल्प बल आपको प्रत्येक काम में उपयोगी होगा। ब्रह्मचर्य के सम्बंध में, खानपान के सम्बंध में, समयदान और अंशदान के सम्बन्ध में, आप को कोई न कोई ऐसा काम जरूर करना चाहिये, जिसमें कि यह प्रतीत होता हो कि आपने छोटा सा संकल्प लिया और उसको पूरा करने में लग रहे हैं। यह मनोबल बढ़ाने का तरीका है। मनोबल से बढ़कर आदमी के पास और कोई शक्ति नहीं है। पैसे की ताकत अपने आप में ठीक। बुद्धि की ताकत अपने आपमें ठीक। लेकिन ऊँचा उठने का जहाँ तक ताल्लुक है, वहाँ तक मनोबल और संकल्पबल को ही सबसे बड़ा माना गया है। संकल्प बल और मनोबल से बढ़कर आदमी के व्यक्तित्त्व को उभारने वाली, प्रतिभा को उभारने वाली, उसके चरित्र को उभारने वाली और कोई वस्तु है ही नहीं। और संकल्प बल की वृद्धि के लिये यह आवश्यक है कि आप छोटे-छोटे, ऐसे कुछ नियम लिया कीजिये थोड़े समय के लिये, कि यह काम नहीं कर लेंगे, तब तक, हम यह नहीं करेंगे। मसलन् शाम को इतने पन्ने नहीं पढ़ लेंगे, तो सोयेंगे नहीं। मसलन् सबेरे का भजन हम जब तक पूरा नहीं कर लेंगे खायेंगे नहीं। यह क्या है व्रतशीलता के साथ में जुड़ा हुआ अनुशासन है।

कुविचारों के खिलाफ सेना

अनुशासन उन संकल्पों का नाम है, जिसमें किसी सिद्धांत का तो समावेश होता ही होता है, लेकिन उस सिद्धान्त के साथ साथ में, उस कार्य के साथ-साथ में, ऐसा भी कुछ फैसला किया जाता है, जिसमें अपने आपको स्मरण बना रहे, यह काम नहीं करेंगे। चप्पल नहीं पहनेंगे। जब तक हम मैट्रिक पास नहीं कर लेंगे चप्पल नहीं पहनेंगे। यह क्या है ? बराबर यह दबाव रहता है यह काम करना था, जो नहीं कर पा रहे हैं। चप्पल इसीलिये तो नहीं पहनते। चप्पल बार-बार याद दिलाती रहेगी आपको मैट्रिक करना है। अच्छे नम्बर से पास करना है। दिन भर पढ़ना है। चप्पल पर जब भी ध्यान गया, अरे भाई चप्पल कैसे पहन सकते हैं, हमने तो संकल्प लिया हुआ है, हमने तो व्रत लिया हुआ है। संकल्प आदमी की जिंदगी के लिये बहुत बड़ी कीमती वस्तु है। आप ऐसा ही किया कीजिये। आपको यहाँ से जाने के बाद में कई काम करने हैं, बड़े मजेदार करने है, बहुत अच्छे काम करने हैं, लेकिन वह चलेंगे नहीं, बस आपका मन बराबर ढीला होता चला जायेगा। मन को काट करने के लिये आप एक विचारों की सेना, विचारों की शृंखला बनाकर तैयार रखिये। विचारों से विचारों को काटते हैं। लाठी को लाठी से मारते हैं, जहर को जहर से मारते हैं। कांटे को कांटे से निकालते हैं। कुविचार जो आपको हर बार तंग करते रहते हैं, उसके मुकाबले पर एक ऐसी सेना खड़ी कर लीजिये, जो आपके बुरे विचारों से लड़ सकने में समर्थ हो।

एक अनिवार्य युद्ध

मित्रो, अच्छे विचारों की भी तो एक सेना है। बुरे विचार आते हैं, काम वासना के विचार आते हैं, व्यभिचार के विचार आते हैं, आप ऐसा किया कीजिये, उसके मुकाबिले एक ओर सेना खड़ी कर दीजिये। अच्छे विचारों वाली सेना। जिसमें आपको यह विचार करना पड़े, हनुमान कितने सामर्थ्यवान हो गये ब्रह्मचर्य की वजह से, भीष्मपितामह कितने समर्थ हो गये ब्रह्मचर्य के कारण। आप शंकराचार्य से लेकर और अनेक संतों की बातें याद कर सकते हैं, महापुरुषों की। जिन्होंने कि अपने कुविचारों से लोहा लिया है। कुविचारों से लोहा नहीं लिया होता तो बेचारे संकल्पों की क्या विसात! चलते ही नहीं टूट जाते। कुसंस्कार हावी हो जाते और जो विचार किया गया था वह एक कोने में रक्खा रह जाता। सदाचार के आप खाली विचार करें तो कैसे बने। आप उनके विचारों की एक बड़ी सामर्थ्य बनाइये। एक सेना बना लीजिये। जो भी बुरे

विचार आयें उनको काटने के लिये। लोभ के विचार आयें, लालच के विचार आयें तो आप ईमानदारों के समर्थन के लिये, उनके इतिहास और उदाहरण और शास्त्र और आप्त पुरुषों के वचन संग्रह करके रखिये। ईमानदारी की ही कमाई खायेंगे। बेईमानी की कमाई नहीं खायेंगे। अगर आपने अपने मन में ऐसे विचारों की एक सेना तैयार कर ली है, तो आपके लिये सरल होगा, कि जब बेईमानी के विचार आयें, कामवासना के विचार आयें, ईर्ष्या के विचार आयें, अध:पतन के विचार आयें, तो उनकी रोकथाम करने के लिए आप अपनी सेना को तैयार कर दें और उनसे सामने से भिड़ा दें।

सशक्त होते हैं विचार

मित्रो, लड़ाई लड़े बिना कैसे काम चलेगा? रावण से लड़े बिना काम चला? दुर्योधन से लड़े बिना काम चला? कंस से लड़े बिना कहीं काम चला? लड़ाई मोहब्बत की है, या कैसी है? हिंसा की है या अहिंसा की है? यह मैं इस समय बात नहीं कह रहा हूँ। मैं तो यह कह रहा हूँ—आपको अपनी बुराइयों और कमजोरियों से मुकाबला करने के लिये भी और समाज में फैले हुए अनाचार से लोहा लेने के लिये भी हर हालत में ऐसे ऊँचे विचारों की सेना बनाना चाहिये जो आपको भी हिम्मत देने में समर्थ हो सके और आपके समीपवर्ती लोगों में भी नया माहौल पैदा करने में समर्थ हो सके, यह संकल्प भरे विचार ऐसे होते हैं।

हजारी किसान

हजारी किसान ने बिहार में यह फैसला किया था, कि मुझे हजार आम के बगीचे लगाना है। बस, घर से निकल पड़ा। जमीन पर ही सोऊँगा, नंगे पैर रहूँगा, बस इस गाँव में गया—भाई नंगे पाँव मुझे रहना है, इस गाँव में एक आम का बगीचा जरूर लगाना है। लीजिये मैं कहीं से पौध ले आता हूँ। लाइये मैं गड्ढे खोद देता हूँ, आप लगा लीजिये। रखवाली का थोड़ा इंतजाम कर दीजिये। पानी देने का थोड़ा इंतजाम कर लीजिये, पौधा हमने लगाया है। इस तरीके से हर एक आदमी को समझाता रहा, तो उसकी बात लोगों ने मान ली। क्यों मान ली? वह संकल्पवान था। संकल्पवान नहीं होता तब? ऐसे ही व्याख्यान करता फिरता तब? हरे पेड़ लगाइये, हरियाली उगाइये। हरे पेड़ लगाइये, हरियाली उगाइये तब? तब कोई लगाता क्या? सरकार कितना प्रचार करती है, कोई सुनता है क्या? सुनने के लिए यह बहुत जरूरी है, कि जो आदमी इस बात को कहने के लिये आया है, संकल्पवान हो। संकल्पवान ही जीवन में सफल होते हैं।

जीत व्रतशील की ही

संकल्पवान कौन होता है ? संकल्पवान का अर्थ फिर एक बार समझ लीजिये। ऊँचे सिद्धान्तों को अपनाने का निश्चय और उस निश्चय में, रास्तें में, कोई व्यवधान न आवे, इसलिये थोड़े-थोड़े समय के लिये ऐसे अनुशासन, जिससे कि स्मरण बना रहे, मनोबल बढ़ता रहे, मनोबल गिरने न पावे, संकल्प की याद करके आदमी अपनी गौरव गरिमा को बनाये रख पाये, इसलिये आपको व्रतशील होना जरूरी है। व्रतशील आप रहा कीजिये। पीला कपड़े पहनने को आपको कहा गया है, यह व्रतशील होने की निशानी है। दूसरे लोग पीले कपड़े नहीं पहनते, आपको पहनना चाहिये, इसका मतलब यह है, कि आपके ऊपर दुनिया का कोई दबाव नहीं है। दुनिया का अनुकरण करने और नकल करने में आपको कोई मजा नहीं है। यह क्या है ? यह व्रतशीलता की निशानी है। माघ के महीने में त्रिवेणी के किनारे लोग एक महीने के लिये व्रतशील होकर जाते हैं तपसाधना करते हैं। बस वह यह निश्चय कर लेते हैं नहीं करेंगे। आप भी इस कल्प साधना शिविर में आये हैं व्रतशील होकर रहिये। निश्चय को पालन करिये। हमने यह नियम बनाया है, उसी को पालन करेंगे। भोंजन जैसा भी हो, खराब है तो क्या, खराब से ही काम चलायेंगें। नहीं साहब जायका अच्छा नहीं लगता। समोसा कचौड़ी खायेंगे। मत खाइये। संकल्पवान बनिये।

परिणाम हर स्थिति में शुभ

मित्रो, संकल्प में अकूत शक्ति है। संकल्पवान ही महापुरुष बने हैं, संकल्पवान ही उन्नतिशील बने हैं, संकल्पवान ही सफल हुए हैं और संकल्पवानों ने ही संसार की नाव को पार लगाया है। आपको संकल्पवान और व्रतशील होना चाहिये। नेकी आपकी नीति होनी चाहिये, उदारता आपका फर्ज होना चाहिये और अगर ऐसा कर लिया हो, तब आप दूसरा कदम यह उठाना कि हम यह काम नहीं करेंगे। समय-समय पर छोटे-छोटे व्रत लिया कीजिये। अपने यहाँ गायत्री परिवार में यह रिवाज है, कि गुरुवार के दिन नमक न खाने की बात, ब्रह्मचर्य से रहने की बात, दो घंटे मौन रहने की बात, इन सबको पालन करना पड़ता हैं। आप भी व्रतशील होकर कुछ नियम पालन करते रहेंगे और उनके साथ-साथ किसी श्रेष्ठ कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का ताना बाना जोड़कर रखेंगे, तो आपके विचार सफल होंगे। आपका व्यक्तित्व पैना होगा और आपकी

प्रतिभा तीव्र होगी और आप एक अच्छे व्यक्ति में शुमार होंगे। अगर आप आत्मानुशासन और व्रतशीलता का महत्त्व समझेगें और उसे अपनाने की हिम्मत करेंगे तब। अगर इस तरह का एक कदम भी आप आगे बढ़ा सकेंगे, तो हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आत्मोन्नति की दिशा में निरंतर आपको आगे बढ़ाते चलेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ आज की बात समाप्त।

ॐ शान्तिः

विशिष्ठ वेला में विशिष्ट साधना

(सूक्ष्मीकरण साधना की अवधि में जुलाई,१९८४ में दिया वीडियो संदेश)

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

जीवन का नया मोड़

देवियो, भाइयो! अब हमारा जीवन एक नया मोड़ लेकर आया है। इतनी लंबी जिंदगी हमने अपने मित्रों से, भाइयों से, कुटुम्बियों से, भतीजों से, बच्चों से मिल जुलकर साथ-साथ में व्यतीत की है। ऐसा नहीं हुआ कि हम कभी अकेले रहे हों। रात को भी सोते रहे हैं, तो आप लोगों का चिंतन बराबर करते रहे हैं। समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का ख्याल करते रहे हैं। जनता के साथ हम बराबर रहे हैं। हमने अब अपने जीवन में एक नया मोड़ दिया है। नया मोड़ क्या है? अब आपके और हमारे मिलने-जुलने का क्रम बंद हो जाएगा। अब आप यह उम्मीद करें कि आप हमसे बात करेंगे, हमारी बात सुनेंगे, कठिनाइयों की अथवा जिज्ञासाओं की कोई बात हमारे सामने रखेंगे और हम उनका समाधान करेंगे। नहीं, अब यह संभव नहीं हो सकेगा। हमने अपना एक नया कार्यक्रम बना लिया है।

मित्रो, हमारे गुरु ने जो आदेश भेजा, उसी के आधार पर ही हमारा सारा-का-सारा जीवनक्रम चला है। अब तक की जिंदगी को हमने अपनी मर्जी से व्यतीत नहीं किया है। अपने कार्यक्रम स्वयं नहीं बनाये हैं। हमारे मास्टर, हमारे गुरु जिस ढंग से हमसे जो कराते हैं, हम करते हैं। इसी तरीके से हमारी सारी जिंदगी की गतिविधियाँ चलती रही हैं। अभी-अभी हमारा जो एक नया कार्यक्रम बना है। उन्हीं के आदेश के अनुसार बना है। क्या बना है? अब हमारा आपका संपर्क नहीं रहेगा। रहेंगे, तो हम जमीन पर ही, आसमान में थोड़े ही जाएँगे, लेकिन आप लोगों से संपर्क की जो जरूरत है, वह संभव नहीं हो सकेगी। आप लोग नीचे बैठे होंगे, हम ऊपर बैठे होंगे, तो क्या बातचीत नहीं करेंगे? नहीं, अब यह संभव नहीं हो सकेगा। यह हमारे जीवन का नया मोड़ है।

सकारण है जीवन का यह नया मोड़

आप लोग यह ख्याल कर सकते हैं कि इसका क्या कारण हो सकता है? आमतौर से कारण ऐसे ही होते हैं। कोई आदमी डर जाते हैं, भयभीत हो जाते हैं, शर्म के मारे बोलना बंद हो जाता है। कुछ व्यक्ति आलसी होते हैं और जगे पड़े रहते हैं। जब घर वाले आवाज देते हैं कि उठो भाई, कुछ करो, तब भी वे झूठमूठ खर्राटे लेते रहते हैं। ऐसे होते हैं—आलसी और डरपोंक आदमी। सुना है कि जो मिलेट्री में भर्ती होते हैं, उनमें से कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं कि जब लड़ाई का मौका आता है, दनादन गोलियाँ चलती हैं, तो कोई-न-कोई बहाना बनाते हैं, जैसे पेटदर्द हो गया, पुट्ठे में दर्द हो गया। चला नहीं जाता है, ये बात हो गयी है, वो बात हो गई है आदि। दुनिया भर की बातें बना लेते हैं और युद्ध से भागने की कोशिश करते हैं। इन्हें पलायनवादी कहा जाता है। इस तरह आलसी एक, डरपोक दो और पलायनवादी तीन श्रेणी के व्यक्ति हुए।

तो क्या हम भी इन्हीं में से हैं? नहीं, हम इनमें से कोई भी नहीं हैं। जिन लोगों ने हमको नजदीक से देखा है, उनको स्पष्ट मालूम है कि उन तीनों में से एक भी ऐब गुरुजी के भीतर नहीं है। इन खराबियों को हमने शुरू से ही अपने भीतर से उखाड़ फेंका है। अब तो पचहत्तर साल होने को आये हैं; तो क्या इतने लंबे समय में वह बुराइयाँ कहीं छिपकर बैठ गयी होंगी? नहीं, हमने उन्हें कहीं छिपकर बैठने नहीं दिया है, साफ कर दिया है। फिर क्या कारण है कि हमको अलग एकांत में रहना पड़ा? अगले दिनों संकटों के घटाटोप और अधिक सघन होंगे, इसलिए उन्हें निरस्त करने और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने के लिए हमको अपनी शक्तियों के फैलाव को रोककर एक जगह इकट्ठा करना पड़ रहा है, ताकि वह इकट्ठी हुई शक्तियाँ आपके ज्यादा काम आ सकें। आप से मतलब है-समाज से, धर्म से, देश से, मानव जाति से, संस्कृति से। इसलिए फैलाव को-बिखराव को हमने बंद कर दिया है।

बिखराव को रोककर एक दिशा में सुनियोजन

मित्रो, आपने देखा होगा कि सूर्य की किरणें जब एक आतिशी शीशे के ऊपर एकत्रित कर देते हैं, तो वे कितनी पैनी हो जाती हैं। हमारी शक्ति भी वैसी ही हो जाएगी। इस संदर्भ में आप कहेंगे कि गुरुजी! आप तो फिर कमजोर हो जाएँगे? नहीं, बेटे! हम कमजोर नहीं होंगे। मान लीजिए, अगर हम कमजोर हो गये, तो भी हमारे जो बच्चे होने वाले हैं, वे बहुत ताकतवार होंगे। आपने महाभारत पढ़ा होगा कि कुन्ती तो कमजोर हो गयी थी और अपनी जिठानी

गांधारी के साथ जंगल में तप करने चली गयी थी। लेकिन उनके बच्चे कितने शानदार थे, अर्जुन, भीम और दूसरे सब बच्चे एक-से-एक समर्थ थे। कुन्ती मरी नहीं थी, वरन् अपनी जगह दूसरों को छोड़ गयी थी। हम भी अपनी जगह पर दूसरों को छोड़ जाने की कोशिश में लग रहे हैं, ताकि हमारी परंपरा बंद न होने पाये।

यों तो स्थूल रूप से हमारी परंपरा बंद भी हो सकती है। पिचहत्तर साल की उम्र के बाद में आदमी कहाँ तक जिएगा? अधिक-से-अधिक पाँच वर्ष और चुस्ती व फुर्ती के साथ। उसके बाद कोई जिएगा, तो बुड्ढा हो जाता है, कमजोर हो जाता है, इन्द्रियाँ साथ देना बंद कर देती हैं। बुढ़ापे में किसी को जवान देखा है, फिर हम कैसे जवान रह सकते हैं? स्वयं भागदौड़ करके कैसे काम कर सकते हैं? इस भाग-दौड़ के लिए हमने नये आदमी तलाश किये हैं और उनको ही बनाने में लग रहे हैं।

तप एकांत में ही क्यों?

आपने बिल्ली देखी है। बिल्ली जब बच्चा देती है, तो क्या सड़क पर देती है? नहीं, कोई ऐसा स्थान तलाश करती है, जहाँ कोई आदमी न हो और उसे देखता न हो। ये छिपकर करने वाले काम हैं-एकांत के काम हैं। हम भी अब आप लोगों से अलग हटकर एकांत में जा रहे हैं, ताकि अपनी शक्तियों को एकत्र कर सकें और शक्तिशाली बन जाएँ। एकांत होने का मतलब यह है कि आपको हम दिखाई न पड़ें। दिखाई न देने से क्या आपको कोई नुकसान है? और दिखाई पड़ें, तो आपको कुछ फायदा है क्या? बताइये, क्या आपको अपना दिल दिखाई पड़ता है? नहीं दिखाई पड़ता। आपने अपने गुर्दे देखे हैं? किसी और के भले ही देखे होंगे, पर अपने नहीं देखे होंगे। फेफड़े आपने देखे हैं क्या? वह भी नहीं देखे हैं। शीशे में आपने अपने आँख और कान देखे हों तो देखे हों और वह भी प्रत्यक्ष नहीं देखे होंगे। इस प्रकार आप हर चीज को नहीं देख सकते। देखना कोई बहुत जरूरी नहीं । यदि जरूरी होता, तो भगवान् शंकर और पार्वती जी कैलाश पर्वत पर मानसरोवर, जो यहाँ से बहुत दूर है, तप करने क्यों जाते? दिल्ली के चावड़ी बाजार में क्यों नहीं बैठ जाते? तब उनके पास देखने वाले-दर्शन करने वाले हजारों आदमी आते? विष्णु भगवान् के बारे में मैंने आपको बताया है कि वे कहाँ रहते हैं। वे क्षीरसागर में शेषशैया पर सोये रहते हैं और एकांत में रहते हैं। कोई काम नहीं करते।

मित्रो! एकांत का मतलब यहाँ वह भी नहीं है, जो अभी मैंने बताया है-भाग खड़े होना, आलसी हो जाना। यद्यपि एक मतलब यह भी होता है दूसरा मतलब एकांत का है-अपनी शक्तियों को एकत्रित करना। माँ के पेट में जब बच्चा रहता है। न किसी से बात करता है, न बोलता है और न हिलता-डुलता है। न अपनी आवश्यकता कहता है, न लड़ता है, न चिल्लाता है। चुपचाप नौ महीने तक माँ के पेट में बैठा रहता है। इससे क्या फायदा है ? इससे यह फायदा है कि पानी की एक नन्हीं बूँद एक पूरे बच्चे के रूप में विकसित हो जाती है।

आजकल हमारा जो एकांत चल रहा है-सूक्ष्मीकरण चल रहा है, इसके बारे में आप उसी तरीके से समझिये। आप यह न सोचिये कि हम भाग खड़े हुए। आप यह भी न सोचिये कि हमने आपसे मुहब्बत खत्म कर दी। मुहब्बत हमारी जिंदगी से खत्म नहीं हो सकती। उन लोगों के बारे में सोचिये, जो बैरागी हो जाते हैं, माँ-बाप को छोड़ देते हैं। भाइयों को, बच्चों को बिलखता छोड़ जाते हैं। ऐसे बैरागी हम कहाँ हो सकते हैं ? ऐसा हमारे लिए संभव नहीं है, क्योंकि वह रास्ता जिन लोगों ने अख्तियार किया है, उन लोगों में से सभी को हमने रोका है। सबको मना कर दिया है और कहा है कि नहीं भाई, यह रास्ता गलत है। समाज की सेवा कीजिए, समाज के साथ रहिए। समाज के साथ में स्वयं भी आगे बढ़िये, अपने गुणों को बढ़ाइये और दूसरों को आगे बढ़ाइये। हमारी यही मनोकामना है।

अभी मैं आप से अलग होने की सफाई दे रहा था। इस संबंध में क्षीरसागर में बैठे भगवान् विष्णु की सफाई दी, कैलाशवासी भगवान् शंकर की सफाई दी-अकेले एकांत में रहने की। चलिए अभी मैं आपको और उदाहरण बताता हूँ। पांडिचेरी के अरविंद घोष का नाम सुना है न आपने, उन्होंने अपने सब काम कर लिये थे। अपनी ताकत, जितनी भी थी, सब खर्च कर ली थी। ताकतवार नौजवानों को साथ लेकर अँग्रेजों को भगाने का उनका मकसद था, पर वह पूरा न हो सका। फिर उन्होंने एक नेशनल कॉलेज खोला, उसमें विद्यार्थी पढ़ाये। इस नयी पीढ़ी के लोगों को समझाया कि आजादी की लड़ाई लड़नी चाहिए। वह प्रयास भी यूँ ही नकारा साबित हुआ। इसके बाद उन्होंने एक राजनैतिक पार्टी बनायी, बम चलाये। बम चलाकर अँग्रेजों को भगाने-डराने की बात कही, लेकिन वह बात भी उनकी सफल नहीं हुई।

फिर उनको दिखाई पड़ा कि सबसे बड़ी ताकत कौन-सी है, जिससे कि बड़ी-से-बड़ी हुकूमतों से टक्कर लेना संभव है। जब उनको दिखाई पड़ा

कि वह शक्ति केवल तप में है। तप कहाँ होता है ? तप के लिए एकांत चाहिए। पांडिचेरी के अरविंद घोष तप के लिए एकांत में चले गये। मालूम है न आपको। उनके साथ जो माताजी रहती थीं, वह भी एकांत में रहती थीं। दिन भर में एक बार दर्शन देने के लिए माताजी बाहर आती थीं। अरविंद साल भर बाद-छह माह बाद-जब उनका मन होता था, दर्शन दे जाते थे। उसमें भी दूर ही रहते थे। इससे क्या फायदा हुआ ? इसका फायदा यह हुआ कि उन्होंने सारे-के-सारे वातावरण को गरम कर दिया। ऐसा वातावरण गरम हुआ, जैसे गर्मी में चक्रवात आते हैं और धूल-मिट्टी के बवंडर उठते हैं और लगातार आकाश की ओर उठते रहते हैं। ऐसे ही कितने सारे चक्रवात यहाँ हिन्दुस्तान में तैयार हुए। उनमें से एक का नाम गाँधी, एक का नाम नेहरू, एक का नाम पटेल, एक का नाम सुभाष, एक का नाम मालवीय था। एक साथ इतने सारे महामानव कहीं दुनिया के पर्दे पर पैदा नहीं हुए। आजादी की लड़ाई में, आन्दोलनों में लोग तो बहुत सारे एक साथ हुए हैं, पर जब से जमीन बनी है, तब से कभी भी ऐसा नहीं हुआ, जब एक साथ किसी भी मुल्क में इतने सारे महापुरुष पैदा हुए हों, जितने कि अरविंद घोष के जमाने में हुए हैं।

महर्षि रमण का मौन तप

ठीक इसी तरह से महर्षि रमण का वाकया है। वे भी अकेले में रहते थे, मौन रहते थे, बात नहीं करते थे। उनका सत्संग होता था, हवन होता था। चिड़ियाँ आती थीं, दूसरे जानवर आते थे, उनके नजदीक बैठ जाते थे और उनकी मौनवाणी को सुना करते थे। आप भी हमारी मौन वाणी को बराबर सुनते रहेंगे। तब वाणी को आपके कान बर्दाश्त कर सकेंगे कि नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन हमारी यह आवाज जो दूसरी और तीसरी वाणी में होगी, अब वह बोलेगी। यह वैसी ही वाणी है, जिसे हम अभी आपके सामने बोल रहे हैं। इन्हीं वाणियों से हम आप से जिंदगी भर बात करते रहेंगे। इसके अलावा भी आदमी की तीन और वाणी हैं। एक है-मध्यमा वाणी, जो व्यक्ति के चेहरे से टपकती है। दूसरी है-परा वाणी, जो आदमी के विचारों से, दिमाग-से, निकलती है। तीसरी-पश्यन्ती वाणी है, जो मनुष्य के अंतरात्मा के अन्दर रहती है। यह सत्संग की वाणी है। इन तीन वाणियों को कोई बंद नहीं कर सकता, इनमें कोई रुकावट नहीं डाली जा सकती है। मौन रहकर भी-एकांत में रहकर भी ये तीन वाणियाँ बराबर काम करती रहती हैं। हमारी भी ये तीनों वाणियाँ बराबर काम करती रहेंगी और आपको फायदा देती रहेंगी।

हमसे कुछ पाने का प्रयास कीजिए

मित्रो! यह कब फायदा देंगी? यह तब फायदा देंगी, जब आप हमारे साथ घुलेंगे-मिलेंगे। अगर आप दूर-दूर रहेंगे, तो बात कैसे बनेगी? दूर रहने से काम नहीं बनेगा, आपको हमारे पास आना पड़ेगा। पास आने का केवल यही मतलब नहीं है कि आप शांतिकुञ्ज में, हमारे कमरे में आ जाते हैं, मिल जाते हैं, वरन् पास आने का मतलब यह है कि आप हमारे विचारों के साथ में कितनी गहराई से जुड़ते हैं। हमारे पास क्या रखा है? हमने जो त्याग, तपश्चर्याएँ, उपासनाएँ की हैं, ऐसे ढेरों आदमियों के नाम बता सकता हूँ, जिन्होंने इस तरह की उपासनाएँ की हैं। लेकिन सही बात-ईमानदारी की बात यह है कि हमारे गुरु की शक्ति-गुरु की सामर्थ्य हमें बराबर मिलती रही है और उसी के आधार पर कठपुतली की तरह हम तमाशा करते रहे हैं। आप भी आइये, आपके लिए भी रास्ता खुला हुआ है।

हमसे पहले भी बहुत से आदमियों ने इस तरह से रास्ता खोल दिया है। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद के जोड़े का नाम सुना है आपने। रामकृष्ण परमहंस केवल ध्यान करते थे। उन्होंने न कोई अनुष्ठान किया, न कोई विशिष्ट जप किया, न हिमालय गये, रामकृष्ण परमहंस की सारी आध्यात्मिक संपदा उनके शिष्य नरेन्द्र (विवेकानन्द) को मिल गयी। उसी को लेकर विवेकानन्द ने वह काम किया, जो रामकृष्ण परमहंस अपने शरीर से नहीं कर सकते थे।

आपने विरजानन्द और महर्षि दयानन्द का नाम सुना है। कौन दयानंद? आर्य समाज वाले। उनके गुरु स्वामी विरजानंद मथुरा में रहते थे। वे आँखों से अंधे थे। उन्होंने अपनी सामर्थ्य को स्वामी दयानन्द को हस्तान्तरित कर दिया। इसके बाद स्वामी दयानंद ने वह काम कर दिखाया, जिसे हजार आदमी भी एक समय में नहीं कर सकते। आपके लिए भी रास्ता खुला हुआ है। आप हमारी शक्ति का फायदा उठाना चाहें, जो आगे चलकर और भी ज्यादा हो जायेगी, तो उठा लीजिए। पहले से भी ऐसे बहुत से लोग हैं, जो हमारे साथ चलते रहे हैं। हमारा कहना मानते रहे हैं, उन्हें लाभ ही हुआ है। गाँधीजी के साथ में मीरा बहिन चलती थीं, नेहरू जी चलते थे, सुभाष चलते थे, विनोबा चलते थे उन्हें क्या मिला? सबको फायदा ही हुआ है।

आपने स्वामी रामदास और शिवाजी का नाम सुना है। शिवाजी कौन थे? शिवाजी वह व्यक्ति थे, जिन्होंने हिंदुस्तान को आजाद कराने की तवारीख में

पहला कदम उठाया और समर्थ गुरु रामदास वह थे, जो संत प्रकृति के हो गये थे और इस बात की तलाश में थे कि संत के लिए आजादी की लड़ाई लड़ना, खून-खच्चर करना आदि मुनासिब नहीं है, इसलिए कोई दूसरा रास्ता तलाश करना चाहिए। उन्होंने शिवाजी को तलाश लिया। उनका इम्तिहान सिंहनी का दूध मँगाकर लिया और इसके बाद उन्हें भवानी के हाथ से-देवी के हाथ से एक ऐसी तलवार दिलायी, जिसे लेकर के वे अक्षय हो गये, अजेय हो गये। जहाँ कहीं भी वह तलवार गयी, उन्हीं की विजय हुई।

जिस तरह शिवाजी और समर्थ गुरु रामदास का जोड़ा है, उसी तरीके से चाणक्य और चन्द्रगुप्त का जोड़ा है। चाणक्य के पास बहुत सामर्थ्य थी-शक्ति थी, किंतु चन्द्रगुप्त जो एक दासी का बेटा था, कुछ नहीं कर पाता था। लेकिन चाणक्य की शक्ति को जब उसने स्वीकार कर लिया, तो वह चक्रवर्ती सम्राट बन गया। "मैं आपकी शक्ति को स्वीकार करता हूँ" का मतलब यह होता है कि मैं आपके कहने पर चलूँगा। अगर आप यह कहते हैं कि क्या यह शक्ति हमें भी मिल जाएगी तो यह बेकार की बात है, क्योंकि शक्तियाँ ऐसे कहीं किसी को नहीं मिली हैं। वे उद्देश्यों के लिए मिलती हैं। किसी काम के लिए मिलती हैं, किसी खास मकसद के लिए, किसी वजह के लिए मिलती हैं और किसी खास आदमी को मिलती हैं।

शक्ति-अनुदान विशेष उद्देश्यों के लिए

मित्रो! हम खास आदमी भी हैं और हमें जो शक्तियाँ मिली हैं, वे किसी खास मकसद में लगाने के लिए मिली हैं। हमारे गुरु से तीन बार हमारा मिलना हुआ है, लेकिन वे निरंतर हमारा मार्गदर्शन किया करते हैं। ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्होंने धीरे से कान में आकर या जोर से कोई बात कही हो और हमने गौर से उनकी बात सुनी न हो। नाव को और राहगीर को जानते हैं न आप। नाव पार होती है, तो क्या राहगीर जो उस पर बैठा हुआ है, पार नहीं होगा? जिस राहगीर को तैरना नहीं आता वह कैसे पार होगा? लेकिन जो नाव में सवार हो जाता है, उस नाव का मल्लाह नाव को भी पार लगा देता है और बैठे हुए मुसाफिरों को भी पार लगा देता है। आप सब हमारी नाव में बैठे हैं, हम उसको भी पार लगा देंगे और आपकी जिंदगी को भी पार लगा देंगे। आपको निश्चित रूप से हमारी शक्ति मिलती रहेगी, हमारा सहयोग मिलता रहेगा। यह काम हम पहले भी करते रहे हैं और अब एकांत में भी बराबर करते रहेंगे।

समय की विभीषिका बड़ी विकट

साथियो! अब कुछ ऐसा वक्त आ गया है कि इस भयंकर वक्त में कुछ बड़ा कदम उठाये बगैर काम चलने वाला था नहीं। इन्हीं दिनों समय की विभीषिका ऐसी हुई है, जिसे आप पढ़ते होंगे। भविष्यवाणियाँ पढ़ते होंगे। टोरंटो की भविष्यवक्ता कॉन्फ्रेन्स-समाचार आपने पढ़ा है न, कोरिया का समाचार पढ़ा है न। सारी परिस्थितियाँ यह बताती हैं कि यह समय बड़ा भयंकर है। इन दिनों हवा में इतना जहर मिल रहा है, पानी में इतना जहर मिल रहा है, खाद्य पदार्थों में जहर मिल रहा है। आप जानते हैं कि परमाणु-भट्टियों से, परमाणु-विस्फोटों से कितनी तेजी से जहर फैल रहा है, जिन-जिन देशों ने बिजली पैदा करने के लिए अपने यहाँ अणु भट्टियाँ लगायी हैं, उनसे विकिरण निकल रहा है। जनसंख्या में कितनी अंधाधुंध वृद्धि हो रही है। मक्खी-मच्छरों से भी ज्यादा मनुष्यों की वृद्धि हो रही है। अगले दिनों खड़े होने के लिए उन्हें कहीं एक जगह भी नहीं मिलने वाली है। सड़क पर चलना उनके लिए मुश्किल हो जाएगा। खाना उनके लिए मुश्किल हो जाएगा।

यह सब मुसीबते नहीं-बहुत बड़ी मुसीबतें हैं। एटमी युद्ध से भी ज्यादा भयावह है, ज्यादा बच्चों का पैदा होना। यह क्राइम को-अपराध को जन्म देगा। आपने देखा नहीं, आज आदमी की मनोवृत्ति अपराध करने की हो गयी है। ईमानदारी व भलमनसाहत किसी की समझ में नहीं आती। लाला जी दुकान पर बैठे हुए तो जरूर हैं, पर मिर्च में गेरू मिला रहे हैं। लोग मन्दिर में दर्शन करने जरूर जाते हैं, हनुमान् चालीसा का पाठ जरूर करते हैं, लेकिन नियत उनकी भी खराब है। आज सबकी नीयत खराब हो गयी है। यदि आदमी की नीयत खराब हो जाए, तो उससे भयंकर भला कौन हो सकता है?

ये सारी-की-सारी चीजें एक साथ मिल क्या गयी हैं, विश्व-मानवता के सामने मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। अब आप ही बताइये भला इतनी चीजों से टक्कर कौन ले? हर आदमी ले लेगा? आप ले लेंगे? चौराहे पर खड़े होकर भाषण देने वाले नेता लोग टक्कर ले लेंगे? न, यह बिल्कुल भी संभव नहीं है। इसके लिए तो कोई सामर्थ्यवान व्यक्ति चाहिए। जब तक कोई सामर्थ्यवान न हो, तो इतनी बड़ी शक्तियों से टक्कर नहीं ली जा सकती। फिर टक्कर लेने वाले बहुत सारे तैयार भी तो करने हैं। दो काम करने हैं। एक तो जो भयंकरता हमारी आपकी ओर घनघोर घटाओं के तरीके से बढ़ती चली आ रही है, उससे टक्कर लेनी है। टकराव के लिए मजबूत आदमी चाहिए, मजबूत हस्तियाँ चाहिए, मजबूत आध्यात्मिक शक्ति चाहिए।

भागीरथी पुरुषार्थ की वेला

आपने पढ़ा होगा–सृष्टि के इतिहास में दो बार ऐसी ही घटनाएँ हो चुकी हैं। एक बार सब जगह पानी की कमी पड़ गयी। पानी कहीं था ही नहीं। भागीरथ स्वर्ग से गंगा को जमीन पर लाने के लिए तप करने लगे। गंगा जमीन पर आयी और धरा चहुँ ओर लहलहा उठी। यह क्या है तप की शक्ति। इसी तरह दूसरी घटना है। बहुत समय पहले की बात है–वृत्रासुर नामक एक ऐसा राक्षस हुआ है, जिसने सारे देवताओं को मारकर भगा दिया था। तब उसका मुकाबला करने के लिए महर्षि दधीचि को अपनी हड्डियाँ देनी पड़ी थीं। उसका जो वज्र बना, उससे वृत्रासुर मारा गया। जब यह सब आपने सुना है, तो एक बात और सुन लीजिए कि आप चाहें तो हमारी भी संगति उसी से बिठा सकते हैं।

वृत्रासुर हनन हेतु दधीचि ने दिया वज्र

आज इस तरह का समय आ गया है कि भगीरथ को फिर से इस धरती पर ज्ञान की गंगा लानी है, जिससे दुनिया में शांति पैदा हो। दूसरी ओर दधीचि का वज्र, जो इंद्र के हाथ में रहा था और जिसके प्रहार से वृत्रासुर का चूरा हो गया था, चूरा कर देने वाली ऐसी शक्ति चाहिए। वज्र की शक्ति और ज्ञान गंगा की शक्ति। इन दोनों शक्तियों का संतुलन करने के लिए हमारा कार्यक्रम चल पड़ा है। हम उसी के लिए तप कर रहे हैं। आप यह मत सोचिए कि हम भाग रहे हैं। हम भाग नहीं रहे। हम माँ के पेट में बैठ रहे हैं, ताकि अपनी शक्ति को बढ़ा करके और ज्यादा कर सकें। क्या आप यही ख्याल करते हैं कि औरों की तरीके से हम भी स्वर्ग प्राप्ति के लिए कोशिश कर रहे हैं ? या मुक्ति के लिए कुछ कर रहे हैं ? आपका क्या यही ख्याल है कि सिद्धियाँ और ऋद्धियाँ पाने के लिए हम तप कर रहे हैं ? नहीं बेटे, यह तो हमने बहुत पहले से ही प्राप्त कर लिए थे। स्वर्ग हमारी निगाहों में है। हमारी आँखों में है। स्वर्ग हमें हर जगह दिखाई पड़ता है।

इसी तरह मुक्ति का बंधन हम न जाने कब से काटकर फेंक चुके हैं, लोभ हमारे पास फटकता भी नहीं है। हमारे पास आता भी नहीं है। वासनाओं की सलाखें, अहंकार की जंजीरें जाने कब की तोड़कर फेंक चुके हैं। मुक्ति के लिए भी प्रयास तो हम तब करें, जब यहाँ रहना हो और सिद्धियाँ ? सिद्धियों के लिए उसी को कोशिश करनी चाहिए जिसके पास यह न हों। हमारे पास सिद्धियाँ भी हैं और हम मुक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं। हमारे पास स्वर्ग चारों ओर

नजदीक ही घूमा करता है। हम अब अपने आपको तपा रहे हैं। हीरा देखा है। वह कोयला होता है और इसी कोयले को जब ज्यादा गर्मी दी जाती है, तो वह हीरा बन जाता है। एटम देखा है न आपने? वह एक धूल का कण है, जो जमीन पर पड़ा रहता है, लेकिन जब उसी को वैज्ञानिक विधि से अलग कर लिया जाता है और उसका विस्फोट किया जाता है, तो वह हिरोशिमा और नागासाकी जैसा विध्वंसकारी बन जाता है।

पंचमुखी गायत्री की उपासना पाँच वीरभद्रों का जागरण

मित्रो! अब हम पंचमुखी गायत्री की साधना करने जा रहे हैं। अब तक हमने एकमुखी गायत्री की उपासना की है। तो आपने हमें क्यों नहीं बताई पंचमुखी गायत्री की उपासना? इसलिए कि आप इसे नहीं कर सकते हैं। आपको तो एकमुखी गायत्री की उपासना करना ही मुश्किल है। माँ और बेटे का सम्बंध निभाना ही मुश्किल है। अब हम पंचमुखी गायत्री की, पाँच देवताओं की उपासना कर रहे हैं। पाँच इष्टों की उपासना कर रहे हैं। पाँच शक्तियों की उपासना कर रहे हैं, क्योंकि हमें पाँच क्षेत्रों में काम करना है। बुद्धिजीवियों के साथ काम करना है। हमको राजनेताओं की अक्ल ठिकाने लगानी है। हम कलाकारों को एक खास रास्ते पर ले जाएँगे। हम संपन्न आदमियों से कुछ काम कराएँगे और आप जैसे लोगों से जिनको हम भावनाशील कहते हैं। आप बुद्धिजीवी न सही, राजनेता न सही, किसी देश के प्रधानमंत्री न सही, उससे हमें क्या लेना-देना। कलाकार आप नहीं हैं, आपकी वाणी में जोश-खरोश और दूसरी अन्य गायन संबंधी विशेषताएँ नहीं हैं, तो न सही? आप संपन्न नहीं हैं, तो न सही, मरने दीजिए पैसे को, भावनाशील तो हैं आप। यह संसार की, सबसे बड़ी दौलत है। हमें आपको अग्रिम मोर्चे पर खड़ा करना है।

इसी तरह भावनाशीलों को, बुद्धिजीवियों को, कलाकारों को, राजनेताओं को, संपन्न व्यक्तियों को आगे से जाकर के हमको झकझोरना है और इस तरीके से रास्ते पर लाना है कि वे लड़ाई के मोर्चे पर हमारे साथ-साथ चलें। कंध-से-कंधा मिलाकर चलें। पाण्डवों का नाम आपने सुना है न? वे पाँच भाई थे। अर्जुन धर्नुधर था, उसके साथ-साथ सभी भाई चलते थे। क्या मजाल कि कहीं कोई अलग हो जाए। हम इसी तरीके से प्रबंध कर रहे हैं। हमारी पाँच गुनी शक्ति बढ़ने जा रही है। हम पाँच वीरभद्र पैदा करने में जुट रहे हैं। हम आपसे दूसरे नहीं जा रहे हैं और न आपसे अलग हो रहे हैं।

मित्रो, अभी हम आपको अपनी सफाई दे रहे थे कि कहीं आप इस तरीके से न सोच लें कि गुरुजी अपनी मुक्ति के लिए स्वर्ग प्राप्ति के लिए हमको दगा दे रहे हैं और हमसे जो बातचीत करते थे, उस तरीके को भी उन्होंने बंद कर दिया। ऐसी बात नहीं है, हम तो आपके पीछे भूत के तरीके से लगे हैं। इसी तरह अब हम कलाकारों के पीछे, राजनेताओं के पीछे, बुद्धिजीवियों और संपन्न व्यक्तियों के पीछे भूत की तरह से लगेंगे। नया युग लाने के लिए हमें जिन भी शक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी, उन्हें इस कार्य में नियोजित करेंगे। उसके लिए तब क्या करना पड़ेगा? हम आपसे अलग चले जाएँगे। लेकिन इसका यह मतलब नहीं समझना कि अलग चले जाने से कोई दुश्मनी होती है। माँ अपने बच्चे को गुरुकुल में पढ़ाने के लिए भेज देती है, तो क्या माँ बच्चे की दुश्मन होती है? धन कमाने के लिए कोई परदेश चला जाता है और परदेश में दो पैसे कमाकर अपने बच्चे को मनीआर्डर से भेजता रहता है। आप क्या समझते हैं कि बाप, जो परदेश चला गया था, उसने अपने बच्चों से प्रेम-मुहब्बत कम कर दी? अपने माता-पिता से मुहब्बत कम कर दी? न, ऐसा मत कहिए। अलग होने का मतलब मुहब्बत कम करना नहीं होता। इस मुहब्बत को सार्थक करने के लिए ही हमारे ये नये कदम उठे हैं।

देते ही रहेंगे हम जीवन भर

आप हमको देख नहीं पाएँगे, तो कोई हर्ज की बात नहीं। जब आप अपने आमाशय, गुर्दे, जिगर, हृदय आदि को नहीं देख सकते, फिर भी वे काम करते हैं। आपका दिल आपके साथ धड़कता तो है, फिर आप क्या शिकायत करते हैं। यह ऐसा भयंकर समय है, जिसमें कि आदमी की मुस्तैदी-चौकीदारी की बराबर जरूरत है। इस संधिकाल की संकट की वेला में हम बराबर काम करेंगे और आपके साथ रहेंगे। यह हमारी आवश्यकता भी है, इसमें कभी कमी नहीं आने देंगे। हमने जिंदगी भर दिया है और देते रहेंगे। आपके नजदीक न रहेंगे, तो क्या? सूर्य आपके नजदीक है क्या? फिर भी आप धूप में बैठे हैं और वह आपके कपड़े सुखा जाता है। चन्द्रमा आपके नजदीक है क्या? हजारों मील दूर है। समुद्र आपके नजदीक है क्या? समुद्र जाने कितनी दूर है आपसे, फिर भी वह बराबर आपका ख्याल रखता है। आप जो पानी पीते हैं, स्नान करते हैं, कपड़े धोते हैं, वह पानी कहाँ से आता है? बादलों से आता है। बादल कहाँ से आते हैं? समुद्र से। समुद्र का दिया हुआ पानी आप पीते हैं, परंतु समुद्र को

शायद ही आपने देखा हो। सूर्य और चन्द्रमा की शक्ल तो आपने देखी है, पर उसके नजदीक गये हैं क्या? उसके पास तक पहुँचे हैं कभी? नहीं पहुँचे हैं। वह आपसे बहुत दूर है। जब सब चीजें आप से बहुत दूर हैं, लेकिन दूर रहते हुए भी आपकी इतनी सेवा करते हैं कि आपकी जिंदगी को सँवारे बैठी हैं। यदि हवा आपको न मिले, तो आपके प्राण निकल जाएँगे। हवा आपने देखी नहीं। अतः देखने की बात आप अपने दिमाग से हटा दें। आप हमको न देख पायें या हम आपको, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है। हम एकांत में रहकर ज्यादा मजबूती से काम करेंगे और आपसे भी यही उम्मीद करेंगे कि आप भी ज्यादा मजबूती के साथ हमारे साथ-साथ कदम उठाएँगे।

आप हमारे विचारों के समीप आएँ

मित्रो! हम चाहते हैं कि आप हमारे नजदीक आयें, साथ-साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलें। हमारे नजदीक और पास नहीं आयेंगे और दूर बने रहेंगे, तो फिर हमारा शक्ति एकत्रित करना भी बेकार है। अगर आप बुद्धिजीवी हैं, राजनेता हैं, कलाकार हैं, संपन्न हैं, लेकिन भावनाशील नहीं हैं, तो हमारे किस काम के? आपको भावनाशील होना चाहिए। हमें भावनाशीलों की जरूरत है। अन्यथा हमारे मुहल्ले-पड़ोस में ढेरों मजदूर काम करते हैं, तो किसी की कृपा या अनुग्रह उन पर हुई है क्या? हम अपने गुरुदेव के नजदीक हैं। तीन बार उनके पास गये हैं। बाकी चौबीसों घंटे उन्हीं का हुक्म बजाते हैं और कहते है कि आप आदेश दीजिए।

हम क्या कहते और चाहते हैं, उस बात को आप गौर से सुनना। अगर आप नहीं सुनेंगे, तो फिर हमारे नजदीक रहने, न रहने से कोई फायदा नहीं। शंकर भगवान् और पार्वती बहुत दूर रहते हैं—कैलाश पर्वत पर, परंतु इतनी दूर रहते हुए भी आपकी सेवा में कोई कमी नहीं आने देते हैं। जब भी आप ध्यान करते हैं, वे कैलाश पर्वत से उतर करके आप तक आ जाते हैं। विष्णु भगवान् क्षीरसागर छोड़ करके आप तक आ जाते हैं। अतः आप सिद्धांतों को सुनिये, सिद्धांतों को समझिये। बच्चों का सा मुँह मत देखिये कि आप हमारी शक्ल देखें और हम आपकी शक्ल देखें। दर्पण थोड़े ही हैं, जिसमें आप हमारी शक्ल देखें और हम आपकी शक्ल को देख लें। देखना हो तो देख भी लेना, इंतजाम भी किये देते हैं। आप आमने-सामने से आवाज न सुन सकेंगे न सही, हम टेप कराये देते हैं, इसे आप सुन लेना। आपको संतोष तो हो। आपको संतोष हो जायेगा, तो हमको बहुत प्रसन्नता होगी।

आज आपको सफाई देने के लिए और आगे का काम बताने के लिए ही बुलाया है। सफाई इसके लिए नहीं कि अभी हमको जीवित रहना है। इस शरीर से न भी रहें तो सूक्ष्म शरीर से रहेंगे। मनुष्य के तीन शरीर होते हैं- स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल शरीर मर भी जाए, तो इससे क्या बिगड़ता है। जिंदा आदमी भी बहुत काम कर सकते हैं किंतु स्थूल शरीर के न रहने पर उससे कई गुना अधिक काम सूक्ष्म शरीर से किया जा सकता है। गुरुजी तो फिर क्या आप हिमालय चले जाएँगे? हिमालय चले जायेंगे, तो आपको क्या दिक्कत आयेगी? हमारे गुरुजी भी तो हिमालय में रहते हैं और हिमालय में रहते हुए भी हमारी बहुत सेवा करते हैं। हम कहीं भी चले जाएँ, हिमालय चले जाएँ, शांतिकुंज में रहें, या इस शरीर को छोड़ जाएँ, पर आप यह विश्वास रखिये कि हम यहीं शान्तिकुञ्ज में मौजूद रहेंगे। आप हमको बराबर अपने समीप पायेंगे और हम आपके लिए बराबर काम कर रहे होंगे। बस आपसे इतनी ही प्रार्थना है कि आप भी हमारे लिए कुछ काम कीजिए, तो मजा आ जायेगा। और क्या कहूँ आगे। आज की बात खत्म करता हूँ।

ॐ शान्तिः

गुरु दक्षिणा चुकाएँ-समयदान करें

(हीरक जयंती वर्ष १९८५ की पूर्व वेला में दिया गया)

श्रावणी संदेश

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

ठोस काम किया है हमने

देवियो, भाइयो! आज रक्षाबंधन का सामूहिक पर्व है। यह संकल्प का पर्व है। कर्त्तव्य-निर्धारण का पर्व है। आज हमारे ध्यान के दो केन्द्र हैं-एक तो भगवान्, जो हमें धक्का देता रहता है और आगे बढ़ाता रहता है। दूसरा भगवान् आप लोग हैं, जो हमारे कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं। एक भगवान निराकार है तथा दूसरा साकार है। आप साकार भगवान हैं, जो हमारे कदम से कदम मिलाकर चलते हैं। हमारी बातों को मानते हैं तथा श्रम करते हैं। हमारे क्रियाकलापों में शामिल रहते हैं। आज हमारी इच्छा हुई कि आपसे अपने मन की बातें-जी की बातें करूँ। तो महाराज जी आप अपना कुशल समाचार बताएँ।

सर्वजन सहयोग

मित्रो! हमारे ऊपर भगवान् की छाया है और जब तक वह बनी रहेगी, हमारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। स्वास्थ्य हमारा ठीक है। थोड़े दिन पहले एक पगले व्यक्ति द्वारा वार करने के कारण कुछ चोट लग गयी थी, अब वह ठीक है। सेहत हमारी ठीक है। मन भी ठीक है। साधना भी ठीक है और कुछ कमी रह जाएगी, तो आप लोग कदम बढ़ा देंगे, तो वह भी पूरी हो जाएगी। हमने अब तक बहुत काम किया है। अभी हमारे सामने तो आपको पता नहीं चलता है, परंतु बाद में पता चलेगा कि हमने काफी काम किया है। हमने पेपरबाजी भी नहीं, विज्ञापन भी नहीं किया और भी कुछ नहीं किया, परंतु फिर भी हमने इतना काम कर लिया, जितना किसी संस्था ने नहीं किया। न केवल हिंदुस्तान में, वरन् उसके बाहर भी बहुत काम किया है। हमने ठोस काम किया है।

मित्रो! हम से मतलब आप सबके द्वारा है। आप हमारे मित्र हैं, सहयोगी हैं। हम एवं आपने मिलकर बहुत बड़ा काम किया है। एकाकी भगवान् के लिए भी यह संभव नहीं था। गाँधी जी ने भी अकेले स्वतंत्रता संग्राम नहीं लड़ा था। उनके साथ भी एक सत्याग्रही सेना थी। उसके माध्यम से ही

आंदोलन चलाया तथा अंग्रेजों को इस देश से खदेड़ बाहर किया एवं भारत को आजाद कराया। भगवान् बुद्ध के लिए भी अकेले धर्मचक्र-प्रवर्तन संभव नहीं था। उन्होंने एक लाख परिव्राजक बनाए और उनके माध्यम से उन्होंने विचारों को जन-जन तक पहुँचाया। विनोबा ने भूदान का कार्य भी अनेक सर्वोदयी कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से किया था।

भगवान् राम ने समुद्र को पाटने एवं रावण पर विजय प्राप्त करने का कार्य क्या अकेला ही किया था? नहीं उसे उन्होंने हनुमान, अंगद, नल-नील आदि वानर एवं भालुओं के सहयोग से पूरा किया था। भगवान् कृष्ण ने महाभारत यानी ग्रेटर इंडिया का कार्य क्या स्वयं अकेले किया था? नहीं यह संभव नहीं था। तो क्या गोवर्धन उन्होंने स्वयं उठा लिया था? नहीं, यह भी संभव नहीं था। यह सब कार्य उन्होंने ग्वाल-बालों के सहयोग से पूरा किया।

मोती चुने हैं हमने

जगत की परंपरा को जाग्रत एवं जीवंत बनाए रखने के लिए भगवान् के कार्य को पूरा करने के लिए हमने भी एक संगठन बनाया। आप हमारे साथी एवं सहयोगी हैं। आपको हमने बहुत मुश्किल से ढूँढ़ा है। आपने तो सोचा होगा कि हम पत्रिका के ग्राहक बन गए और गुरुजी के हो गए। नहीं बेटे, हमने आपको हिलाया है, झकझोरा है, प्रेरणा दी है, तब आप आए हैं। आपको हमने बुलाया है। हमने आपके पहले जन्म की बात पर विचार किया, जिसमें देखा कि इनमें संस्कार हैं, जो भगवान् का काम कर सकते हैं, उन्हें हमने जगाया है। बहुत से बाबा जी आते हैं और न जाने क्या-क्या बातें बतला जाते हैं। उनकी बातों को कोई सुनता भी नहीं है, परंतु हमारे बारे में आपने ऐसा नहीं किया, आपने हमारी बातों को ध्यान से सुना हृदय में धारण किया। इसके साथ ही उसे क्रिया में परिणत करने के लिए भी अपना समय, श्रम व अक्ल लगाने के लिए तैयार हो गए और लग रहे हैं। यह बहुत प्रसन्नता की बात है। यह हमारे प्रयास के साथ ही साथ आपके पूर्व जन्म के संस्कार का ही फल है।

मित्रो! शेर का एक बच्चा भेड़ों के बीच में चला गया था और अपने स्वरूप को भूल गया था। जब एक शेर ने उसे उसकी छाया दिखाई और उसका स्वरूप दिखलाया, तो वह जाग्रत हो गया। हम एवं आप दोनों सिंह हैं। भेड़ वह होता है, जो चौबीस घंटे पेट और प्रजनन की बात सोचता है। आप इससे आगे हैं। आपके सहयोग से ही यह मिशन आगे बढ़ पाया है। हमने आपको ढूँढ़

निकाला है। हमने गहरे पानी में डुबकी लगायी है और मोतियों को चुन-चुनकर इकट्ठा किया है। मोती सड़क पर नहीं पड़ा था, जो हमने केवल चुन लिया है। हमने काफी परिश्रम किया है, तब आपको पाया है। आपको बड़ी मुश्किल से जोड़ पाए हैं हम। आपको हमसे जुड़ा रहना चाहिए।

साथियो! आजकल हम सूक्ष्मीकरण साधना में हैं। दुनिया के सामने एक बड़ी मुसीबत आ गयी है। उसके समाधान के लिए हमें बड़ा काम करना है। आगे खुशहाली लाने के लिए भी प्रयास करना है। यह प्रयास भागीरथ व गंगा अवतरण एवं दधीचि की हड्डी से वज्र बनाने से कम नहीं है, जो असुरता को समाप्त करने के लिए आवश्यक है। हमारा प्रयास उसी स्तर का है। इस महान कार्य को जब हम कर रहे हैं तो आपको हमारा सहयोगी एवं सहभागी अवश्य बनना चाहिए। आपको बनना ही पड़ेगा, चाहे आप मन से करें या बिना मन से।

दो काम हमारी साधना के साथ करें

आपको इसमें क्या करना होगा? हमने आपको दो काम बतलाए हैं। आपको हमने एक बात यह कही है कि सूर्योदय के समय एक माला गायत्री महामंत्र का जप आपको अवश्य करना चाहिए, ताकि हमारे इस महापुरश्चरण को-इस योजना को बल मिले। दूसरा हमने आपको यह कहा था कि आपको जब हमसे मिलना हो, बातें करनी हो तो आप बेतार का तार बना लें। सूर्योदय के एक घंटे पहले से सूर्योदय के एक घंटे बाद तक जब आप हमारा चिंतन करेंगे, तो आपको हमारा संदेश, मार्गदर्शन एवं सहयोग मिलेगा। इसके अलावा हम आपसे और क्या चाहेंगे। **आप हमारे बच्चे हैं, हम जो कर रहे हैं, वह आप करें, यही हमारी इच्छा है। हम जिस परंपरा पर चले हैं, आपको भी उसी पर चलना चाहिए।**

मित्रो, हमने ऋषि परंपरा को ग्रहण किया है। हमने साधु-ब्राह्मण का, संत का जीवन ग्रहण किया है। आपको भी वही ग्रहण करना चाहिए। संत वह, जो दुनिया को हिला दे। गाँधी, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद संत थे, जिन्होंने दुनिया को हिला दिया था। आपको भी वैसा ही बनने का प्रयास करना चाहिए। ब्राह्मण अपरिग्रही होता है तथा संत सेवाभावी होता है। आपको इन दोनों परंपराओं को कायम रखना चाहिए। हमने यही रास्ता अपनाया है। आप से जितना संभव हो, इसी परंपरा को अपनाने का प्रयत्न करें। आप अपनी निजी

महत्त्वाकांक्षा में काट-छाँट करें। आपकी महत्त्वाकांक्षा कम होनी चाहिए। आपकी इच्छा कम होनी चाहिए। हिंदुस्तान के आम नागरिक की तरह आपका जीवन होना चाहिए। आपको अपने परिवार को ज्यादा नहीं बढ़ाना चाहिए। जो हैं, उनमें से प्रत्येक सदस्य को स्वावलंबी बनाने का प्रयास करें। इससे आपको व उनको दोनों को प्रसन्नता होगी। यदि आप ऐसा कर सकेंगे, तो ही हमारे साथ चल सकेंगे।

बीच में न भागें, उत्साह बनाए रखें

अभी तो आप इस समय हमारे साथ जब उत्साह आता है, तो चलने लगते हैं और जब उत्साह कम हो जाता है तो मगर की तरह पानी में जा बैठते हैं। यह पानी के बुलबुले की तरह से काम करना क्या कोई शान की बात है? अगर चलना है, तो फिर चलना ही है, रुकना नहीं। यही शान की बात होगी। हमारे गुरु ने हमारी शान रखी, हम आपकी शान रखेंगे। आप हमारी जिंदगी को देखिए, गाँधी जी की जिंदगी को देखिए, अन्य संतों की जिंदगी को देखिए, जिन्होंने जो संकल्प लिया, जो लक्ष्य बनाया, उसके लिए जीवन के अंत तक डटे रहे। बीच-बीच में वह भागे नहीं हैं। अगर बीच-बीच में वह व्यक्ति भागेगा, तो वह वापस कैसे आएगा? महापुरुष आखिरी दम तक अपने उद्देश्य पर डटे रहे, संकल्प पर अडिग रहे, अपने स्थान पर बने रहे। वे बीच में भागे नहीं है। अगर बीच में भागोगे, तो काम कैसे बनेगा? इससे बड़ी मुसीबत होगी। अगर कोई बैल मारने आएगा, तो आप गोबर करने लगेंगे, तो काम कैसे चलेगा? आपको उत्साह आता है, उमंग आती है, तो आप काम करते हैं और जब आपकी हवा निकल जाती तो आप चुपचाप हो जाते हैं। इससे काम कैसे चलेगा? अगर किसी काम को कीजिए, तो पूरा कीजिए। थोड़ा-सा काम करने से क्या फायदा?

एक लक्ष्य : एक ही चिंतन

मित्रो! हमने तो हमेशा अर्जुन की तरह तीर की नोंक तथा चिड़िया की आँखे ही देखी हैं। हमेशा हमें अपना लक्ष्य दिखलाई पड़ा है। आपको भी जितना बन पड़े, त्याग करना चाहिए, परंतु बीच में काम बंद करके भागना ठीक नहीं है। ढीला-पोला होने में फायदा नहीं है। शानदार आदमी एकनिष्ठ रहते हैं, एक जैसे रहते हैं। आपसे भी जितना बने, मिशन के लिए त्याग करें, महाकाल के लिए त्याग करें। हमारा एक ही निवेदन है कि नवयुग लाने के

लिए जनमानस का परिष्कार करना है। इसके लिए आपको बढ़-चढ़कर काम करना है। आपको मुस्तैदी का जीवन जीना चाहिए। आप वैसा बैल न बनें, जो रास्ते में बैठ जाता है। आप एक निष्ठा से, एक श्रद्धा से काम करें तथा लगे रहें। इससे आपका, हमारा तथा मिशन तीनों का कल्याण है। हमने अपना सारा जीवन एक लक्ष्य के लिए नियोजित किया है, आप भी अपने सारे जीवन को एक लक्ष्य के लिए नियोजित कीजिए।

हमारी हीरक जयंती

एक बात और आपसे कहनी है कि अब हमारी हीरक जयन्ती मनायी जाने वाली है। अब हम पचहत्तर साल के हो गये। अरे हम तो जब से यह सृष्टि बनी है, तभी से काम कर रहे हैं और जब तक यह रहेगी, हमें काम करना है। हमारी मुक्ति नहीं होगी। इस संसार में जब तक सब आदमी मुक्ति नहीं पा लेंगे, हमें मुक्ति की अभिलाषा नहीं है। इस दुनिया के सभी आदमी जब मुक्ति पा लेंगे, तो हम सबसे आखिरी आदमी होंगे, जो मुक्ति की अभिलाषा रखेंगे। मित्रो! यह हीरक जयंती क्या बात है? जब आदमी पचहत्तर वर्ष का हो जाता है, तो यह जयंती मनाई जाती है। सौ साल में शताब्दी मनाई जाती है। अब हमारा यह स्थूल शरीर विद्रोह कर रहा है। हम बहुत दिन जिएँगे नहीं, यह हमारी कामना नहीं है। अब हम सूक्ष्म एवं कारण शरीर में रहकर काम करना चाहते हैं। अब हम पाँच कोषों से, पाँच शरीरों से, पाँच मोर्चों पर लड़ेंगे। हीरक जयंती वसंत पंचमी से शुरू हुआ है और अगले वर्ष तक यह मनाया जाएगा। हमारे पास ढेरों पत्र आए हैं कि गुरुजी हम आपका जुलूस, निकालेंगे प्रदर्शनी लगाएँगे। इसी तरह न जाने क्या-क्या पत्र आए हैं। हमने विचार किया कि हमें इस जयंती वर्ष में क्या करना चाहिए? हम यानी हमारे मिशन का विस्तार कैसे हो? जन-चेतना को कैसे जगाया जाए?

हमने जुलूस आदि के लिए लोगों को मना कर दिया। इस धूमधड़ाका से कोई लाभ नहीं होगा। हमने एक सौ आठ व एक हजार आठ कुंडीय तक यज्ञ किए, जो शानदार थे, लेकिन देखा कि उसके दो साल बाद लोग उसे भूल गए। इस तरह इस धूमधड़ाके से कोई लाभ नहीं होता है। अब इससे मेरा मन भर गया है। अभी हम इन्हें नहीं मनाना चाहते। आपको हमारी बात मानना चाहिए। आगे जब जरूरी होगा, हम बता देंगे। अगर आप हमारी इच्छा के

अनुसार मनाना चाहते हैं, तो हमारी एक इच्छा रह गयी है। क्या रह गई है? फूल-माला हमने ढेरों मन पहन लिए हैं। अब हमें जेवर पहनने की इच्छा है। हमारे पास ढेरों आदमी हैं। हमारा मन है कि अब हम कदम से कदम मिलाकर चलने वालों की माला पहनें। हमने गायत्री शक्तिपीठें बनाई थीं। उस काम से भी अब मेरा मन भर गया है। अब केवल मंदिर बनकर रह गए हैं। वहाँ जागृति की-जनजागरण की कोई बात नहीं है। वहाँ एक देवी बैठी है, जिसकी सुबह-शाम आरती हो जाती है। हो सकता है, अगले दिनों रचनात्मक क्रिया-कलाप चलें, उनका भी कायाकल्प हो, पर अभी तो सब देखकर हमें बहुत दुख होता है कि जनता के बहुत सारे पैसों को बर्बाद कर दिया गया व परिणाम स्वल्प ही हाथ आया।

हीरों का हार पहनना है

हमारा मन है कि हमारे पास दस हजार ऐसे व्यक्ति हों, जिनकी हम माला पहनें, जो हमारे साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलें। हमारी व उनकी एक आवाज हो, एक दिशा हो तथा लगातार मिलकर लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें। उन्हें किसी बात का डर या भय न हो। इस वर्ष हमारी इच्छा दस हजार हीरे का हार पहनने की है। अगर कोई व्यक्ति मरता है या फाँसी पर चढ़ाया जाता है, तो उसकी एक इच्छा होती है, जो पूरी की जाती है। जैसे किसी की इच्छा होती है कि हम मिठाई खाएँ तथा सिगरेट पिएँ, तो उसकी इच्छा पूरी कर दी जाती है। हमारा भी मन है कि इस वर्ष हम दस हजार हीरों का हार पहनकर शहर में निकलें। जब हमारा जुलूस निकले, तो जनता यह समझे कि यह बहुत मालदार आदमी है, बहुत शानदार आदमी है, वजनदार आदमी है।

बेटे, आज मैं कबीर की तरह से पहेली कह बैठा। यहाँ दस हजार हीरों से मेरा मतलब है कि दस हजार ऐसे साथी हो जाएँ, जो नियमित रूप से हमारे कार्य अर्थात् मिशन के लिए समयदान दे सकें। पैसे की इच्छा नहीं है। इसका मतलब यह है कि हमारे हाथ-पाँव मजबूत हो जाएँ। हाथ-पाँव से हमारा मतलब आपसे है। आप हमारे चलते-फिरते हाड़-मांस के शक्तिपीठ बन जाएँ। हमने जो उम्मीद शक्तिपीठों से लगाई थी, वह आप स्वयं पूरा करना शुरू कर दें। हमें ज्ञानरथ के लिए नौकर नहीं चाहिए। हमें इसके लिए आपका समयदान चाहिए। विवेकानंद, गाँधी, विनोबा का काम स्वयं उन्होंने किया। इसी तरह यह काम आपको करने होंगे। आपके पास चौबीस घंटे हैं। आठ घंटे काम के लिए,

सात घंटे सोने के लिए, पाँच घंटे नित्य काम के लिए रख लें, तो भी आपके पास चार घंटे बचते हैं। आपको नियमित रूप से चार घंटे नित्य मिशन के लिए, समाज के लिए, भगवान् के लिए देना चाहिए।

हमारे हाथ पैर बनें, समय दान दें

समयदान आज की अनिवार्य आवश्यकता है। इसके लिए आपको समय निकालना ही चाहिए। मान लीजिए अगर आप बीमार हो जाएँ, तो आपका समय बचेगा कि नहीं? आप यह समझें कि आप चार घंटे नित्य बीमार हो जाते हैं। आप कहेंगे कि गुरुजी हम किस काम के लिए समय दें, जैसा कि मैंने कहा है कि जनजाग्रति के लिए और किसके लिए-गुरुजी को पंखा झलने के लिए, पैर दबाने के लिए नहीं। बेटे हमें तो जनजागृति के लिए समय चाहिए। आप समय की माँग को पूरा कीजिए। इस माँग से हमारा कान फटा जा रहा है, दिमाग पर बोझ-सा धरा है। यह कार्य अकेले से पूरा नहीं हो सकता है। इस कार्य हेतु आपसे समयदान चाहता हूँ। आप हमारे हाथ-पैर बनें, सहायक बनें। हमारा साहित्य घर-घर पहुँचाकर क्रांति कर दें। आपके चार घंटे से हमारा काम बन जाएगा। दो घंटे से कम में तो बन ही नहीं सकता। अगर इतना न बने, तो फिर आप वही हल्ला-गुल्ला करने वाले, जुलूस निकालने वाले बने रहें।

आपकी यही है गुरु दक्षिणा

हरिश्चंद्र ने विश्वामित्र से, एकलव्य ने द्रोणाचार्य से, शिवाजी ने समर्थ गुरु रामदास से, विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा ली थी तथा गुरुदक्षिणा चुकायी थी। आपको भी गुरु-दक्षिणा के रूप में समय देना चाहिए। जनजागृति के लिए आपका समयदान हीरे-मोतियों से, जवाहरात से भी बढ़कर है। इससे कम में युगपरिवर्तन का लक्ष्य पूरा नहीं होगा। आप हमारे बेटे हैं, साथी-सहयोगी हैं। आपसे यही अपेक्षा है, आशा है।

ॐ शान्ति

कालनेमि की माया से बचें

(गुरुपूर्णिमा २३-७-८६)

परिजनों के नाम वीडियो संदेश

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ, **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।**

एक गुंथी हुई माला है-गायत्री परिवार

देवियो, भाइयो! आज से लगभग पचास वर्ष पहले हमने गायत्री परिवार की स्थापना की थी और अखण्ड ज्योति पत्रिका निकालना शुरू किया था। बहुत लंबा समय हो गया। इस पचास साल में हमने क्या किया? जिस तरीके से समुद्र में डुबकी लगाने वाले मोती ढूँढ़-ढूँढकर लाते हैं, हमने भी उसी तरीके से संसार भर में डुबकी लगाई और यह देखा कि कौन से आदमी प्राणवान हैं, कौन जीवंत हैं? कौन ऐसे हैं जो आने वाले समय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने में समर्थ होंगे। यह हमने बहुत गंभीरता से तलाश किया। हिन्दुस्तान में हमको काफी लोग मिले, क्योंकि यह ऋषियों की भूमि है, देवताओं की भूमि है। यहाँ हमारे चौबीस लाख के करीब गायत्री परिवार के मेंबर हैं। फिर हमने देखा कि केवल हिंदुस्तान तक ही हमें सीमित नहीं रहना चाहिए, वरन् सारे संसार में निगाह डालनी चाहिए, सारे संसार में खोजबीन करनी चाहिए।

मित्रो! सारे संसार की खोज-बीन की तो सबसे पहले प्रवासी भारतीयों को देखा, क्योंकि वे ऋषि-भूमि की संतान हैं। उनको देखना, उनको समझना सुगम था। इसके अलावा वे लोग भी हैं, जो हिंदुस्तान के निवासी नहीं हैं, लेकिन संसार के निवासी तो हैं। उन सभी को देखा और देखकर सभी को हमने अपने कुटुंब में-अपने परिवार में एक माला के तरीके से गूँथ लिया। ये गुँथी हुई माला है। गायत्री परिवार क्या है? एक गुँथी हुई माला है। इसमें कौन-कौन हैं? इसमें मोती हैं, हीरे हैं, पन्ना हैं, जवाहरात हैं। इन सबको—एक-से-एक बढ़िया आदमी को जोड़ करके हमने रखा है। जिसमें से आप लोग हैं।

जन्म जन्मान्तरों के संबंध

आपसे हमारा सम्पर्क कब से है ? आपसे हमारा बहुत पुराने संपर्क हैं, जन्म-जन्मांतरों के भी संपर्क हैं। क्योंकि जब हमने तलाश किया, तो अपनी आध्यात्मिक शक्ति से तलाश किया कि कौन आदमी हमारे हैं। कौन हमसे संबंधित हैं। कौन हमारे साथ जुड़े हुए हैं ? हमने जब यह पता लगा लिया और अखण्ड ज्योति पत्रिका भेजी, चिट्ठियाँ भेजीं, तो मालूम पड़ा कि आप लोग गायत्री परिवार में शामिल हो गए हैं। कब हुए थे ? आज से पचास साल पहले। पचास वर्ष के बाद में पीढ़ियाँ बदलती चली गयीं। कुछ पुराने आदमियों का स्वर्गवास हो गया, कुछ नए बच्चे पैदा हो गए। कुछ पुराने आदमी चले गये। इस तरह से परंपरा ज्यों-की-त्यों बनी रही। हार ज्यों-का-त्यों रहा। यह मिशन ज्यों-का-त्यों रहा। उसमें कोई कमी नहीं आने पाई। आप लोग वही हैं जो बड़ा काम करने के लिए, जिस तरह के आदमियों की जरूरत पड़ती है, ठीक उसी तरह से हैं।

साथियो! हिंदुस्तान में भगवान् बुद्ध हुए थे, सरदार पटेलन हुए थे, जवाहरलाल नेहरू हुए थे, सुभाषचंद्र बोस हुए थे और बहुत से आदमी हुए थे। इसी तरह से प्रभावशाली व्यक्तियों में से हिंदुस्तान से बाहर भी हमने देखा कि इस तरह के कौन से आदमी हैं, जो अपना मुल्क-अपना देश सँभाल सकें, वहाँ जाग्रति पैदा कर सकें और लोगों को ऊँचा उठा सकें, आगे बढ़ा सकें। यही सब बातें हमने देखीं और सबको एक सूत्र में बाँधकर रखा है। आप उसी शृंखला में बँधे हुए हैं।

भगवान् का संकल्प

भगवान् राम जब लंका-विजय के लिए और राम-राज्य की स्थापना के लिए गये थे, तो उनके साथ चलने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ। क्योंकि रावण से लड़ाई करने के लिए कौन तैयार हो ? कुंभकरण से लड़ने के लिए कौन तैयार हो ? कोई तैयार नहीं हुआ। रामचंद्र जी के भाई भी आये थे, सेना को लेकर जनक जी भी आये थे, जिनकी बेटी सीता को रावण हरण करके ले गया था, परंतु कोई भी साथ नहीं आया। कोई राजा-महाराजा, कोई सैनिक-सिपाही भी नहीं आया। मनुष्यों मे से कोई तैयार नहीं हुआ। लेकिन

रीछ-बंदर आगे आए। ये रीछ-बंदर कौन थे? वे देवता थे। इन देवताओं ने कहा? कि भगवान्! हम आपके साथ चलेंगे। उन्होंने अपना देवता का स्वरूप छोड़कर रीछ-बंदर का रूप बना लिया। देवताओं के रूप में आते, तो उनको वाहन लाने पड़ते, अपने हथियार लाने पड़ते, फिर रामचंद्र जी की सेना में भर्ती कैसे होते, यदि देवता बने रहते तो? अतः देवता नहीं, रीछ-बंदर बन गए। रीछ-बंदर बनकर उन्होंने वह काम किया, जो भगवान् का संकल्प था।

भगवान् के दो संकल्प थे- एक तो यह कि जो दैत्य-राक्षस हैं और विध्वंश कर रहे हैं, उनको समाप्त करें। दूसरा संकल्प यह था कि राम-राज्य की स्थापना करें, जिससे धरती पर सुख आए, शान्ति आए, चैन आए, उन्नति हो। ये उनके दो संकल्प थे। ये दोनों संकल्प जब तक पूरे नहीं हुए, जब तक वे देवता जो रीछ-बंदरों का रूप लेकर आये थे, उनके साथ-साथ बने रहे। उन्होंने राम का साथ कभी नहीं छोड़ा। रामचंद्र जी भी समझते रहे कि ये देवता हैं, जो रीछ-बंदर की शक्ल बनाकर आ गये हैं। पेंट पहनते हैं, तो क्या हुआ? हैं तो मानव की शक्ल में देवता ही। जिस तरीके से राम ने रीछ-बानरों को देवता माना और अपनी छाती से लगाकर रखा, ठीक यही बात हमारे सामने भी है। आप चाहे हिंदुस्तान में रहते हैं या हिंदुस्तान से बाहर रहते हैं, गायत्री परिवार के जितने भी लोग हैं, उनको हमने अपनी छाती से लगाकर रखा है। आपका काम करने की जिम्मेदारी हमारी है। आप हमारा काम करेंगे और हम आपका काम करेंगे।

हमारा आश्वासन

मित्रो! कोई आदमी किसी के यहाँ नौकरी करता है, खेती-बाड़ी करता है, तो उसके बाल-बच्चों के गुजारा करने का इंतजाम वह आदमी करता है कि नहीं, जिसने उसको नौकर रखा है। आपको नौकर तो हमने बनाकर नहीं रखा है, लेकिन अपना कुटुंबी बनाकर रखा है। तो आपके कुटुंब की-जिसमें छोटे बच्चे भी हैं, घर वाले हैं और दूसरे लोग हैं, उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी हमारी है। आपके शरीर की देखभाल हम करेंगे। आपके पैसे की देखभाल हम करेंगे। आपके मन की देखभाल हम करेंगे और कोई मुसीबत आपके ऊपर आएगी, तो हम आपके सामने खड़े होंगे और यह कहेंगे तथा करेंगे कि ये मुसीबत पहले हमारे ऊपर आए, बाद में इन लोगों के ऊपर आए।

साथियो! इस गुरुपूर्णिमा की पूर्व वेला में हमारा सभी परिजनों के नाम यह संदेश और आश्वासन है, आप इसे याद करके रखिए कि आप देवता थे और अब सामान्य मनुष्य के रूप में हैं। आपका जन्म विशेष काम के लिए हुआ है और वही विशेष काम आपको करना है और बच्चों का गुजारा भी करना है। अगर कोई मुसीबत आएगी, तो आपकी मदद हम करेंगे। हमारी सहायता हमारा गुरु करता है। हमने अपने जीवन में बहुत बड़े-बड़े काम किए हैं और बड़े कामों में हमारे गुरु ने हमारी मदद की है। हमारे भगवान् ने हमारी मदद की है। अगर आपके सामने कोई दिक्कत की बात होगी, कठिनाई की बात होगी, हैरानी की बात होगी, तो हम आपकी मदद करेंगे- सहायता करेंगे। यह हमारा दूसरा आश्वासन याद रखिये।

संगठित रहें

गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर आपको तीसरा संदेश यह है कि आप सब लोग संगठित होकर रहें, मिल-जुलकर रहें। प्रेम से रहें। भाई-चारा निभाएँ और मिशन के काम को आगे बढ़ाएँ। जो भी कार्य आगे बढ़ेगा, मिल-जुलकर ही आगे बढ़ेगा। बुहारी एक जगह पर एक साथ बँधी रहती है, तो झाड़ने में समर्थ होती है और अगर सींके बिखेर दी जाएँ, तो किसी काम की नहीं रहतीं। जिस तरीके से धागों के ताने-बाने मिले हुए होते हैं, तो उससे कपड़ा बन जाता है। अगर धागों को निकालकर अलग-अलग बिखेर दें, तो मुश्किल पड़ेगी। आप लोग सब गायत्री परिवार के सदस्य इस समय इस तरह संगठित होकर रहें, जिससे मिशन का काम ठंडा न होने पावे। कहीं भी हिंदुस्तान में, या जहाँ कहीं भी गायत्री परिवार हो, वहाँ का काम ढीला न पड़ने पाए, शिथिल न होने पाए। बराबर उत्साह बना रहे और आगे-आगे बढ़ते जाने की स्कीमें चालू रखी जाती रहें। यह तीसरा संदेश हो गया।

विघ्न आ सकते हैं

चौथा एक और संदेश है। चौथा संदेश यह है कि जब किसी ने ऐसे ऊँचे काम किए हैं, तो उनके काम में विघ्न डालने वाले भी हुए हैं। आपको मालूम है न! महर्षि विश्वामित्र भगवान् राम की सहायता करने के लिए एक यज्ञ कर रहे थे। तो उनको विध्वंश करने के लिए ताड़का, सुबाहु और मारीचि तीनों

मिलकर आ गए। आपको मालूम है न! पूतना श्रीकृष्ण भगवान् को जहर पिलाने आई थी। आपको यह भी मालूम होगा कि हनुमान् जी जब समुद्र छलाँगने जा रहे थे, तो कौन-कौन विघ्न पैदा करने के लिए आ गए थे। इसी तरह आपके काम में भी सैकड़ों विघ्न आएँगे। सैकड़ों विघ्न आने की संभावना इसलिए भी है, क्योंकि हमने सारे संसार भर को ऊँचा उठाने का काम जो बढ़ा लिया है।

मित्रो! सारे संसार में जो महायुद्ध से लेकर महामारियों तक की जो मुसीबतें आने वाली हैं, उन सबसे हम लड़ाई लड़ेंगे, मोर्चा लेंगे। हमारे ऊपर हमले होंगे कि नहीं होंगे? हमारे ऊपर भी हमले होंगे। हमारे काम का मतलब है-हमारा मिशन, गायत्री परिवार मिशन, इस पर भी हमले होंगे। कैसे होंगे? पुराने जमाने में तो आमने-सामने की लड़ाई होती थी। खरदूषण और रावण जो था, उसकी लड़ाई होती थी कि वह जिसको देख लेता था, तलवार से मार डालता था। यह आमने-सामने की लड़ाई थी।

कालनेमि की माया

लेकिन रावण, कुंभकरण के साथ-साथ एक और भी था, जो सीधे तो नहीं मारता था, पर रुला-रुलाकर मारता था। उसका नाम था-कालनेमि। वह ऐसा करता था कि लोगों की बुद्धि भ्रष्ट कर देता था। किसी को भी उल्लू बना देना उसके बायें हाथ का काम था। उसने मंथरा का दिमाग खराब कर दिया और मंथरा ने कैकेयी का। उसने मंथरा को समझाया कि मैं तेरा भरत से ब्याह करा दूँगा और कैकेयी को समझाया कि तेरे भरत को राजगद्दी दिलाऊँगा। यह बात कैकेयी की समझ में आ गयी और मंथरा की भी समझ में आ गयी और उन दोनों ने ऐसा ही किया। इसी तरह कालनेमि ने सूर्पणखा को भी ऐसे ही बहका दिया। उससे यह कहा कि यहाँ के राक्षस काले हैं। उनके साथ में यदि तेरा ब्याह होगा तो काली संतान उत्पन्न होगी। दो गोरे लड़के आए हुए हैं, बड़े सुंदर राजकुमार हैं। चल तू हमारे साथ और उनसे कहना कि वे तेरे साथ ब्याह कर लें। रामचंद्रजी खट से तुझसे ब्याह कर लेंगे। अरे उनके पिता जी के भी तो तीन ब्याह हुए थे। उनकी सीताजी भी बनी रहेंगी और तू भी बनी रहेगी।

बस, वह बेचारी कालनेमि के बहकावे में आ गयी। उसकी कैसी मिट्टी पलीद हुई? मंथरा की कैसी मिट्टी पलीद हुई? आपने पढ़ा होगा। इसी तरह तपस्वी कुंभकरण ब्रह्माजी से यह वरदान माँगने को था कि मैं साल भर में एक दिन सोऊँ और छह महीने जागूँ। लेकिन कालनेमि ने उसको इस तरह से पट्टी पढ़ा दी, जिससे वह यह वरदान माँग बैठा कि वह छह महीने सोया करे और एक दिन जागा करे। वह रावण का विरोधी था। कालनेमि किसी को भी चैन से नहीं रहने देना चाहता था। उसका मन था कि कोई भी चैन से न रहने पाये। मारीचि वरदान माँगता था कि मैं स्वर्ग जाऊँ। तप करने के बाद उसने स्वर्ग मांगा था। कालनेमि ने उसे भी पट्टी पढ़ाई कि तू यह माँग कि जब मैं चाहूँ, तब मेरा शरीर सोने का हो जाए। सीता हरण के समय उसका शरीर सोने का हो गया। सोने का नहीं होता, असली मृग होता तो क्यों मारा जाता? लेकिन वह मारा गया।

आज भी सक्रिय है वह

मित्रो! यह कालनेमि इसी तरीके से किया करता है। बच्चों को चुरा ले जाने वाला कालनेमि अभी भी इस युग में सक्रिय है। मथुरा में संत-बाबाजी के रूप में ठग लोग आते हैं और बच्चों को चुरा ले जाते हैं। बच्चों को जहर की मिठाई खिला देते हैं। इसी महीने ४०-५० लोग मारे गए। संत-बाबा जी का कपड़ा पहनकर कुछ लोगों ने व्यक्तियों को लड्डू खिलाकर बेहोश कर दिया और उनका माल लेकर भाग गए। आजकल कालनेमि की माया इसी तरीके से भी चल रही है। शायद आपके यहाँ भी कोई कालनेमि जा पहुँचे, तो आप सावधान रहना। कहीं ऐसा मत करना कि अपनी मेहनत, अपना श्रम और अपना पैसा किसी ऐसे काम में लगा दें, जो किसी खास व्यक्ति के काम आए। वह न समाज के काम आए, न संस्था के काम आए, न मिशन के काम आए, न जनता के काम आए, किसी काम नहीं आए, वरन् व्यक्ति के काम आए।

विश्वास मत करना इन पर

आपके यहाँ ऐसी कितनी ही घटनाएँ हैं कि जो आदमी कल तक दो कौड़ी के थे, आज देखो उनके यहाँ क्या हाल हो रहे हैं? कैसे-कैसे बँगले बने हुए हैं? कैसी-कैसी मोटरें आ रही हैं। करोड़ों रुपया कहाँ से इकट्ठा हो रहा है?

आप अपने यहाँ देख लीजिए न? निगाहें फेंकिए, आपको मालूम पड़ जाएगा कि पहले ये क्या थे और साल-दो-साल के भीतर क्या हो गए। इतने पर भी इनको संतोष नहीं होता, तो मिशन को ही बदनाम करने पर तुल गए। अभी जो दो महीने पहले गुरुजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पी.एच.डी. करते थे, वो ही हैं, जो दो महीने बाद गालियाँ सुनाते हैं, चोर और बेईमान कहते हैं। नहीं बेटे, ये कभी भी विश्वास मत करना। अगर हम चोर और बेईमान होते, तो जो हमारी पिताजी की दी हुई संपत्ति थी, वह सारी-की-सारी संपत्ति हम अपने गाँव का हाईस्कूल बनवाने के लिए क्यों दे जाते? इसके अलावा जो कुछ भी रह गया, वह सारा-का-सारा हमने गायत्री तपोभूमि बनाने में दान कर दिया। पैसा हमारे पास इतना था कि अगर हमने उसको सँभालकर रखा होता, तो सात पीढ़ी तक काम आता। जितनी किताबें हमने लिखी हैं, उन सबका कापीराइट हमारे पास होता, तो लाखों रुपये महीने की आमदनी होती। लेकिन हम तो वही रोटी खाते हैं, जो माताजी के चौके में सबके लिए बनती है। इस संस्था के कपड़े पहनते हैं। इसके अलावा कानी कौड़ी भी हमारे पास नहीं है।

मायाजाल ज्यादा दिन नहीं चलता

बच्चो! आपको यही कहना है कि इस तरह की बातों से आप बहकना मत। हाथी अपनी राह सड़क पर चला जाता है और कुत्ते भौंकते रहते हैं। भौकने के बाद में जब ये थक जाते हैं, तो बैठ जाते हैं। हाथी पर कोई असर नहीं पड़ता। उसको जैसा चलना चाहिए, जिस दिशा में चलना चाहिए, उसी गंभीरता से, उसी तरीके से चलता रहता है। कुत्तों के ऊपर कोई ध्यान नहीं देता। सूरज के ऊपर कोई धूल फेंकता है, तो वह धूल उसी के ऊपर गिरेगी। इससे क्या सूरज गंदा हो जाएगा? सूरज मैला हो जाएगा? सूरज बदनाम हो जाएगा? नहीं, सूरज बदनाम नहीं हो सकता। सूरज बदनाम होगा तो अपने कामों से बदनाम होगा, किसी के करने से बदनाम नहीं हो सकता। अगर हम कभी बदनाम होंगे, तो अपने कृत्यों से बदनाम होंगे और कोई दूसरा हमें बदनाम नहीं कर सकता। अगर कोई हमको बदनाम कर रहा हो, तो आपको उसकी ओर जरा भी निगाह उठाने की जरूरत नहीं है। उससे क्या हम लड़ाई-झगड़ा करें? नहीं, उससे लड़ाई-झगड़ा क्या करना है? झूठ के पाँव कहाँ होते हैं? झूठ जिंदा रहता है क्या? झूठ जिंदा नहीं रहता। झूठ अगर जिंदा रहता, तो चोर और उचक्के और

उठाईगीर अब तक करोड़पति हो गए होते। लेकिन वे ऐसा थोड़े दिन ही कर पाते हैं, ज्यादा दिन तक इनका मायाजाल नहीं चल पाता।

खुली किताब है हमारा जीवन

आप सबसे हमारा निवेदन यही है कि मिशन को मजबूत बनाने के लिए, मिशन को सही रखने के लिए सही आदमियों को अपने आप में इकट्ठा रखिए और उनका मनोबल बढ़ाते रहिए, हिम्मत बढ़ाते रहिए। किसी आदमी के विरोध करने से, उलटा-सीधा बकने से आप कभी भी उसके चक्कर में मत आइए। आपको कोई बात तलाश करनी हो, तो आप यहाँ आ सकते हैं। यहाँ के रजिस्टर खुले पड़े हैं। हम खुले पड़े हैं। हमारी जिंदगी खुली हुई है। हमारी जिंदगी खुली किताब के तरीके से है। इसमें कोई पन्ना ऐसा नहीं है, जिसको कोई आदमी यह अँगुली उठा सके कि इसमें काला धब्बा लगा हुआ है। न हमारी जिंदगी में काला धब्बा लगा हुआ है और न हमारे विचारों पर काला धब्बा लगा है। हर किसी को-सबको हम चैलेंज करते हैं कि कोई भी आदमी यहाँ आए और देखे कि यहाँ कोई दाग-धब्बे की बात तो नहीं है। यहाँ दाग-धब्बे की बात आपको कभी नहीं मिलेगी। हमारा इतना ७६ वर्ष का जीवन हो गया है। इसे हमने कबीर की तरीके से रखा है-

"दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों-की-त्यों धरि दीनी चदरिया।"

मित्रो! हमारा जीवन, हमारा मिशन, हमारा क्रिया-कृत्य ऐसा है जिसमें हमको भी घमंड है और आपको भी गर्व होना चाहिए, आप को भी संतोष होना चाहिए। संतोष और प्रसन्नता के साथ-साथ में आपको इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि आप किसी के भी बहकावे में न आवें। बल्कि पूरी हिम्मत के साथ में, अपना पूरा जोश कायम रखते हुए अपने संगठन को कायम रखें। इस मिशन की गतिविधियों में ढील न आने दें, वरन् और भी अच्छे तरीके से करें।

बेहूदी बातों पर ध्यान न दें

साथियो! अभी मैंने अपनी बात समाप्त कर दी थी, लेकिन कुछ बातें एकाएक याद आ गयीं। वह यह कि किसी ने यह अफवाह फैला दी थी कि

गुरुजी मर गए। किसी-किसी ने तो मुंडन भी करा लिया था। अभी हम मरे हैं क्या? नहीं बेटे, हम बिल्कुल जिंदा हैं और अभी बहुत दिनों तक जिंदा रहेंगे। अगर हम मरें भी, तो पाँच गुने होकर काम करेंगे। अभी तो हमारा मरने का कोई सवाल ही नहीं। जिस किसी ने यह अफवाह फैलाई हो और जिस किसी ने मुंडन कराया हो, यह आप उसी से पूछना और उससे कहना कि गुरुजी को तो हम अपनी आँखों से देखकर आए हैं और उनका टेप सुनकर आये हैं। माता जी भी जिंदा हैं, हम भी जिंदा हैं, हमारा क्रिया-कलाप भी जिंदा है और भी सब जिंदा है। किसी-किसी ने यह अफवाह फैलाई है कि गुरुजी ने शांतिकुंज अपने जमाई को दे दिया है। गायत्री परिवार अपने साढ़ू को दे दिया है। इन बेहूदी बातों के बारे में आप कभी विचार मत करना।

टीम है हमारी उत्तराधिकारी

मित्रो! यह सार्वजनिक संस्था है। इसका एक ट्रस्ट बना हुआ है। सात आदमी इसके ट्रस्टी हैं। जब कभी एक आदमी नहीं रहेगा, तो उसके स्थान पर दूसरा आदमी नियुक्त हो जाएगा। किसी के बिना काम रुकेगा नहीं। यह कोई राजकुमार नहीं है, जो गद्दी पर लाकर के बैठाया जाए। यह कोई जमींदारी नहीं, दुकान नहीं, जिस पर लाकर किसी को बैठा दिया जाए। यह सार्वजनिक-पारमार्थिक संस्था है। चार्टर्ड एकाउंटेंट इसका हिसाब-किताब चैक करते हैं। अगर हमारा उत्तराधिकारी कोई होगा, तो वह समर्पित कार्यकर्त्ताओं की टीम ही होगी, व्यक्ति नहीं। गायत्री तपोभूमि की भी कोई होगी तो टीम होगी। वहाँ युग निर्माण योजना ट्रस्ट है। इसका भी कोई उत्तराधिकारी हुआ तो टीम होगी। कोई व्यक्ति विशेष नहीं हो सकता। व्यक्ति विशेष के मरने पर इस संस्था पर कोई असर नहीं पड़ता। व्यक्ति विशेष के चले जाने या न रहने से भी कोई फर्क नहीं पड़ता, कोई बात नहीं बिगड़ती, क्योंकि इसको चलाने वाला भगवान् है। इसको चलाने वाले हमारे गुरु हैं। अब तक जितना काम बढ़ा है, इसे आपने देखा है कि वह सौ गुना, हजार गुना हो चुका है। आगे भी हमारे रहते हुए भी और न रहते हुए भी यह काम हजार गुना होगा और सौ गुना होगा-निरंतर बढ़ेगा, सारे विश्व में बढ़ेगा। यह विश्वास दिलाना रह गया था सो दुबारा टेप करा दिया ।

गुरुपूर्णिमा का संदेश आपके लिए यही है आप सब लोग अच्छे रहें, सुखी रहें। आपके बच्चे सुखी रहें, आप फलें-फूलें, आपकी उन्नति हो।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

इन शब्दों के साथ हम अपनी बात समाप्त करते हैं।

॥ ॐ शान्ति॥

गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) 249411

Ph.No.Off.- 01334-260602, 260403, 261328 Fax-260866

Email:shantikunj@awgp.org www.awgp.org